अणपड़ो

अनुवादक
नेमिचन्द जैन



अग्नपर्णी

ताराशंकर वन्द्योपाध्याय

प्रियवर श्री विमलचन्द्रसिंह को सप्रेम

एक

छ. फुट लम्बा व्यक्ति; शायद इंच-दो इंच अधिक ही होगा। दीर्घता के अनुपात में कुछ कृश है, पर दुर्बल या जीर्णदेह नहीं। काला रंग—बंगाल का काला रंग, चमकीला काला। बड़ी-बड़ी दो विषण्ण-दृष्टि आँखें। विषण्णता के अतिरिक्त भी कुछ और है, जिसे देखकर लगता है, इस व्यक्ति का मन बाहर होने पर बहुत दूर है, भीतर होने पर गम्भीर अन्तराल में डूबा हुआ है।

पगला पादरी। इस नाम से ही यह व्यक्ति इस इलाके में परिचित है। इसमें यहाँ के लोगों का दोष नहीं, इससे बेहतर उसके व्यक्तित्व को शायद प्रकट नहीं किया जा सकता। पादरी की पोशाक पहनते हैं, पर वह गेरुए रंग में रँगी है। इस इलाके के किसी गिरजाघर के साथ भी उनका कोई सम्बन्ध नहीं। किसी धर्म का भी प्रचार नहीं करते। बस रोगियों का इलाज करते फिरते हैं। पगले पादरी बड़े अच्छे डॉक्टर हैं और साइकिल पर आस-पास के गाँवों के चक्कर लगाते रहते हैं। सड़क के दोनों ओर लोगों से पूछते हैं, "क्यों, कैसे हो सब लोग? अच्छे तो हो?" साथ-साथ मीठी हँसी सारे मुख में भर पड़ती है।

"हाँ बाबा, ठीक हैं।"

"अच्छा, अच्छा, बहुत अच्छा। ठीक से रहो!"

किसी के घर में कोई बीमारी होते ही वह पगले पादरी की प्रतीक्षा में खड़ा हो जाता है। कुछ ही देर में साइकिल की घण्टी सुनायी पड़ेगी,

और साइकिल के ऊपर गेरुए वस्त्र पहने पादरी दीख पड़ेंगे। देखते ही वह हाथ उठाकर पहले से ही कह उठता है—"बाबा साहब !"

छः फुट लम्बे पादरी साहब साइकिल से धरती पर पैर रख देते हैं, उतरना नहीं पड़ता। "क्या हाल-चाल है ? क्यों, क्या हुआ ?"

"बुखार।"

"किसे ?"

"मेरे बेटे को।"

"चलो, देखूं !"

जाकर देखते हैं, देखकर साइकिल के पीछे बंधे हुए दवाइयों के बक्स में से दवा देते हैं। जरूरत होने पर कहते हैं, "मेरे घर आकर दवा ले जाना।" कागज पर लिख देते हैं। बाँकुड़ा जिले के बीचोबीच से जो सडक—यह पुरी की सड़क के नाम से प्रसिद्ध है—विष्णुपुर को छूती हुई मेदिनीपुर होकर समुद्र के किनारे तक चली गयी है, जिसमें इधर-उधर से कई-एक और सड़क भी आ मिली हैं, उसके किनारे ही उनका मिशन अथवा आश्रम है।

यह शाल के जंगलों और गेरुआ मिट्टी का प्रदेश है। बीच-बीच में पहाड़ी नदियां—वीरावती-शिलावती-दारुकेश्वर, बीराई शिलाई-दारका। बीच-बीच में लाल पत्थर, कँकरीला बंजर प्रदेश। इसी तरह की ऊँची-नीची धरती एक विशेष पठार के ढंग से टेढ़ी-मेढ़ी चली गयी है। पर इसी के दोनों तरफ फिर बंगाल की नरम धरती का प्रसार है। वहां खुशहाल भरे-पूरे गांव हैं, अनाज के खेत हैं।

उत्तर और मध्य भारत के पहाड़ों और जंगलों की यह पंक्ति उड़ीसा और बिहार के पास से अजीब ढंग से टेढ़ी-मेढ़ी फली की भांति इधर-उधर फैलकर धीरे-धीरे समाप्त हुई है। मेदिनीपुर से लगाकर बाँकुड़ा जिले के जंगली क्षेत्र इतिहास-प्रसिद्ध हैं। इन पथरीले-कँकरीले, टेढ़े-मेढ़े शाल के जंगलों से घिरे हुए प्रदेशों में जो गांव हैं, उनमें आदिवासियों के वंशधर रहते हैं—बाउड़ी, बागदी, मेटे, माल, खैरा, संथाल। सामन्त-युग में इनके बीच उत्तर भारत के क्षत्रिय—सिंह, राय इत्यादि—मुखिया बन बैठे थे। ऐसे ही एक-एक परिवार ने आज थोड़ी-थोड़ी दूर पर एक-एक जाति का

रूप ले लिया है। उनकी जिन्दगी में मामला-मुकदमा, दीवानी-फौजदारी लगी ही रहती है। परन्तु काले रंग के पीली आँखोंवाले गरीबी से जर्जर अधनंगे मूक इन्सानों के बीच गोरे रंग के दीर्घ आकृति और उग्र प्रकृति के मनुष्य विचित्र रूप में मिल गये हैं। एक-एक क्षत्रिय के घर का नाम राजमहल है। इन राजमहलों में टूटी हुई दीवारें हैं, मिट्टी के कच्चे आँगन और पुराने फूस के छप्पर हैं; उनमें मैली पुरानी धोती पहने, नंगे बदन राजा बैठे-बैठे बीड़ी पीते हैं अथवा हुक्का गुड़गुड़ाते हैं और एक-दूसरे के साथ कर्कश कण्ठ से ग्राम्य भाषा में झगड़ा करते हैं। रानियाँ और राजकुमारियाँ अपने ही हाथों से चूल्हा-चौका करती हैं, कन्धों पर रखकर पानी ले आती हैं, धान भी कूट लेती हैं। आँगन बुहारना, बरतन मलना आदि काम अभी भी उन्हीं काले रंग के लोगों के घरों की स्त्रियाँ करती हैं। पुरुष जमीन जोतते हैं, पशु चराते हैं, जंगल से लकड़ी काटते हैं। कहीं-कहीं एक-आध घर दलपत या नायक-बागदी का भी अभी तक मिल जाता है। दलपति नायक इनकी उपाधि है। ये लोग शायद किसी जमाने में क्षत्रिय सामन्तों के अधीन योद्धा सरदार थे। ये लोग जंगली इलाकों में वनों से घिरे सामन्तों के दिये हुए गाँवों के बीच अपनी जाति और परिवार एवं नौकर-चाकरों को लेकर मद्य-मांस और मोटे लाल चावल का भात खाकर, दुर्दान्त साहस के साथ शिकार में और सन्ध्या को मादल के साथ नाच-गाने में जीवन बिताते थे। पठान-मुगल-युद्ध के जमाने में इनकी कहानी जनश्रुति नहीं, इतिहास हो गयी है। मुगल-साम्राज्य के अन्तिम दिनों में मराठा-युद्ध के समय इन्होंने बाकायदा लड़ाई की है। जंगलों में छिपकर, पेड़ों के ऊपर छिपकर तीर चलाये हैं; रात के अँधेरे में पीछे से आकर छापे मारे हैं; खदेड़े जाने पर घर-बार छोड़कर घने जंगलों में जा छिपे हैं। ईस्ट इंडिया कम्पनी के काल में कम्पनी की फौज के साथ भी इनकी लड़ाई हुई है। सामन्त राजाओं द्वारा अधीनता स्वीकार कर लेने पर भी ये लोग, ये सरदार, युद्ध करते रहे थे।

बागदी सरदार गोवर्धन दलपति की लड़ाइयों का हाल तो कम्पनी के कागज-पत्रों में लिखा हुआ है। गोवर्धन दलपति अपने इलाके की सीमा बचाकर ही सन्तुष्ट नहीं था, उसने कम्पनी की सीमा में से भी कुछ इलाके

दखल कर लिये थे; दिन-दिहाड़े एक के बाद एक गाँव लूटकर, जलाकर, गाँव की सड़कों पर आदमियों के सिर काटकर लटका जाया करता था।

इन्हीं का एक-आध घर आज भी दिखायी दे जाता है।

मैदानी इलाकों में ब्राह्मण, कायस्थ, वैद्य, नवशाक आदि जातियों के गाँव इनसे कुछ दूर हैं। उन सब गाँवों में बागदी, मेटे, माल आदि जातियों के लोग हैं, पर उनका रूप इनसे कुछ अलग है। खून की गरमी और गाढ़ेपन में शायद कुछ अन्तर आ गया है।

शाल-वनों में फूल खिलने के साथ-साथ अरण्य इन लोगों को आज भी हाथ के इशारे से बुलाने लगता है। शाल के साथ-साथ ही है पलाश और महुआ। पलाश के फूल के रंग से आज भी ये लोग अपने कपड़े रँगते हैं; महुए की शराब बनाते हैं। बीच-बीच में आबकारी विभाग की पुलिस छापा मारती है, पर ज्यादातर पकड़ नहीं पाती। दूर-दूर फैले हुए शाल के जंगलों के बीच इनका अड्डा कहाँ है, यह ढूँढ निकालना प्रायः असम्भव है। कभी-कभी पकड़े भी जाते हैं, और फिर जेल भी काटनी पड़ती है, पर वह इन लोगों के लिए बड़ी बात नहीं। बीच-बीच में शिकार के लिए निकलते हैं। इस मामले में संथाल इनसे आगे हैं, पर ये भी कभी-कभी निकल पड़ते हैं। मोर, जंगली मुर्गा, तीतर, खरगोश, हिरन, सुअर, भालू आदि को मारकर बहुत उत्साहित होते हैं। खास तौर पर सुअर-भालू का उत्पात होने पर तो ये लोग बेचैन हो उठते हैं। कभी-कभी शेर भी आ जाता है। उसके साथ लड़ने-योग्य दुर्दान्त साहस आज शायद नहीं रहा, पर शेर आने पर स्थानीय बन्दूकवाले शिकारी बाबुओं को खबर देते हैं; थाने की मारफत विष्णुपुर शहर के अधिकारियों के पास भी खबर भिजवाते हैं। लगभग दो सौ वर्ष की लगातार गुलामी और चतुरतापूर्ण शोषण के कारण इनकी जिन्दगी से सब तरह का अभिमान लगभग चला गया है, किन्तु साहस और उल्लास बहुत अधिक नहीं मिटा है। बस आज शेर अपने पर भाला, बल्लम, धनुष लेकर उन्मत्त आनन्द के साथ उससे लड़ने के लिए निकल पड़ना अब नहीं चाहते। जीवन का मूल्य जब बड़ा नहीं है तब इतने भय में क्या सन्देह है!

इन्हीं सब लोगों के बीच रहते हैं ये पगले पादरी।

शाल-वन के किनारे लाल मिट्टी पर एक छोटा-सा गाँव है। पास से ही चली गयी है पुरी की पक्की सड़क। उत्तर-पश्चिम की ओर मोरार गाँव में वैप्टिस्ट चर्च का दो-मंजिला भवन है। एकदम छोटा नगण्य-सा गाँव है। शाल-वन यहाँ आकर कुछ विरल और हल्का-सा हो गया है। गाँव के भी बाहर, जहाँ से शाल-वन घना होने लगता है, वहीं छोटा-सा एक बँगलेनुमा मकान है, जिसमें तीन-एक कमरे हैं। यही है पगले पादरी का बसेरा। संगी-साथियों में एक पक्षी, दो गाय और एक दम्पति हैं—जोसेफ और सिन्धु। जोसेफ का परिवार कई पीढ़ियों से ईसाई है। जोसेफ लाल सिंह। सिन्धु माझियों की बेटी है। वह ईसाई नहीं। ब्याह भी इन लोगों का नहीं हुआ। दोनों एक-दूसरे के प्रेम में पड़कर घर-बार, नाते-रिश्तेदार, समाज सबको छोड़कर चले आये हैं। आकर पगले पादरी के पास आश्रय लिया। जोसेफ थोड़ी-सी अंग्रेजी जानता है। पगले पादरी ने उसे कुछ कम्पाउण्डरी भी सिखा दी है। वह कम्पाउण्डरी करता है और लड़कों की पाठशाला में पण्डिताई भी। सिन्धु पशियों की देख-भाल करती है। इस बँगले की गृहिणी भी वही है; गृहस्थी रसोई सब उसी के हाथ में है। और एक संथाल लड़की भी यहाँ रहती है। नाम है झुमकी। २५-२६ वर्ष की अपूर्व स्वस्थ लड़की है। ऐसे डील-डौलवाली सरल लड़की हमेशा नजर नहीं आती।

पगले पादरी ने उसे बड़ी मुश्किल से मौत के मुँह से बचाया है। झुमकी का तीन बार ब्याह हुआ है, पर तीनों ही स्वामी थोड़े-थोड़े दिन बाद मर गये। उससे सबको सन्देह होने लगा कि झुमकी डाइन है। संथाल-समाज के मुखियों ने इसे मृत्यु-दण्ड दिया। पगले पादरी को पता चलते ही वह साइकिल पर चढ़कर तूफान की तेजी से वहाँ पहुँचे और बड़ी मुश्किल से उसे छुड़ाकर ले आये। इस गाँव के संथाल मुखिया को उन्होंने इलाज करके बचाया था। वह और भी दर्जनों का इलाज कर चुके हैं। पगले पादरी को वे लोग ठुकरा नहीं सकते। पगले पादरी ने उन्हें यह वचन दिया कि अब झुमकी कभी किसी समय गाँव में नहीं जायेगी, वह उन्हीं के मकान में रहेगी, गायों की सेवा करेगी और फूल-पौधे लगायेगी।

"उसे क्रिस्तान तो नहीं कहेंगे, बाबा साहब ?"

"नहीं।" उसके बाद हँसकर कहा था, "मैं क्या क्रिस्तान हूँ माँझी ?"

बूढ़े संथाल सरदार ने कहा था, "कौन जाने ! लोग कहते हैं तुम जरूर क्रिस्तान हो; पर क्रिस्तान कहते हैं नहीं हो। तुम्हारी कोई जात नहीं। तुम्हीं जानो कि तुम क्या हो!"

पगले पादरी जोरों से हँस पड़े थे। फिर बोले थे, "लोग कहते हैं, माँझी, मेरी कोई जात नहीं। पर इन्सान तो हूँ। तुम भी इन्सान हो, मैं भी इन्सान; और वह लड़की भी इन्सान।"

"तुम इन्सान जरूर हो, वह नहीं। वह जरूर डाइन है।"

"मैंने तो इलाज करके तुम्हारा इतना बड़ा भूत का रोग ठीक कर दिया—तुम्हीं बताओ ! मैं उसका भी डाइन रोग ठीक कर दूंगा।"

"कर दोगे। कहते हो इसे ले जाओगे, तो ले जाओ !"

तभी से झुमकी भी यहीं रहती है, गायों की सेवा करती है, बँगले में फूल-पौधे लगाती है। कभी-कभी बँगले की सीमा के बाहर सड़क पर भी निकल आती है, पर किसी संथाल स्त्री-पुरुष को देखते ही डरकर छिप जाती है, चाहे जहाँ हो। कहीं वे लोग फिर कहने लगें कि वह उन्हें खा गयी !

वह कभी-कभी पगले पादरी के कमरे में भी घुस आती है। पगले पादरी शायद आँखें बन्द किये कपड़े की आराम-कुरसी पर बैठे हैं। किसी के जल्दी-जल्दी आने की आहट सुनते ही पूछते हैं, "कौन ?"

फुसफुसाकर भयभीत मुद्रा में वह किसी अँधेरे कोने अथवा अलमारी के पास से उत्तर देती है, "मैं बाबा साहब, झुमकी !"

बाबा साहब मुख उठाकर उसकी ओर ताकते हैं। श्रीकृष्ण अरण्य-बाला की सफ़ेद चमकती हुई आँखों की ओर देखते ही, स्वच्छ जल की सतह पर काँपती हुई जल-घास की भाँति उस दृष्टि में उसका भयप्रकम्पित अन्तर दीख जाता है, पूछते हैं, "डर गयी ! बाहर कोई माँझी आ गया है शायद ?"

वह अपने बड़े सबल हाथों को एक अन्य दिशा में बढ़ाकर दिखाती हुई कहती है, "अँ-हं, आन-परम।" अर्थात् नहीं-नहीं, उस तरफ, उस तरफ।

बाहर नहीं आये हैं, उस तरफ जा रहे हैं।

बाबा साहब उसे अभय देकर बाहर आते हैं। जानेवालों को बुलाकर उनकी ही भाषा में बातचीत करने लगते हैं; बेधड़क बोलते चले जाते है।

साधारणतः वह इस जिले में चालू बँगला भाषा में ही बातचीत करते हैं। कोई समझ नहीं सकता कि ये यहाँ के आदमी नहीं। उनमें से कोई-कोई पूछता है, "हाँ बाबा साहब, हम लोगों की बोली इस तरह कैसे सीख ली आपने ?"

साहब प्रसन्न होकर उन्मुक्त हँसी में ऐसे हिलने लगते हैं जैसे तेज हवा में शाल के वृक्ष। कहते हैं, "तुम लोगों से मुहब्बत है इसलिए! उसी मन्तर में सीख ली! हूँ!"

उसके बाद फिर कहते हैं, "तुम्हीं कहो, जिससे तुम्हें मुहब्बत हो, उसका मुँह देखकर तुम उसके जी का सुख-दुख नहीं समझ लेते ? समझ लेते हो न ? जो की बात मुँह देखकर समझी जा सकती है, तो मुँह की बात कान से सुनकर सीख ली तो इसमें ऐसी कौन-सी बड़ी बात हुई! ऐं ?"

स्वर-उच्चारण सब मानो एकदम एक तार में बँधा हो।

प्रश्न करनेवाले के मन में रत्ती-भर भी सन्देह नहीं रहता। उसका सारा हृदय उपलब्धि से आप्लावित हो जाता है, अपने-आप ही वह गरदन हिलाकर हामी भरता है—ठीक बात है, ठीक बात है!

पर उनकी अंग्रेजी सुनकर सभ्य समाज के बहुत लोग शक करते हैं, आदमी मद्रासी या दक्खिन भारत का ही होगा।

नाम भी है—रेवरेण्ड कृष्णस्वामी।

मुख पर भी खोजने से चिह्न मिल जाते हैं। छ फुट लम्बा, मोटे हाड़वाला, चरबी-रहित व्यक्ति, चमकता हुआ काला रंग, घने काले मोटे-से बाल; दक्खिन के लोगों-जैसी ही बड़ी-बड़ी आँखें।

दृष्टि अवश्य ही कुछ विचित्र है। वह शायद व्यक्तिगत है। विपन्न होकर भी प्रसन्न। वर्षा के बाद हल्के-हल्के बादलों से ढँके हुए शान्त स्निग्ध आकाश की भाँति बादलों के झीने आवरण को भेद— — —

वाली नीलाभा की भांति ही विषण्ण दृष्टि में प्रसन्नता का आभास खिल उठता है। सबसे अच्छा लगता है इस आदमी का हँसना। फ्रेंचकट दाढ़ी और मूंछों के बीच से जब सुन्दर दांतों की पंक्ति प्रसन्न हँसी से चमक उठती है, तब आस-पास के लोगों के मन के भीतर भी मानो उसी प्रसन्नता की छटा बिखर जाती है।

दो

उन्नीस सौ बयालिस का साल।

महायुद्ध की विभीषिका एक अंधड़ की भांति सारे देश के ऊपर से चली जा रही है। देश, समाज, घर-गृहस्थी सब टूट-फूटकर ढहे जा रहे हैं। अकाल और महामारी में लोग ऐसे मरे हैं जैसे तूफान के आघात से पशु-पक्षी। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है। देश-व्यापी स्वतन्त्रता-आन्दोलन कुछ समय के लिए क्षीण हो उठा है। अंग्रेजों और अमरीकियों की फौजी तैयारियों का जाल बंगाल के एक सिरे से लगाकर दूसरे सिरे तक छा गया है। चटगांव, फेनी, गौहाटी, डिगबाई, दीमापुर, कोहिमा से लगाकर उखरा, पानागढ़, प्यारडोबा, वासुदेवपुर, खड़गपुर, मेदिनीपुर तक फौजी अड्डों की एक विचित्र-सी शृंखला बन गयी है। एक के साथ दूसरे का पक्की सड़कों द्वारा सम्बन्ध एक विस्तीर्ण विराट् पृथ्वी-व्यापी मकड़ी के जाले जैसा लगता है।

हर गांव में अनाज की कमी से हाहाकार मचा है; हर शहर में भूख से दुखी हड्डियों के ढांचे-जैसे भिखारियों की करुण कातर प्रार्थना सुनायी पड़ती है: "थोड़ा मांड़! मुट्ठी-भर जूठन! मां जी! मां जी!"

दुकान पर चावल के बदले चूरा मिलता है, और उसमें मिली हुई बालू, धूल, कंकड़।

इन्हीं सबके बीच चलते हैं फौजी काफिले। जीप, ट्रक, वेपन-कैरियर—और भी तरह-तरह की अजब-अजब शक्लों की मोटर-गाड़ियां।

सिर के ऊपर मँडराते हैं अंग्रेज और अमरीकियों के लड़ाकू हवाई जहाज। गाड़ियों में चलती हैं अंग्रेजी और अमरीकी पलटनें। उन्हीं के साथ-साथ नीग्रो अफ्रीकी। चलते-चलते रास्ते में खेतों के बीच इस देश के अकाल-पीड़ित भूखे लोगों के ऊपर आकर गिरते हैं नारंगी के छिलके, चबाये हुए कौवे। चीखकर पुकारते भी जाते हैं, एऽ—। हाथ के इशारे से भी बुलाते हैं।

ही-ही करके हँसते हैं।

कोई-कोई रुपया-धेली भी फेंकते हैं। लोगों की भीड़ उसके ऊपर टूट पड़ती है। सूखी मिट्टी की धूल उड़ने लगती है और उनके सारे शरीर पर छा जाती है। विदेशी सैनिकों के कैमरे क्लिक-क्लिक शब्द से मुखर हो उठते हैं।

बीच-बीच में अमरीकी सिपाहियों के दल जीपगाड़ियों में चढ़े चले जाते दिखायी पड़ते हैं। कोई एक स्वर से गा रहा है, अथवा नशे में चूर शोर-गुल कर रहा है। ठीक बीचोबीच शहर से जुटाई हुई एक-दो निम्न-कोटि की वारांगनाएँ होती हैं—विलायती शराब के नशे में विमर्दित हुए वस्त्र लड़खड़ाती हुई देह। वे भी प्रमत्त उल्लास से सैनिकों के अट्टहास के साथ हँसकर स्वर मिलाने की चेष्टा करती हैं। राह-बाट में युवती स्त्रियों को देखते ही सैनिक चिल्लाते हैं—हलो हनी! माई हनी!

प्याराडोबा में एक हवाई अड्डा बना है। कुछेक मील दूर वासुदेवपुर में भी एक छोटा-सा अड्डा है। मोरार में वेसलियन चर्च के बँगले के सामने पुरी की सड़क और एक स्थानीय सड़क के चौराहे के पास, शाल-वन में लगे हुए स्थान में खोदकर पेट्रोल की बड़ी-बड़ी टंकियाँ लगायी गयी हैं। यहाँ से पाइप-लाइन चली गयी है वासुदेवपुर और प्याराडोबा तक। बुल-डोज़रों के द्वारा मिट्टी खोदकर पेड़ काटकर जंगल के बीच कुछ ही दिनों के भीतर एक विचित्र फौजी अड्डा बन उठा है, मय-दानव के हाथों की माया-पुरी की भाँति। प्याराडोबा स्टेशन से रेल-लाइन आयी है। यहाँ बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ आकर ठहरती हैं। गाड़ियों से उतरते हैं मदहोश विदेशी सैनिकों के दल। अमरीकी सिपाहियों की जेबों में नोटों की गड्डियाँ होती हैं। साथ में बहुत-सा डिब्बों में बन्द खाने का सामान, बिस्कुट, रोटी।

रेल-लाइन के पास साईडिंग में दो-चार नहीं, अनगिनत डिब्बों का ढेर लग गया है।

भूखे अकाल-पीड़ित अधनंगे इन्सान डिब्बे उठा ले जाते हैं, चाट-चाट-कर खाते हैं। दिन-रात आसमान को गुंजाते हुए बममार और लड़ाकू हवाई जहाज सिर के ऊपर चक्कर काटते रहते हैं। कोई उतरता है, कोई ऊपर उड़ता है।

सन्ध्या होते ही बिजली की बत्तियाँ जल उठती हैं। खोल से ढँकी हुई हैं, फिर भी उनकी रोशनी इधर-उधर फैल जाती है। सैनिक नाच-घर से बाजे बजते हैं, नाच होता है। अट्टहास गूँजता रहता है। झींगुर की झंकार से मुखरित शाल-वन के बीच निविड़ अन्धकार जैसे चौंक उठता है। शायद कोई दो सौ वर्ष पहले सामन्त राजाओं के राज में पाइकों की मशालों की रोशनी, मादल की आवाज, तथा हा-रा-रा ध्वनि-ताण्डव के बाद इस वनभूमि का अन्धकार इस प्रकार कभी नहीं चौंका होगा। मराठों के राज के बाद से इधर के जंगली गाँव भय से रोशनी बुझाकर अँधेरे के परदे में छिपकर इस प्रकार कभी नहीं सोये। ये सब गाँव पक्की सड़क से दूर-दूर हैं, जंगल के भीतर की तरफ। वहाँ के लोग अँधेरे में सुनते रहते हैं—पक्की सड़क पर घर-घर करती हुई मोटरें चल ही रही हैं, चल ही रही हैं।

पगले पादरी ने कुछ हटकर अपना बसेरा बना लिया है—पक्की सड़क से और भी दूर जंगल के बीच। वह जहाँ थे उस गाँव को ही फौजी अधिकारियों के हुक्म से हटा दिया गया है।

रेवरेण्ड कृष्णस्वामी जंगल के भीतर पगडण्डियों पर होकर साइकिल से पक्के रास्ते पर आ जाते हैं। बुधवार और शनिवार को वह मोरार के मोड़ से बहुत दूर, विष्णुपुर की ओर बढ़कर ओन्दा चले जाते हैं; वहाँ लेपर असाइलम में कुष्ठ रोगियों का इलाज करते हैं। पुरी से लगा-कर इस इलाके में कुष्ठ रोग का बहुत जोर है। कुष्ठजन्य अन्धापन इस क्षेत्र में अभिशाप की भाँति है। सप्ताह में दो दिन कृष्णस्वामी बहुत

सवेरे ही उठकर चले जाते हैं और शाम को लौटते हैं।

असाढ़ का आरम्भ था। कृष्णस्वामी शाम को लौट रहे थे। उनकी विचित्र पोशाक के साथ सिर पर एक देसी ताल की पत्तियों का टोप है, आँखों पर धूप का चश्मा। अभी वर्षा शुरू नहीं हुई है। असाढ़ के लम्बे दिन में पृथ्वी के अधिक-से-अधिक समीप सूर्य की गरमी में धरती मानो झुलसी जा रही है। जुते हुए खेतों के ऊपर गरम हवा में धूल उड़ रही है। बाबा साहब अपनी अभ्यस्त गति से साइकिल चलाये जा रहे हैं। पक्की सड़क छोड़कर किनारे-किनारे ही चल रहे हैं। फौजी मोटरें भयंकर गति से आती हैं, पल-भर की अन्यमनस्कता अथवा हिसाब में भूल होते ही सड़क के किनारे ठूँठों में जोर से टकरा जाती हैं। टूटकर गाड़ी उलट जाती है, चलानेवालों और दूसरी सवारियों का आर्तनाद सुनायी देता है। कभी-कभी रास्ता छोड़कर खेतों में जा गिरती हैं। दो-चार उलट भी जाती हैं और सवारियाँ छिटककर गिर पड़ती हैं। चोट हल्की होने पर उठकर धूल झाड़ते हैं और हा-हा करके हँसते हैं। दो-चार चलानेवाले आश्चर्यजनक दृढ़ता के साथ स्टीयरिंग को पकड़े जुते हुए खेतों में कुछ दूर चलाकर धीरे-धीरे चाल कम करके ब्रेक लगा लेते हैं। फिर गाड़ी से उतरकर अपनी भाषा में अश्लील गालियाँ बकने लगते हैं, अकारण ही। आश्चर्य की बात है, भगवान् का नाम नहीं लेते।

रेवरेण्ड कृष्णस्वामी सोचते-सोचते चले जा रहे थे। मराठों के आतंक के समय, छिहत्तर के अकाल में, सामन्त राजाओं के साथ युद्ध के जमाने में, पाइक-विद्रोह के दिनों में भी क्या देश की ऐसी ही हालत हुई थी? इन्सान क्या ऐसा ही खोखला हो गया था? उसके अन्तर का संचय क्या इतना ही क्षीण और क्षणजीवी है?

हाय युद्ध! हाय क्राइस्ट! हाय ईश्वर के पुत्र!

फिर भी इस देश के इन अकाल-पीड़ित सर्वस्वहीन शिक्षा-वंचित निवासियों का कोई सहारा तो है। भावी युग-मनुष्य के सामने कुछ बचाव अवश्य है। पर ये विदेशी सैनिक, ये तो उनसे भी अधिक अभागे हैं—मौत के डर से अधीर, असहाय! तीव्र आतंक इन्हें दिन-रात खदेड़े फिरता है। ये लोग गले तक शराब पिये साँस रोककर जान हथेली पर

रहे दौड़े चले जाते हैं और पेड़ से टक्कर खाकर मरते हैं। गाड़ी उलटने से नीचे दबकर कुचल जाते हैं। दौड़ते-दौड़ते रास्ते में जो कुछ भी भोग के लिए मिलता है उसे ही भोग करते जाते हैं। कहाँ है शिक्षा, कहाँ है सभ्यता, कहाँ है जीवन का गौरव ?

हाय क्राइस्ट !

सूली पर विद्ध होकर तुम्हारी मृत्यु ही सत्य है, पुनर्जीवन केवल कल्पना है। मनुष्य का रचा झूठा आश्वासन !

हाय बुद्ध ! हाय चैतन्य !

चैतन्यदेव इसी पथ द्वारा पुरी से गया गये थे। खोल-करताल के साथ इन सब प्रदेशों में धरती-आसमान हरि नाम से मुखरित हो उठे थे।

विष्णुपुर के वैष्णव देवता भी झूठे हैं। वे भी तो मनुष्यों की रक्षा न कर सके। राजा गोपाल देव की पुकार भी झूठी है, उनके हरि-कीर्तन का भी कोई फल नहीं हुआ। अपनी रक्षा की शक्ति न सही, उनकी ही भाँति प्रचण्ड बर्बर शक्ति को रोकने की क्षमता मनुष्य की न सही, अपनी आत्मा की रक्षा करने की शक्ति भी उन्हें न मिल सकी। सुमिरिनी की झोली एकदम फटे चिथड़े की झोली है।

सामने ही रेल का फाटक है। कृष्णस्वामी ने साइकिल से अपने दोनों पैर धरती पर टिका दिये। छः फुट लम्बे आदमी के लिए इतना ही काफी था। फाटक के पास ही चौकीदार का घर है।

कृष्णस्वामी की विचार-शृंखला टूट गयी। वह यथार्थ की दुनिया में लौट आये। यही जीवन है। यह जीवन जब तक है, तब तक अपना काम करते रहना होगा।

"वंशी ! वंशी हे !"

चौकीदार के घर का दरवाजा खुल गया। चौकीदार रामचरन बाहर निकल आया। "बाबा साहब !"

"हूँ ! वंशी कहाँ है ?"

वंशी रामचरन का लड़का है। उसे कोढ़ है—पहली ही अवस्था में। कृष्णस्वामी ने ही इधर से आते-जाते एक दिन रास्ते में बालक के चेहरे को देखकर पहचाना था। बहुत समझा-बुझाकर इलाज के लिए राजी

लिया था। इस गैस के इंजेक्शन में बड़ा दर्द होता है। बंशी ज्यादातर भाग निकलता है। कृष्णस्वामी बंशी को बहलाने के लिए कुछ-न-कुछ लेकर ही आते हैं। किसी दिन कोई गुड़िया, किसी दिन कोई तस्वीर, किसी दिन कोई खाने की चीज, किसी दिन और कुछ। आज भी बंशी भाग गया है। रामचरन ने चारों ओर देखा, पर बेटे का कहीं पता नहीं। वह ऊँचे स्वर से पुकारने लगा—"बं—श—ी—हो ऽऽ। बन—शी—होऽऽ!"

कृष्णस्वामी साइकिल चौकीदार के घर की दीवाल से टिकाकर चबूतरे पर आकर खड़े हो गये। रामचरन की स्त्री ने कमरे से निकलकर एक मूढ़ा बिछा दिया। कृष्णस्वामी ने मूढ़े के ऊपर बैठकर अपने चोगे की जेब से एक बाँसुरी निकाली। बोले, "इसे बजाकर बुलाओ! हूँ! बाँसुरी की आवाज सुनते ही पास कहीं होने पर अभी आ जायगा।"

परन्तु उससे पहले ही सामने सड़क के किनारे एक आम के पेड़ के ऊपर से बंशी धम्म से कूद पड़ा। "आ रही है! आ रही है! यही है बाबा, एकदम यही है!"

कौतूहल की तीव्रता से उसका थोड़ा-सा सूजा हुआ मुख मानो तमतमा उठा है। दोनों आँखें जल-सी रही हैं।

"कौन? कौन आ रही है जी बंशीवदन?" हँसकर कृष्णस्वामी ने पूछा। "मैं तुम्हारे लिए कैसी बाँसुरी लाया हूँ देखो तो! बंशीवदन के लिए बंशी!"

पर बंशी का मन बाँसुरी से नहीं आकर्षित हुआ। उसकी स्थिर जलती हुई दृष्टि सामने सड़क की ओर ही लगी हुई थी—दूर पर सड़क जो मोड़ लेती थी, उसी के सिरे पर। उसने शायद पिता से ही कहा, "वही लड़की! वही जिसने सिर पर चमकदार रंगीन फेंटा बाँध रखा था। पेड़ के ऊपर से मैंने देखा है। गाड़ी आँधी की तरह आ रही है, और रंगीन फेंटा बाँधे वह उसमें बैठी है। धूप के मारे फकफक-फकफक कर रही है। हूँ। वोह—वोह—वोह!"

दूर मोड़ के सिरे पर जीप की गरज अब सुनायी देने लगी थी। सचमुच कोई जीप आ रही है। सचमुच पीछे से पड़ती धूप से किसी के

सिर पर गहरी लाल टोपी साफ दिखायी देती है।

रामचरन बोला, "बहुत देखा बाबा साहब ! पर ऐसी औरत हमने बाप-दादा के जमाने में भी नहीं देखी थी। एकदम मेम साहब है !"

कृष्णस्वामी हँसने लगे। धोती, चादर और चट्टी के देश में केवल धोती पर जीनेवाले गरीब रामचरन और इस बालक वंशीवदन का मन किसी विचित्र वेशवाली विदेशिनी को देखकर विस्मय से अभिभूत हो गया है। जीप सचमुच ही तूफान की तेजी से आ रही है। औरत—हाँ, इन लोगों ने कहा है कि औरत है—लाल टोपी पहने हुए वह स्त्री जैसे कांप रही है, गिरी पड़ रही है, इधर से उधर। जीप में सामने चालक के पास ही बैठी लड़खड़ा रही है। लगता है श्वेतांगिनी है। पास बैठा हुआ चालक बलिष्ठ देह का एक गोरा है। बदन पर सिर्फ बनियाइन है, सिर पर टोपी है, अफ़सर की टोपी। चाल धीमी करके मोड़ लेकर गाड़ी फाटक पार कर गयी। पर कुछ ही दूर जाकर ब्रेक लगने से खड़ी हो गयी। धक्के से स्त्री बाहर गिरते-गिरते बची; सामने डैश-बोर्ड पर गिरते ही किसी तरह एक छड़ को जोर से पकड़ लिया। गाड़ी फिर पीछे हटने लगी। आकर रामचरन ने घर के सामने खड़ी हो गयी। गोरा सैनिक उतरा।

उसकी पतलून के कपड़े का चिकनापन देखते ही कृष्णस्वामी समझ गये कि अमरीकी अफ़सर है।

"हे—मैन ! वाटर ! वाटर ! पानी !"

रुँधे हुए कण्ठ से आदेश के स्वर में स्त्री बोली, "पानी लाओ ! यू—यू, सुनता नहीं !"

कृष्णस्वामी उठकर खड़े हो गये। आँखों से धूप का चश्मा उतार चबूतरे से उतरकर जीप के पास आ खड़े हुए। स्थिर दृष्टि से युवती की ओर ताकते रहे। सचमुच उसका वेश विचित्र था। पश्चिम के आधुनिकतम फैशन का लाल रंग का लम्बा पतलून अथवा स्लैक्स, आधी बाँहों का टेनिस-कालरवाला रेशमी ब्लाउज, सिर पर रंगीन चमकदार रेशमी कपड़े के लम्बे टुकड़े का शिरोभूषण। आश्चर्य रूप से लालसा जाग्रत करनेवाला मोहक वेश। और वैसा ही निर्लज्ज !

अमरीकी अफसर ने उनके सामने आकर पतलून की जेब से एक नोट निकालकर सामने रखते हुए कहा, "डोण्ट यू अण्डरस्टैण्ड, मैन ? वाटर, पानी—पानी—"

युवती भी करीब-करीब साथ-ही-साथ कह उठी, "यू स्वाइन !"

अमरीकी अफसर ने इस बार डाँटते हुए कहा, "यू बिच, स्टाप, माई से यू स्टाप !"

कृष्णस्वामी ने हँसकर शुद्ध अंग्रेजी में कहा, "प्लीज ! प्लीज डोण्ट एब्यूज हर लाइक दैट, शी इज इल।"

"नथिंग। यू डोण्ट नो मैन ! एक बोतल वह कुतिया गट-गट निगल गयी है। नशे में है। पानी दो ! सोच रहा था, रास्ते में कोई तालाब मिलने पर उसे गोता देकर सब नशा छुड़ा दूँगा। तुम लोगों का घर देखकर यहीं रुक गया। लगता था बेहोश हो जायेगी। नशा, सिर्फ नशा।"

कृष्णस्वामी ने कहा, "मैं डाक्टर हूँ। मुझे साफ दीख रहा है कि यह बीमार है। मेरी बात सुनो, तुम उसे उतार लो ! उसे फौरन देख-भाल की जरूरत है। मेरे इस बैग में दवाइयाँ हैं। एक खुराक दवा दूँगा। मेरा विश्वास करो, मैं मेडिकल कालेज का पासशुदा डाक्टर हूँ।"

इसी बीच युवती गद्दी के ऊपर लुढ़क गयी।

कृष्णस्वामी ने अपनी दोनों लम्बी बाँहें फैलाकर उसे उठा लिया। बोले, "रामचरन, अपनी खटिया बिछा दो।" कुछ पल स्थिर दृष्टि से मुख की ओर देखते रहे। फिर दृष्टि हटाये बिना ही बोले, "आफिसर, प्लीज उसके सिर से वह कपड़े का टुकड़ा खोल दो।"

अफसर ने हाथ बढ़ाया और थोड़ा-सा झटका देकर सिर का कपड़ा खींचकर खोल दिया। आश्चर्यजनक घने काले केश बिखर गये।

कृष्णस्वामी ने बड़े यत्न से उसे खाट पर सुला दिया। बहुत शुश्रूषा के बाद युवती को होश आया। एक खुराक दवा भी उसे कृष्णस्वामी ने पिलायी थी। होश आने के पहले उसने भडभडाकर बहुत-सा वमन किया, जिससे उसके शरीर का वस्त्र सन गया। थोड़ा-सा कृष्णस्वामी के हाथ और कपड़ों में भी लगा। दुर्गन्ध से उस जगह की हवा मानो दूषित हो

उठी। कृष्णस्वामी ने यत्नपूर्वक सब-कुछ धोकर फेंक दिया। अफ़सर निर्लिप्त भाव से बैठा-बैठा देखता रहा और लगातार सिगरेट पीता रहा। बीच-बीच में दो-चार बातें भी कही थीं। सभी प्रश्न-सूचक थीं। मानो रह-रहकर कुछात् मन में उठ रही हों—असम्बद्ध। एक बात का दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध नहीं।

बेहोश युवती अचेत-सी पड़ी थी। उसके मुख की ओर ताककर अमरीकी अफ़सर ने कहा, "इजण्ट शी ब्यूटिफ़ुल ? फ़ाइन आइज़ एण्ड आइलिड्स—इजण्ट इट ? हे, व्हट डू यू से !"

कृष्णस्वामी ने देख-भाल करते-करते ही कहा, "यस, शी हैज गाट ए स्वीट फ़ेस।"

सचमुच युवती रूपवती है, और रूप में आश्चर्यजनक मोहिनी है। खासकर सिर के घने काले केश, अपूर्व सुन्दर आँखें और पलकें। पलकों के रोएँ लम्बे हैं जो सुन्दर आकृति की आँखों को और भी सुन्दर बना देते हैं।

थोड़ी देर बाद अफ़सर ने फिर पूछा, "इज इट एनीथिंग वेरी सीरियस ?"

कृष्णस्वामी ने कहा, "हो सकता था। नशे के ऊपर इस गरमी में हीट स्ट्रोक हो सकता था। अभी भी डर है!"

फिर कुछ-एक मिनट बाद सवाल हुआ, "तुमने कहा था कि तुम डॉक्टर हो! क्वालिफ़ाइड मेडिकल मैन। लगता भी यही है। पर ऐसी पोशाक क्यों है तुम्हारी ?"

"मैं एक संन्यासी हूँ। भारतवर्ष के संन्यासियों की तरह-तरह की पोशाकें होती हैं। पर यह रंग सबका है।"

"कैन यू टैल फ़ॉरच्यून ?"

"नो।"

"सिर्फ़ डॉक्टर हो ?"

"हाँ, और संन्यासी।"

फिर कुछ देर बाद अफ़सर बोला, "बता सकते हो, इस तरह की स्त्रियाँ तुम्हारे देश में कितनी होंगी ? स्ट्रेंज गर्ल!" फिर जैसे अपने-

आप ही कहने लगा, "उससे मेरी भेंट पुरी में हुई थी। आन दि बी बीच। स्ट्रेंज गर्ल! घण्टे-भर में ही हम लोग घनिष्ठ हो गये। अद्भुत, वन्य है! कितना हँस सकती है! कैसा प्रचण्ड शोख है! क्या शराब पीती है!" सिगरेट का एक कश खींचकर धुआँ छोड़ते हुए वह फिर बोला, "तभी से मेरे साथ भटक रही है।" फिर बोला, "शी इज ए स्पोर्ट—पर बहुत ही वाइल्ड है।"

कृष्णस्वामी ने कहा, "होश में आ रही है। तुम्हारे पास और थोड़ी-सी शराब है। शी नीड्स—"

युवती शराब पीने के बाद मुख थोड़ा विकृत करके बोली, "वाटर-प्लीज! वाटर—ठण्डा पानी।"

कृष्णस्वामी ने मुँह में पानी डाला। युवती ने फिर मुँह खोला। कृष्णस्वामी ने फिर पानी दिया। उसके बाद आँखों के नीचे उँगली रखकर हँसते हुए बोले, "लैट मी लुक ऐट योर आइज। लुक ऐट माई फ्रैंस।"

युवती की भौंहें चढ़ गयीं, दृष्टि तीक्ष्णतर हो गयी।

अमरीकी अफसर ने कहा, "हे—डोण्ट—; वह सब मत करो! डू यू हियर?" उसके बाद कहने लगा, "अचानक ही चीख पड़ती है, मार बैठती है—हिस्टीरिया की तरह।"

किन्तु इसी बीच युवती हड़बड़ाकर उठ बैठी। तीव्र दृष्टि और तीक्ष्ण कण्ठ से चीखकर बोली, "यू ब्लैकी—लीव मी—; छोड़ दो मुझे—काला आदमी कहीं का।"

अफसर चिल्लाकर उठा, "शट अप यू बिच! शट अप आई से।"

कृष्णस्वामी ने हँसकर युवती के माथे पर हाथ फेरते हुए प्रसन्न स्वर में कहा, "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं। मैं डॉक्टर हूँ। तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए। और थोड़ी देर लेटी रहो, ठीक हो जाओगी। तुम्हारे सिर में पीड़ा हो रही है, मैं जानता हूँ। यह लो, गोली खा लो! प्लीज! प्लीज एण्ड बी स्टिल!" बैग खोलते-खोलते कविता-पाठ के स्वर में कहते गये, "पेशेन्स यू यंग रोज-लिप्ड-मेड—पेशेन्स प्लीज—"

अफसर हँस पड़ा, "हे डॉक—यू आर ए पोएट-औ-टेट्स फाइन।"

युवती आँखें बन्द किये लेटी हुई थी। उसके चिकने मस्तक पर बुंदेरा

रेखाएं जाग उठीं।

"लो ! खा लो !"

गोली खाकर युवती उठ बैठी। "ए स्मोक प्लीज़ !" हाथ बढ़ा दिया नेल-पालिश लगी हुई उंगलियों के पोरों पर निकोटीन के दाग थे। अफ़स उत्साहपूर्वक कहने लगा, "नाउ शी इज़ ओ के। यह लो ! गैट अप माइ हनी।"

उसके बाद कृष्णस्वामी की ओर देखकर बोला, "वह ठीक हो गयी है, डॉक, ओके। अब हम लोग चलेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद। यह लो !"

और उसने दो दस-दस रुपये के नोट निकालकर रखे।

कृष्णस्वामी ने कहा, "बहुत धन्यवाद। पर मुझे माफ करो ! यही तो मेरा धर्म है। क्राइस्ट के नाम पर तुमसे अनुरोध करता हूँ।"

तीन

झुमकी ने आकर विस्मय-विस्फारित आँखों से लालसिंह और सिन्धु की ओर देखते हुए फुसफुसाकर कहा, "सिंह, बाबा साहब को क्या हुआ है ?"

लालसिंह आसमान की ओर ताकता हुआ किसी दूर गरजते हवाई जहाज को खोज रहा था। झुमकी की बात पर उसने मुड़कर देखा, "क्या हुआ है ?"

"जाने क्या बड़बड़ा रहे हैं, कोई जन्तर-मन्तर पढ़ रहे हैं, मैंने सुना। डर के मारे भाग आयी। चाय नहीं दे सकी। जाओ, तुम दे आओ ! बाबा रे !"

जन्तर-मन्तर की कोई बात सुनते ही झुमकी भयभीत हो उठती है। लगता है शायद उसे ही डाइन समझकर कोई मन्त्र चला रहा है। दिन ...ने पर वह जंगल में भाग जाती है। चुपचाप झाड़ियों के भीतर बैठी ...ती है, खरगोश की ही भाँति। बहुत-सा समय बीत चुकने पर भय धीरे-...रे कम हो जाता है; तब गुनगुनाकर कुछ गाती है, उसके बाद उठ ...ती है।

चाय का प्याला हाथ में लेकर लालसिंह कृष्णस्वामी के कमरे के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ। वह जानता है कि बीच-बीच में बाबा साहब बाइबिल के सरमन अपने-आप ही पढ़ने लगते हैं। वह अपने माथे और बदन पर कायदे के अनुसार हाथ लगाकर 'आमीन' कहता है।

सचमुच ही बाबा साहब कमरे में इधर-उधर चक्कर काट रहे हैं और बाइबिल पढ़े जा रहे हैं। बाइबिल नहीं, कृष्णस्वामी कविता-पाठ कर रहे थे।

"It is the cause—It is the cause my soul—
Let me not name it to you, you chaste stars—
I'll is the cause.
Yet, I'll not shed her blood
Nor scar that whiter skin of her's than snow.

शेक्सपियर के 'ऑथेलो' में पाठ कर रहे हैं कृष्णस्वामी। आज रामचरन के मकान में ही 'ऑथेलो' याद आ रहा है। उस युवती के साथ बातचीत में 'ऑथेलो' की कितनी पंक्तियों का प्रयोग किया था!

"लेट मी लुक ऐट योर आइज। लुक ऐट माइ फेस। पीस एण्ड बी स्टिल!"

ये सभी 'ऑथेलो' नाटक के संवाद हैं।

"पेशेन्स यू यंग रोज़-लिप्ड मेड—"

इसका भी बहुत-सा हिस्सा वही ले है। ये सब बातें अमरीकी अफसर के समझने की नहीं। भोजन-शराब-नारी-नाचरंग-हथियार-अस्त्र-शस्त्र—इन्हें छोड़ ऐसी बातें समझने से युद्ध नहीं चलता। ठीक है, कुछ-कुछ ऊँचे स्तर के लोग भी हैं। शायद बहुत-से कवि भी कलम छोड़कर कमर में रिवाल्वर लटकाये राइफल कन्धे पर रखे आ गये हैं, पर वैसे कितने हैं? कम-से-कम वे लोग इस प्रकार एक स्त्री को सिर पर उठाये नहीं घूमते। पर रीना ब्राउन भी न पहचान सकी। शब्द कानों में पहुँचे, पर स्मृति का द्वार नहीं खुला। आश्चर्य!

नहीं। आश्चर्य किस बात का? शराब ने उसकी स्मृति को, बुद्धि को, शायद सारे अस्तित्व को, आच्छन्न कर रखा था।

चाय का प्याला रखकर लालसिंह चुपचाप बाहर चला गया। फ़ादर ईश्वर की याद कर रहे हैं।

रीना ब्राउन के लिए एक दिन ईश्वर भी तुच्छ हो गया था। यह ठीक है कि तब कालाचाँद ईश्वर को नहीं मानता था।

कालाचाँद नहीं, कृष्णेन्दु, कृष्ण इन्दु। देहाती लड़का। काला, छरहरा, लम्बा, बड़ी-बड़ी आँखें, माथे तक भरपूर घने बाल, मुख पर आँखों में ग्राम-सुलभ सरलता। देहात की कर्कशता की थोड़ी-सी मलिनता भी है, किन्तु आश्चर्यजनक सप्राणता, और बुद्धि भी वैसी ही तीक्ष्ण। देहात के प्रसिद्ध लुहार की बनायी हुई असली इस्पात की दाय के समान है; तेज धार, अनमनीय दृढ़ता, किन्तु शान-पालिश से घिसी-मँजी हुई नहीं, थोड़ी मैली।

कालाचाँद का जन्म पश्चिमी बंगाल के एक विख्यात वैद्य वंश में हुआ था। पर वह ख्याति उस समय अस्तोन्मुखी हो चुकी थी। प्रपितामह और उनके भी पूर्व-पुरुष प्रसिद्ध भिषगाचार्य थे। आयुर्वेद का प्रचार कम होने के साथ-साथ पिता का उत्साह भी कम हो गया था। वे आयुर्वेद के बजाय खेती-बाड़ी में और धर्म-कर्म में मन लगाते थे। अपने इकलौते बेटे को डॉक्टरी पढ़ाने की उन्हें बड़ी लालसा थी। गाँव के स्कूल में मैट्रिक पास करके कालाचाँद इण्टरमीडियेट साइंस पढ़ने के लिए कलकत्ता के सेण्ट जेवियर्स कालेज में आया, इण्टर पास करके मेडिकल कालेज में प्रवेश करने के लिए। ज़रा-सी बात पर हा-हा करके हँसता है, धम्म-धम्म करके सीढ़ी से उतरता है; लम्बे कालाचाँद का सिर कक्षा के अस्सी फ़ीसदी लड़कों से प्राय: छः इंच ऊपर दीखता रहता है। शुद्ध देहाती उच्चारण में निस्संकोच बात कहे जाता है। कौतूहल की तो कोई सीमा ही नहीं। दिन-रात ही प्रश्न करता है—क्या ? क्या ? क्यों ? क्यों ? उसके साथ देहाती लहजे का लटका। शहरी लड़के हँसते हैं। पर कालाचाँद इस सबकी परवाह नहीं करता। वह भी हँसता है। कभी-कभी गाँव में सीखी पुरानी व्यंग्य-कथाएँ सुनाकर बदला लेने की कोशिश करता है।

कहता है, "तुम लोग मुझे माम कहते हो! तो फिर मामा को क्या कहते हो?"

अचानक कालाचाँद प्रसिद्ध हो गया। उस समय भी सेण्ट जेवियर्स की पुरानी ही इमारत थी। कालेज के दक्खिन की ओर बड़ा भारी खेलने का मैदान था। उस मैदान में टिफिन के समय लड़के फुटबाल खेलते थे। सभी कलकत्ता के स्कूलों के लड़के होते थे। मुफस्सिल के लड़के खड़े देखते रहते थे। कम-से-कम देहात से हाल ही में आये हुए पहले वर्ष के लड़कों को तो उतरने का साहस ही न होता था। खिलाड़ियों की संख्या बाईस तक सीमित न रहती थी, उससे बढ़ ही जाती थी। कुछ दिन देखते रहने के बाद शायद डेढ़ महीने पीछे, अगस्त में, कालाचाँद बरामदे से उतरकर मैदान के पास जाकर खड़ा हो गया—गोल लाइन के पास। बूँदा-बाँदी से मैदान में फिसलन हो गयी थी। खिलाड़ी गेंद में ठोकर मारने के प्रयत्न में फिसलकर कीचड़ की मछलियों की भाँति गिरते चले जाते थे। देखनेवाले लड़के हो-हो करके हँसते थे। एक सिक्सयार्ड शॉट। गोलकीपर गेंद को ठीक जगह रखकर हट गया। फुलबैक गेंद में ठोकर मारने के लिए पैर उठाते ही फिसलकर दूर जा गिरा। पल-भर में कालाचाँद ने जूते उतारे और दौड़कर गेंद में ठोकर लगा दी। पक्के खिलाड़ी का जोरदार शॉट, गेंद ऊँची उठकर सेण्टर लाइन के पार दूसरी तरफ की हाफबैक लाइन के सामने जाकर गिरी।

"कौन है यह लड़का? कौन है जी?" ढूँढ मच गयी। कालेज-टीम का कप्तान तीसरे वर्ष का साधु दास आगे बढ़ आया। "क्या नाम है? कहाँ खेले हो? किस स्थान पर खेलते हो? मैच खेले हो?"

"हाँ, बहुत मैच खेले हैं। 'दसों मारे' मैडल मिल चुके हैं। सिउड़ी, वर्धमान, कांचनतला, शान्तिनिकेतन में मैच खेल चुका हूँ। पाँच बेस्ट प्लेयर्स-मैडल हैं मेरे पास। लेफ्ट आउट खेलता हूँ। कार्नर किक से गेंद गोल में पहुँचा दूँगा। फुलबैक भी खेल सकता हूँ, लेफ्ट बैक, सेण्टर भी खेल चुका हूँ। गोल कर सकता हूँ। दीजिए न एक कार्नर किक, करके दिखा दूँ। देते हैं?"

"लाना तो जी गेंद। लाना जरा!"

कार्नर किक से गेंद सचमुच गोल में चली गयी। विचित्र ढंग से गेंद गोल के सामने छः गज सीमा के भीतर पहुँचकर और फिर टेढ़ी होकर एकदम कोने के पास से गोल में घुस जाती थी। यह कालाचांद का पैर पहचान चुका था।

कालाचांद को लैफ्ट आउट में खेलने को कहा गया। ऊँचा-लम्बा कालाचांद अपने लम्बे-लम्बे पैरों से गेंद लेकर दौड़ा। वह दौड़ता तीर की भांति था। एकदम उस किनारे की लाइन के पास से गेंद मारी। ठीक गोल के सामने जाकर गिरी। अपना पैर फिसलने से गिरे भी कई एक बार। लोग हँस उठे। पर कालाचांद ने वह सुना ही नहीं, देखा तक नहीं। अचानक एक बार नाराज होकर सेण्टर फार्वर्ड से कह उठा, "एक भी गोल में नहीं घुसा सके? मुझे खेलने देंगे सेण्टर में?"

कालाचांद ने सेण्टर फार्वर्ड में आते ही गेंद को पकड़कर थोड़ा ऊपर उठाया और फिर एकदम गोल-कीपर के हाथों में ही फेंका। गोल-कीपर ने गेंद को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, कालाचांद उछलकर गेंद को सिर से मारकर गोल-कीपर के ऊपर गिर पड़ा। गिरे दोनों ही, पर गेंद गोल में चली गयी।

दूसरी बार गोल-कीपर ने उसे मार दिया। नाक से खून गिरने लगा ...र कमीज सन गयी।

कुछेक मिनट वह थोड़ा अचेत-सा रहा। फिर तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ और सिर के बालों को खून तथा कीचड़ से सने हुए हाथों से हटाता हुआ मैदान में भीतर पहुंच गया। पर कप्तान दास ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "नहीं, आप और नहीं। आपस में ही मार-पीट नहीं करते।" कालाचांद अद्भुत लड़का है। वह हँस पड़ा। बोला, "कैसे जाना मैं मार-पीट करूँगा?"

हँसकर कप्तान ने कहा, "हम भी तो खेलते हैं।"

कालाचांद ने कहा, "यह ठीक है।"

कालाचांद उसी दिन कालेज में मशहूर हो गया। पर उसकी प्रसिद्धि का अन्त वहीं तक न था। कुछ दिन, शायद महीने-भर के बाद ही, बँगला भाषा के अध्यापक कक्षा में घुसते-घुसते अचानक चकित होकर

थम गये। बंगाली अध्यापक साहित्य-रसिक, साहित्यिक थे। कक्षा में कोई ऊँचे स्वर में कविता-पाठ कर रहा है। सद्यःख्याति-प्राप्त कालाचांद ने आदृत और दुर्दान्त छात्र की भांति दो कक्षाओं के बीच अध्यापक के तख्त पर चढ़कर कविता-पाठ शुरू कर दिया है। इसके पीछे थोड़ा-सा इतिहास था। कक्षा में पहला स्थान मौलाना के किसी मुसलमान नेता के लड़के हलीम का था। वह कक्षा में बड़ी शैतानी करता था। दो घण्टों के बीच तख्त के ऊपर जाकर खड़ा हो जाता था, अध्यापकों की नकल उतारता, मनमाना बकता, खड़िया लेकर बोर्ड पर कार्टून बनाने की कोशिश करता—एक क्लाउन की भांति। लड़के हँसते। अचानक उस दिन बँगला भाषा की कक्षा में कालाचांद आकर खड़ा हो गया। बँगला की कक्षा में हलीम नहीं है। वह बँगला नहीं पढ़ता। कालाचांद ने बँगला कविता-पाठ शुरू कर दिया :

आज इस प्रभात में, प्रभातविहग, कौन गीत गाया
दूर, बहुत दूर, आसमान से, स्वर जो बह आया।

उसके बाद कहने लगा, "सुनो भाइयो, बॉयेज—बॉयेज—माई फ्रेंड्स—कामरेड्स—!"

कामरेड शब्द तब तक आ चुका था। सन् उन्नीस सौ अड़तीस-उनतालीस की बात है।

"मैं कविता-पाठ कर रहा हूँ, सुनो! रवीन्द्रनाथ की कविता 'निर्झर का स्वप्न-भंग'।"

उसका गला अच्छा नहीं था। उसके ऊपर उम्र का भारीपन गले में हाल ही में पैदा होना शुरू हुआ था। उसकी आवाज उस समय फटी-फटी-सी, कुछ भारी-भारी-सी थी। किन्तु इस सबका उसे कुछ खयाल ही न था, वह इसकी परवाह ही नहीं करता था। हर काम में वह एक विशेष शक्ति द्वारा अपने-आपको उँडेल सकता है—संचित जलराशि के निम्न गतिवेग की भांति, प्रत्येक जल-बिन्दु के शक्ति-प्रयोग की भांति, उसके तन-मन दोनों के ही समस्त अणु-परमाणु, जो काम भी वह करता, उसी में तन्मय हो जाते थे। उसके गले का स्वर थर-थर कांपने लगा, बिजली की शक्ति की भांति सभी श्रोताओं के मन में वह आवेग संचरित हो

"आज इस प्रभात में रवि के ये किरण-कर
कैसे आ छाये हैं प्राणों पर।"

उसके गले का स्वर ऊँचा होने लगा। आवेग मानो पुंजीभूत बादलों की भाँति आवर्तित हो चला। शुरू से आखिर तक सारी कविता का पाठ करके अन्तिम छन्द पर आ पहुँचा :

"जाने क्या हुआ आज जाग उठे प्राण
सुनता हूँ दूर महासागर का गान
और
मेरे चारों ओर
कैसा कारागार घोर—
तोड़-तोड़-तोड़ कारा प्रबल, आघात कर।"

और पंक्तियाँ समाप्त करते ही वह तख्त से नीचे उछलकर कक्षा के बन्द दरवाजे के पास जा पहुँचा और किवाड़ों में धम्म-धम्म मुक्के मारने लगा। लड़कों ने भी अपनी बेंचों को पीटना शुरू कर दिया।

ठीक उसी समय अध्यापक ने कमरे में प्रवेश किया। हँसकर बोले, "दैट्स नॉट दि वे, दैट्स नॉट दि वे, माइ फ्रेण्ड्स। झरने के जल का कारागार को तोड़ने का ढंग और मानव-हृदय का रुद्ध पथ की बाधाओं को तोड़ने का ढंग एक-सा नहीं होता। पर तुम तो अच्छा कविता-पाठ करते कालाचाँद!"

फिर एक बार कालाचाँद की ख्याति चारों ओर फैल गयी। उस बार इण्टर कालेज-कविता--पाठ-प्रतियोगिता में उसे भेजा भी गया। उसने बँगला और संस्कृत-प्रतियोगिता में कविता-पाठ किया। पुरस्कार तो उसे नहीं मिला, पर संस्कृत-कविता-पाठ में प्रशंसा मिली। सबसे बड़ी बाधा हुई थी उसके गले के कारण, नहीं तो शायद पुरस्कार भी पा जाता। उच्चारण के लिए भी उसके अंक कम हो गये थे।

खेल के मैदान से कालेज तक, इधर नामी रेस्टोरेण्ट से लगाकर होस्टल तक कालाचाँद के कण्ठ-स्वर से, उसके गतिवेग से, वातावरण चंचल हो उठा। किन्तु वार्षिक परीक्षा में वह फेल हो गया। कहने लगा, किसी दूसरे कालेज में चला जाऊँगा। कालेज-टीम के कप्तान ने रेक्टर से

बहुकर इसे प्रमोशन दिला दिया। रैक्टर ने उसे बुलाकर कहा, "तुम्हें सावधान होना पड़ेगा कालाचाँद ! तुम तो 'ठल' लड़के नहीं हो।"

उस दिन कालाचाँद को अपने पिता और माँ की याद आयी थी।

उसके पिता अल्पभाषी और गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति थे, पूजा-उपासना में लगे रहते थे। उनके मुख पर, आँखों में, आचार-व्यवहार में ऐसी कुछ बात थी जिससे उनके पास पहुँचते ही मन उदास हो जाता था। शायद एक प्रकार का प्रच्छन्न लज्जा का पश्चात्ताप। वह लम्बी साँसें लेते रहते हैं, मुँह से कुछ कहते नहीं। केवल गृह-देवता के द्वार पर प्रणाम करते समय आस-पास कोई न होने पर कहते हैं, "मेरी अक्षमता के लिए क्षमा करो प्रभु ! तुम्हारे भोग में कमी करनी पड़ती है—यह दुख मैं तुम्हारे सिवाय और किससे कहूँ ?"

उसकी माँ प्रसन्नता की मूर्ति थीं, कल्पवृक्ष थीं। उसने जब भी जो कुछ चाहा है वही उन्होंने उसके लिए जुटा दिया है। जिसकी चाह है वह अवश्य मिलेगा, यह विश्वास उसे माँ ने ही दिया है। उनके आँचल में अनन्त दूध था, हृदय में अनन्त स्नेह था और मन में अनन्त आशा थी। उनका प्रश्रय अथाह और अगाध था।

उसकी माँ ने उसे तैरना सिखाया था। वह स्वयं तैरना जानती थीं। जिस तालाब में वह स्नान करती थीं उसमें कमल खिलते थे। कालाचाँद रोज फूलों के लिए हठ करता, माँ तोड़कर ला देती थीं। कुछ दिन बाद उन्होंने कहा था, "तू ही तैरना सीख, सीखकर तोड़ ला, मुझसे नहीं लाया जाता !" तैरना सीखने के डर से कई दिन तो उसने फिर कमल की बात ही नहीं उठायी थी। कुछ दिन बाद माँ स्वयं ही एक दिन पेट से कमर बाँधकर घड़ा तैराती हुई बोली थीं, "आ, कमल तोड़ेंगे।"

वह माँ के साथ-साथ गया था। आते समय कई बार घड़ा आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा था, "इसे पकड़ !"

उसके बाद रोज वही उनको गृह-देवता की पूजा के लिए कमल ला दिया करता था।

माँ उसके पास लेटकर भविष्य के बारे में बातें किया करती थीं

"बड़ा भारी डॉक्टर बनना, विलायत जाना, जर्मनी जाना। बड़ा भारी मकान बनवाना, गाड़ी खरीदना, नौकर-चाकर रखना!"

वह ऐश्वर्य की ही बातें करती रहती थीं। बहुत ही सरल मन की थीं। उनके लिए दान-ध्यान-दया-स्वार्थ-त्याग आदि सब अपने उपभोग के बाद थे। अपने हाथों कमाकर पहले खूब खायेंगे, उसके बाद दूसरों की सोचेंगे।

वह कहता, "विलायत जाने से जाति नहीं चली जायेगी?"

"आजकल वह जमाना नहीं रहा। और फिर जायगी तो चली जाय। जाति को लेकर क्या अपने पिताजी की भाँति धो-धोकर पियेगा?"

"पिताजी आज्ञा नहीं देंगे।"

"तुम चले जाना! नहीं होगा तो हम अलग रहेंगे, वृन्दावन चले जायेंगे। तू तो बड़ा हो सकेगा!"

परीक्षा में फेल होने के बाद उसे उस दिन उन्हीं लोगों की बात याद आयी।

और इस स्मृति को वह फिर नहीं भूला, कम-से-कम इण्टर की परीक्षा देने तक तो नहीं भूला। उसने पहली श्रेणी में इण्टर परीक्षा पास की।

मेडिकल कालेज में भरती हुआ।

यहाँ वह कालाचाँद गुप्त नहीं, कृष्णेन्दु गुप्त था। इण्टर परीक्षा के पहले ही विश्वविद्यालय में अरज़ी और अदालत में हलफ़नामा देकर उसने अपना नाम बदलवा लिया था।

सेण्ट जेवियर्स के फ़ादर रैक्टर उसकी पढ़ने-लिखने में उन्नति देखकर उससे खुश ही थे।

उन्होंने हँसकर कहा था, "ह्वाट्स इन ए नेम—कालाचाँद?"

कालाचाँद ने हँसकर उत्तर दिया, "कालाचाँद इज़ ब्लैक मून, एण्ड कृष्णेन्दु मीन्स दि नेम—दि ब्लैक मून। आई हैव चेन्ज्ड दि वर्ड ओनली, नॉट दि मीनिंग। आई एम दि सेम ओल्ड ब्लैक मून, फ़ादर!"

पिता को, माँ को भी पत्र में यही लिखा था।

पिताजी ने कोई उत्तर न दिया था, माँ ने लिखा था, "ठीक किया! इसमें हमें कोई एतराज़ नहीं।"

पर तब तक उसका कालाचाँद नाम भी कालेज-कालेज में स्वयं उसकी ही भाँति प्रसिद्ध हो चुका था। उसने इसने हिम्मत न हारी। किसी के कालाचाँद कहकर पुकारते ही वह कहता, 'नॉट कालाचाँद—भाई एम कृष्णेन्दु—कॉल मी कृष्णेन्दु प्लीज !"

रीना ब्राउन के साथ परिचय यहीं हुआ—वह भी उसी कालाचाँद नाम को लेकर। रीना ब्राउन कालेज की चीफ़ नर्स मेट्रन पॉली ब्राउन की सौतेली लड़की थी—पॉली के पति जिमी ब्राउन की पहली पत्नी की लड़की।

कालेज के स्टाफ़-क्वार्टर में मिसेज ब्राउन रहती थी। रीना की उम्र उस समय १५-१६ की होगी। दीर्घांगी लड़की उस समय किशोरी ही थी, पर तभी से अपूर्व मोहिनी। शरीर का रंग गोरा होने पर भी बंगाल की श्यामलिमा का एक हल्का-सा आभास उस पर स्पष्ट था। सबसे अधिक आकर्षक थे लड़की के केश। छोटे-से कपाल को ढंकती हुई ऐसी भरपूर घनी काली केश-राशि कम ही दिखायी देती है। तेलहीन रूखेपन में भी उसकी श्यामल शोभा फीकी न पड़ती थी, धुँधलेपन का आभास नहीं होता था। मानो माथे के ऊपर घने काले केश-सम्भार के साथ इस लाल मिट्टी के प्रदेश के सघन शाल-वनों की शोभा का कोई सम्बन्ध हो। कृष्ण-कुन्तला के बजाय अरण्यकुन्तला ही मानो उसकी अधिक उपयुक्त और शोभन उपमा हो। वैसी ही काली-काली दो भौंहें—माथे के बीच से लगाकर मानो कान तक खिंची हुई, कच्चे बाँस के मोटे धनुष की भाँति उसी के अनुरूप दो सुन्दर आँखें—उसकी पलकों के घने काले रोओं ने उन्हें और भी सुन्दर बना दिया है। फूल की केसर की भाँति दीर्घ। लगता है मानो पलकों में काजल-रेखा और स्वप्निलता लेकर ही लड़की ने जन्म लिया हो। रीना एक निर्दिष्ट समय पर अपने फ्लैट के बरामदे में दिखायी पड़ती है। तभी उस ज़माने के सैनिक मेडिकल विद्यार्थियों में से द्वितीय वर्ष के छात्र कक्षा से निकलते थे—उसके ठीक कुछ ही देर बाद, शायद दस मिनट बाद। सैनिक छात्र प्रायः सभी बाहर चले जाते थे, वह जाता सिर्फ़ जॉन क्लेटन, सैनिक छात्रों का सेण्टर-हाफ़। जॉनी मार-पीट में सिद्धहस्त गुण्डा था।

जॉन क्लेटन युद्ध-विभाग के विख्यात ग्राई० एम० एस० अफसर का बेटा था। वह ज़िद्दी अफ़सर बेढब शराबी, विख्यात शिकारी, नाचने में प्रवीण और मार-पीट में निपुण व्यक्ति था। लोग कहते हैं जहाँ चार्ल्स क्लेटन होता उस छावनी के अफ़सर सन्त्रस्त रहते थे। भयंकर तूफान की भाँति दूसरों की घर-गृहस्थी उजाड़ने में ही उसे आनन्द आता था। उसकी यह ढिठाई स्त्रियों के लिए बड़ी आकर्षण की वस्तु थी। इसी आकर्षण ने एक दिन पॉली ब्राउन—उस समय मिस पॉली मॉरीसन—को भी घेर लिया था। पर उस समय क्लेटन का विवाह हो चुका था। पत्नी इंग्लैण्ड में थी, जॉन अभी बालक ही था। पॉली मॉरीसन ने टूटे हुए दिल से सैनिक विभाग का काम छोड़कर कलकत्ता आकर मेडिकल कालेज में नौकरी कर ली थी। क्लेटन साहब ढीठ होकर भी ढोंगी न था। कलकत्ता में नौकरी दिलाने में उसने सहायता की थी। कई-एक बड़े-बड़े अस्पताल केवल योरपवासियों के लिए निर्दिष्ट थे—उनका चक्कर काटने के बाद पॉली ने मेडिकल कालेज में नौकरी ले ली थी। वह उस समय भी मिस पॉली थी। यहीं रहकर वह मिसेज़ ब्राउन हुई है। रीना उस समय १० वर्ष की बालिका थी। जेम्स और रीना के साथ घर-गृहस्थी में डूबकर पॉली ब्राउन क्लेटन को करीब-करीब बिलकुल भूल चुकी थी।

अचानक पिछले वर्ष जॉन क्लेटन आकर मेडिकल कालेज में भरती हुआ। मिसेज़ पॉली ब्राउन को एक चिट्ठी देते हुए उसने कहा था, "मेजर चार्ल्स ब्राउन आफ़ दि किंग्स ओन रेजिमेंट, आपको उनकी याद है?"

"मेजर चार्ल्स क्लेटन, डियर चार्ली?"

जॉन ने हँसकर कहा था, "मैं उनका लड़का हूँ।"

"तुम उनके लड़के हो?"

"हाँ, यहाँ मेडिकल कालेज में पढ़ने आया हूँ।"

विस्मित हो गयी थी पॉली ब्राउन। मेजर चार्ल्स क्लेटन का लड़का इंग्लैण्ड के बजाय यहाँ डॉक्टरी पढ़ेगा? आई० एम० डी० होगा? चार वर्ष में चिकित्सा-शास्त्र समाप्त! उस्तरा चलाकर इस देश के नीम हकीम फोड़ा काटते हैं। वे लोग मोथरी छुरी से भी उससे बेहतर नहीं

काट सकते। आई० एम० डी० के उपयोग के लिए पैनी छुरी के बजाय भोथरी छुरी की व्यवस्था है। उन्हें कभी भी ब्रिटिश-आइरिश रेजिमेंट में नौकरी न मिलेगी। काले सिपाहियों के रेजीमेण्ट में मेडिकल अफसर होगा।

पॉली ब्राउन के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं, पर चिट्ठी पढ़कर पॉली ब्राउन ने अपने-आप ही कहा था, "स्ट्रेंज! स्ट्रेंज लक! लक के सिवा और क्या कहूँ!"

मेजर क्लेटन के जीवन में उलट-पलट हो गयी है। विचित्र अदृष्ट के सिवाय और क्या! पाँच वर्ष पहले की बात है। क्लेटन सी० पी० में बड़ी छावनी में था। तब तक उसके बाल-बच्चे यहाँ आ चुके थे। क्लेटन भी कैप्टेन से मेजर हो चुका था। पत्नी के आने से अफसरों की मण्डली में उसे लाचार होकर फूंक-फूंककर कदम रखना पड़ता था। क्लेटन की पत्नी मार्गरेट दृढ़ स्वभाव की स्त्री थी—साहस और शारीरिक शक्ति दोनों में ही क्लेटन के उपयुक्त। क्लेटन ने समाज छोड़कर मध्य भारत के जंगलों में घूमना शुरू कर दिया, शिकार की खोज में। शिकार के लिए जंगलों में भटकते-भटकते आदिवासी स्त्रियों के उपभोग का रास्ता निकाल लिया था उसने। कुछ ही दिन में मार्गरेट को भी इसका आभास हुआ। वह भी एक राइफल लेकर शिकार में उसकी संगिनी बन गयी। अन्तिम बार एक विचित्र घटना घटी।

क्लेटन-जैसे व्यक्ति किसी बात को घुमा-फिराकर नहीं कहते—सत्य के प्रति श्रद्धा के कारण नहीं, जिन्दगी की कोई घटना ही उनके लिए लज्जा का विषय नहीं होती इसलिए। उसने पॉली ब्राउन को लिखा था, "पॉली, विचित्र घटना हुई। मेरे मन ने मुझे धोखा दिया या वह कोई नियति का खेल था, या मेरे कर्म-फल की परिणति थी, यह आज भी नहीं समझ पाया। उस बार एक घने जंगल के बीच एक गाँव में अड्डा बनाया था। मार्गरेट साथ थी। एक बाघ के जोड़े का अड्डा भी पास ही था। गाँव में आकर एक आश्चर्यजनक जंगली युवती को देखा। मेरा मन बाघ की बजाय उसकी ओर ही अधिक खिंच गया, पर मार्गरेट साथ थी। जो हो, मचान बाँधकर दूसरे दिन रात को एक बाघ को मारा, पर एक भाग

गया। जो मरा वह बाघ था, भागनेवाली थी बाघिनी। तीन दिन फिर उसको न पा सका, पर उसके पैरों के निशान विचित्र रूप में चारों तरफ दीखते रहे, मानो सामने न आकर पीछे की ओर से चक्कर काट रही हो। गांव के सरदार ने कहा था, "लौट जाइए साहब, यह बाघिनी भयंकर है। आपके पीछे पड़ गयी है।" बात दिन के समय हो रही थी। गांव के और लोग भी इकट्ठे थे। उन्हीं के बीच वह विचित्र मादकतामयी जंगली युवती भी थी। सबकी नजर बचाकर वह मन्द-मन्द मुसकरा रही थी। तुम उस जमाने के चार्ली को भूली न होगी। इस मामले में वह पक्का उस्ताद था। कोई बाघिनी पीछे पड़ी है, केवल इस कारण चार्ल्स क्लेटन उस जंगली मदिरा का पान किये बिना लौट सकता था। मार्गरेट ठीक समझ न पायी थी, फिर भी उसने कहा था, 'लौट चलो।' मैंने कहा, 'आज का दिन और देख लें।' ठीक उसी समय बाघिनी गांव के बाहर प्रकट होकर एक गर्जन द्वारा मुझे नियति का निमन्त्रण देकर जंगल में अदृश्य हो गयी। शाम को अचानक उस स्त्री से भेंट हो गयी। उसने भी हँसकर निमन्त्रण दिया। मैंने उससे कहा, 'आज शिकार के लिए नहीं जाऊँगा, आधी रात को मिलूंगा।' मार्गरेट से कहा, 'तबीयत ठीक नहीं है, मचान पर जाना आज ठीक नहीं होगा।' डेरे पर ही रह गये। डेरा मुखिया के घर के ही एक कमरे में था। मैंने शराब पी और मार्गरेट को भी पिलायी। उसे सुलाना जरूरी था और वह सो भी गयी थी। अचानक खट-खट आवाज हुई। कान लगाकर सुनने लगा। मैं शिकारी हूं, जानवरों के पैरों की आहट पहचानता हूं। मैं चार्ली क्लेटन हूं, अभिसारिका के पैरों की चाप भी पहचानता हूं। वह पैरों की आहट उसी जंगली युवती की थी। सन्तोष के साथ दरवाजा खोला, थोड़ा-सा किवाड़ हटाकर बाहर झांका। आसमान में चांद था। जंगल में चांदनी फैली हुई थी। कैसी अपूर्व थी वह चांदनी! गहरे हरे रंग के घेरे के बीच उस शुभ्रता की कोई उपमा नहीं मिलती। उसी के बीच दीख पड़ी वह युवती। देखने में मुझसे कोई भूल नहीं हुई थी। हृदय के भीतर रक्त उबल उठा। मैं बाहर निकल आया। सीटी बजायी। वह स्थिर खड़ी थी। पर मैं आगे बढ़ गया। पर कौन कहां? ठीक उसी क्षण बाघ की दहाड़ से जंगल थर्रा उठा।

पीछे से बाघिनी मेरे ऊपर उछल आयी। मैं थोड़ा-सा खिसक सका था, तो भी वह मेरे दायें कन्धे के ऊपर आकर गिरी। उसी क्षण मैंने मुनी मार्गरेट की चीख। उसी के दूसरे ही क्षण बन्दूक की आवाज सुनायी दी—एक-एक कर दो गोलियाँ। फिर बाघ की दहाड़। उसके बाद कुछ याद नहीं, होश आया बहुत दिन बाद अस्पताल में। दायाँ हाथ काट डालना पड़ा है; दायाँ कान भी नहीं है। दायें पैर में फ्रैक्चर हुआ था उसमें भी जान नहीं है। बाघिनी मार्गरेट के टुकड़े-टुकड़े करके ही मरी थी। दोनों ही गोलियाँ उसके सीने में और पेट में लगी थीं। मरते समय लुढ़कते-लुढ़कते आकर मेरे ऊपर ही गिरी थी। आलिंगन कर लिया था। और भी मजेदार बात क्या हुई, जानती हो? उस जंगली गाँव में उस लड़की का पता कोई मुझे न दे सका था। मैंने तलाश की थी। उन लोगों का कहना था, 'नहीं तो, ऐसी तो कोई स्त्री इस गाँव में नहीं है!' आज भी मैं क्या सोचता हूँ, जानती हो? वह युवती क्या शुरू से ही मेरे मद्य-विह्वल मस्तिष्क और नारी-लोलुप चित्त की भ्रान्ति थी? नितान्त कल्पना थी? जो हो, आज मैं विकलांग असहाय हूँ, मामूली पेंशन के ऊपर निर्भर मामूली आदमी। जॉनी को इंग्लैण्ड भेजकर पढ़ाने की सामर्थ्य नहीं। वह कलकत्ता पढ़ने जा रहा है। मैं जानता हूँ, तुम वहाँ की मेट्रन हो। जॉनी की देखभाल करना।"

ईश्वर का नाम लेकर पॉली ब्राउन ने शरीर पर क्रॉस का चिह्न बनाया था। 'हे भगवान्! पुअर चार्ली शैतान के चंगुल में फँस गया था। पर तुम बैठो, जॉनी! तुम मेजर चार्ल्स क्लेटन के लड़के हो। मेजर क्लेटन किसी समय मेरे बॉस थे, मित्र थे। मेरे घर का दरवाजा तुम्हारे लिए सदा खुला रहेगा, जब चाहो आ सकते हो।"

उसने अपने पति जेम्स ब्राउन के साथ भी जॉन का परिचय करा दिया था। जेम्स ब्राउन किसी जमाने में मेदिनीपुर इलाके में रहता था। उसके पिता मेदनीपुर में ब्रिटिश जमींदारी कम्पनी में थे। वहीं पहाड़, जंगल खरीदकर व्यापार करते थे। वही व्यापार जेम्स ब्राउन भी करता था। व्यापार में नुकसान होने के बाद वह इन्सॉलवेंसी लेकर अपनी पुत्री रीना के साथ कलकत्ता आ गया था। उसी के बाद पॉली मॉरीसन से

मुलाकात हुई। इस बात को आज कोई चार वर्ष हो गये।

"रीना बड़ी अच्छी लड़की है।"

दो वेणियाँ हिलाती हुई रीना बैठी-बैठी मधुर हँसी हँस दी थी।

"इसके पिता ने तय किया था कि इसे कन्वेंट में रखकर अन्त में 'नन' बनायेंगे। जिमी को भी धर्म-कर्म का बड़ा खब्त है। इसे कन्वेंट में रखा भी था। मैं ही वहाँ से जबरदस्ती ले आयी हूँ। देखो न, कैसा सलोना स्वभाव है, कैसा सलोना चेहरा है!"

उसी सलोने स्वभाववाली रीना ने चिढ़कर कृष्णेन्दु से कहा था, "यू ब्लैकी कालाचाँड! यू हीदेन!"

कृष्णेन्दु सिर पर पट्टी बाँधे विजयी वीर की भाँति कालेज के खेल के मैदान में अभी-अभी आया था और लड़के उल्लास तथा उत्साह से शोर मचाते हुए उसका स्वागत कर रहे थे। रीना ब्राउन क्रोध में उबलती हुई अपने फ्लैट से उतरकर ग्राउण्ड के भीतर थोड़ा-सा प्रवेश करके चीखकर बोली थी, "यू ब्लैकी कालाचाँड! यू हीदेन!"

उसके पीछे-पीछे आयी थी उसकी आया। इसी देश की गोरे रंग की एक स्त्री। सिर के बाल पक गये थे; मोटी-मोटी भौंहें थीं; देखने में वह बहुत अजीब लगती थी। उसकी आँखों की दृष्टि तो अद्भुत थी—सदा ही मानो आतंक से खुली रहती थीं, पलक नहीं गिरती थीं। वह पीछे से चिल्ला रही थी—"रीना, रीना, रीना, रीना! नहीं! नहीं!"

रीना चुप नहीं हुई थी। उसने पैर पटककर कहा था, "यू, सुनायी नहीं पड़ रहा है तुम्हें?"

कालाचाँद ने उसके पास आकर कहा था, "बरसात के इस कीचड़ के ऊपर इस तरह पैर न पटको। तुम्हारा ऐसा अच्छा स्कर्ट कीचड़ की छींटों से भर गया।"

सचमुच यही हुआ था। लड़के हँस पड़े थे। उस हँसी के प्रच्छन्न व्यंग्य से रीना का मुख लाल हो गया था। इस बात का कोई जवाब भी उसे न सूझा था। खुल्लम-खुल्ला इलजाम लगाते हुए उसने कहा था, "जॉनी को तुमने इस तरह क्यों मारा? ह्वाई? यू ब्रूट!"

उसके उत्तर देने के पहले ही कालेज-टीम का फुलबैक बसन्त बोल

उठा था, "इसके सिर की पट्टी नहीं दीखती ? जॉनी ने ही मारा था पहले।"

कृष्णेन्दु ने कहा था, "मेरी कोई वाग्दत्ता नहीं है मिस ब्राउन, होती भी तो वह आकर जॉनी से ऐसा प्रश्न नहीं करती। वह समझ लेती कि लड़ाई शुरू होने पर जोरदार व्यक्ति की मार भी जोरदार ही होगी। कीचक हमेशा ही भीम के हाथों मरता है।"

लड़के 'हो-हो' करके हँस पड़े थे।

अचानक उस आया ने हाथ जोड़कर कृष्णेन्दु से शुद्ध बँगला भाषा में कहा था, "हे बाबा ! दुहाई तुम्हारे पुरखों की, तुम तो भले आदमी के लड़के हो, मैं हाथ जोड़ती हूँ, हार मानती हूँ। उससे कुछ न कहो। ए बाबा !"

स्त्री बंगालिन है ! इसी आश्चर्य से सब लड़के स्तब्ध हो गये थे। इसी बीच रीना जल्दी में चली गयी थी। जाते-जाते चीखकर उसने कहा था, "यू विल बि पनिश्ड, गॉड विल पनिश यू !"

कालेज के भीतरवाले मैदान में खेलने के अधिकार को लेकर साधारण और एंग्लो-इण्डियन सैनिक छात्रों के बीच झगड़ा, मार-पीट, कालेज के इतिहास में लिखा है। उसका काँटा तब तक निकला न था। उसकी खटक खेल के मैदान में भी चलती है। कल दो दलों के मैच में जॉनी ने ही मार-पीट शुरू की थी। उन्हें हमेशा से ही बूट पहने रहने की सुविधा रहती है ; फिर जॉनी मार-पीट में सिद्धहस्त। बेचारा जॉनी, कृष्णेन्दु को जानता न था ; पर कृष्णेन्दु का छ: फुट लम्बा आकार देखकर उसे थोड़ा होशियार हो जाना चाहिए था। इसके अतिरिक्त पिछले दो वर्षों में कालाचाँद का खेल में जैसा नाम था उसका ध्यान करके मारने के पहले भली-भाँति सोच-विचार कर लेना उचित था। शुरू में ही सेण्टर-हाफ़। जॉनी ने बूट की ठोकर से इन लोगों के सेण्टर-फ़ारवर्ड को घायल कर दिया था। बेचारे के दाहिने घुटने के नीचे जख्म हो गया था। उठ खड़ा होने पर भी उसकी दौड़ने की शक्ति जाती रही थी। उसके बाद ही जॉनी ने इन लोगों के सेण्टर-हाफ के पैर का अँगूठा कुचल दिया। रेफरी ने उसे चेतावनी भी दी ; पर जॉनी ने दूर हटकर रेफरी को 'सन ऑफ़

ए बिच' गाली दी थी। बात कृष्णेन्दु के कानों में पड़ी। सेण्टर-फ़ारवर्ड को अपनी जगह देकर वह वहाँ आ गया। आकर जॉनी के ठीक सामने खड़ा हुआ।

जॉनी ने हँसकर कहा, "कालाचाँद, दैट्स आलराइट।"

बात पूरी होते-न-होते गेंद दोनों के बीच आ पड़ी। जॉनी ने उसके घुटने को निशाना बनाकर बूट चलाया। कालाचाँद ने चतुराई से अपने घुटने बचाकर जॉनी के उठे हुए पैर के नीचे की ओर किक जमाया। छः फुट लम्बे इन्सान के मजबूत बाँस-जैसे पैर के किक से जॉनी चित जा पड़ा।

थोड़ी ही देर बाद जॉनी ने उसके सिर का निशाना लगाया। सिर फट गया। खून-सने बड़े-बड़े बालों को पीछे की ओर झटककर कृष्णेन्दु कोई दो मिनट के भीतर ही गेंद लेने के लिए झपटा। जॉनी तेजी से लपककर उसे रोकने पहुँचा, कृष्णेन्दु तब तक गेंद इन्समैन को देकर आगे बढ़ गया था। ऊँची गेंद आकर गिरी। जॉनी और कृष्णेन्दु आमने-सामने थे, दोनों ही हेड देने के लिए उछले। कृष्णेन्दु ने हेड दिया, जॉनी तिरछा होकर चीखता हुआ धरती पर गिर पड़ा, पेट को दबाये हुए। उसके बाद बेहोश। उसे उठाकर ले जाना पड़ा था। आज भी अस्पताल में है। पेट की अन्तड़ियों में चोट लगी है। उसके बाद कृष्णेन्दु ने हैटट्रिक की थी।

रीना ब्राउन इसी कारण उससे कह गयी, "गॉड विल पनिश यू।"

कृष्णेन्दु ने भी उत्तर दिया था। यद्यपि उत्तर देने में उस आया के मुख से अनुनयपूर्ण बंगला भाषा सुनने के कारण कुछ देरी हो गयी थी। विस्मय से आधा मिनट चुप रह गया था। फिर चीखकर कहा था, "हलो मिस, हलो! देन आस्क योर गॉड—। अपने भगवान् से कहो, मेरे सामने प्रकट हों, या मुझे अपने सामने हाजिर करायें। जानती हो, मैं ईश्वर में विश्वास नहीं करता। मेरा एक बड़ा लाभ होगा, उन्हें, देख सकूँगा। इसके लिए अगर जरूरत हो तो बताना, तुम्हारे जॉनी को फिर पीट दूँगा!"

"रीना ब्राउन! तुम्हारे ईश्वर को मैं देख चुका हूँ, रीना ब्राउन! पर आश्चर्य

है, डाइन होने की अपराधिनी इस आदिम रूप नारी भूमत्री में भी उन्हें देखा है ! सिन्धु, लालमिम आदि के भीतर भी उन्हें पाया है। तुम्हारे साथी, मृत्यु-भय-त्रस्त, मद्य-पान-विभोर, उस अमरीकी अफसर के भीतर भी देखा, वह मौजूद हैं। युद्ध में प्राण लेनेवाले के भीतर नहीं, जो युद्ध में जान देने के लिए इतनी दूर आया है, उसके भीतर उन्हें देखा ! पर तुम्हारे भीतर नहीं देखा, रीना ब्राउन !"

"बाबा साहब !" कमरे में सिन्धु ने प्रवेश किया।

"कौन ? सिन्धु ?"

"हाँ, बाबा साहब ! चाय दे गयी थी, पी नहीं। रात कितनी हो गयी है ! भूख क्या आपको नहीं लगती, बाबा साहब ?"

"मेरी रोटी ढककर रख देना, सिन्धु ! जब जी करेगा, खा लूँगा !"

'ऊँहूँ ! आप खा लीजिए, तब मैं जाऊँगी।"

"नहीं सिन्धु ! आज मुझे छोड़ दे, बेटी !"

"तबीयत ठीक नहीं है, बाबा ?"

"तबीयत तो ठीक है बेटी, मन ठीक नहीं।" कहकर कृष्णस्वामी उठ पड़े। कमरे से निकलकर बरामदे में आ खड़े हुए। बरामदे से खुले मैदान में उतर आये।

चारों ओर वर्षा ऋतु के घने वाले शाल-वन में चाँदनी की आभा फूट उठी है। दूर क्षितिज तक जंगल के ऊपर-ही-ऊपर चली गयी है। निःशब्द नहीं, निःस्तब्ध भी नहीं, पर मानो केवल प्रसन्न हो। पेड़-पेड़ पर कलियाँ परिपुष्ट हो रही हैं। कल सवेरे खिल जायेंगी। परसों जो खिलेंगी वे आज बढ़ रही हैं। जो आज सवेरे खिली थी, उनकी गन्ध अभी तक हवा में बिखरी हुई है। धरती के सघन अन्धकार में जड़ें कीड़ों की भाँति लाखों सूक्ष्म मुख फैलाये जीवन-रस पी रही हैं। विचित्र जीवन-तपस्या अविराम चल रही है। कीचड़ का रस फूल के रूप में खिलता है।

रीना ब्राउन शायद शराब पिये नाचती होगी, या खाँसती होगी, या शायद अमरीकी अफसर के साथ विकृत लालसा से उन्मत्त व्यभिचार में अपने-आपको नष्ट करती होगी। भौतिक जगत् में एक विस्फोट हुआ, जिसे वैज्ञानिकों ने आकस्मिक घटना बताया। उसी से ही जीव उत्पन्न

हुआ था। उस जीवोत्पत्ति में ही ईश्वर की तपस्या का होम-कुण्ड जलता है। उसमें अनन्त प्राणों की समिधाओं की आहुति पड़ रही है। प्राण अग्नि बना। तुम उसमें अंगार बनकर झर पड़ीं, रीना ब्राउन ! यह कैसे हुआ ?

आगे बढ़ चले कृष्णस्वामी। अपने आश्रम की सीमा पार करके जंगल की ओर चल पड़े। जंगल में वृक्ष मानो बात कर रहे थे। हवा से पत्ते-पत्ते में कुछ जाग उठा है, कोई राग बज उठा है। सारा दिन उन्होंने मनुष्य का, जीव-जन्तुओं का जीवन-खाद्य ऑक्सीजन प्राप्त किया है। अब ऑक्सीजन दे रहे हैं। तुम दिन-रात कार्बन डायोक्साइड ग्रहण करते हो, दिन-रात कार्बन डायोक्साइड ही देते हो। उनके विलय में भी एक विचित्र सूक्ष्म स्थिति विद्यमान है, पर तुम्हारे भीतर केवल क्षय है, केवल क्षय, केवल क्षय !

"बाबा साहब ! फ़ादर !"

बँगले की तरफ से किसी का कण्ठ-स्वर बह आया। जोसेफ लालसिंग पुकार रहा है। वह जंगल की ओर चले जा रहे हैं इसी से शंकित हो उठा है। जंगल में भालू हैं, जंगली सुअर हैं, बीच-बीच में चीते भी आ जाते हैं। इसी डर से उन्हें लौट आने को कह रहा है। घूमकर खड़े होकर भारी गले से कृष्णस्वामी ने कहा, "बहुत भीतर मैं नहीं जाऊँगा, जोसेफ !"

"नहीं, बाबा साहब, गाँव से कुछ लोग आये हैं, फ़ादर !"

लोग ! इसका मतलब है किसी के घर कोई बीमारी या मुसीबत आ पड़ी है। लौट आये कृष्णस्वामी ! लोग बरामदे में बैठे हैं, एक कोस दूर के एक छोटे-से गाँव से आये हैं। कृष्णस्वामी सभी से परिचित हैं—वह है बूढ़ा शरण नायक !

"क्या हुआ नायक ? इतनी रात को ?"

"होगा क्या ? मुसीबत ! नहीं तो तुम्हारे पास आता ही क्यों इतनी रात गये ?"

"कौन बीमार है ? मुझे तो कुछ पता नहीं।"

"जानोगे कैसे ? मेरे लड़के की बड़ी बिटिया ! पहला जापा है। दोपहर से ही दर्द उठ रहे हैं। दाई ने इतनी रात गये कहा, 'मेरे बस

का काम नहीं नायक। हालत सचमुच खराब लग रही है; तुम बाबा साहब को खबर दो। लड़की दर्द से तड़प रही है। सुना नहीं जाता। एक बार चलना ही पड़ेगा बाबा को।"

"जरूर चलना पड़ेगा।" कृष्णस्वामी जल्दी से उठकर कमरे के भीतर गये। पुकारा, "जोसेफ ! तुम भी चलो। सब औजार लेकर बैग में ठीक से लगा लो। तुम लोग कोई लालटेन नहीं लाये, नायक ?"

"नहीं बाबा, तेल कहाँ है ! एक टूटी-फूटी हरीकेन है—वह घर में रखी है। पर चांदनी खिली है, चलेंगे।"

"अपनी एक हरीकेन ले लो सालखिम। ब्लैसेड इज ही दैट कमेथ इन दि नेम ऑफ दि लॉर्ड। चलो नायक !" छोड़ो रीना की बात। रीना मर चुकी। उनके लिए तो वह मर ही चुकी।

चार

"डी मनट्ट यू," रीना ने उन्हें एक दिन लिखा था। वही उसकी अन्तिम चिट्ठी थी। "कृष्णेन्दु, तुम मेरे लिए मर चुके। डेड टु मी।"

अगले दिन सवेरे कृष्णस्वामी शरण नायक के घर से लौटे। प्रायः सारी रात परिश्रम करके शरण की नातिन का प्रसव कराकर घर लौट रहे थे। शाल-वन में अभी भी रात को विचरनेवालों का आना-जाना बन्द नहीं हुआ था। पक्षियों ने अभी बसेरा नहीं छोड़ा था, अभी चहचहाना शुरू किया था। फूल भी बस खिल ही रहे थे। सिर के ऊपर आसमान में बगुलों की पंक्तियाँ उड़ी चली जा रही थीं। विष्णुपुर के बाँध पर जा रहे हैं, और एक साथ बहुत-से हंस चक्कर काट रहे हैं। सुबह की हवा थके हुए शरीर में बहुत अच्छी लग रही है। साइकल होती तो बड़ा अच्छा होता। लौटते-लौटते यही बात याद आयी। कल रात को ही याद आयी थी। पर अब तक दबी रही, किसी अन्य विचार के लिए अवकाश ही न था।

अन्ततः कृष्णेन्दु रीना को प्यार करने लगा था। रीना भी उसे

करने लगी थी। विचित्र ढंग से दोनों के विरोध के बीच सेतु तैयार हो गया था। सोचने पर आज भी कितना आश्चर्य होता है। रीना उसे देखते ही बरामदे से चिल्लाकर कहती, "यू हीदेन !"

कृष्णेन्दु तब धर्म-ईश्वर कुछ भी नहीं मानता था, यही हीदेनिज़्म था। मेंटर और माइण्ड की संज्ञा को मानकर उसने नयी यात्रा शुरू की थी। पर हीदेन कहलाना उसे अखरता था। उस लड़की से बदला लेने की तीव्र इच्छा उसके मन में विक्षुब्ध आवेग से चक्कर काटती रहती थी और मामूली-से अवसर पर विचित्र रूप में प्रकट हो जाती थी। कोई महीने-भर बाद की बात होगी। सितम्बर के अन्त में, मेडिकल कालेज में इनकी टीम एक कालेज कम्पिटीशन का सबसे बड़ा शील्ड जीतकर लायी थी। उस बार के खेल में कृष्णेन्दु ही सबसे अच्छा खिलाड़ी माना गया था। मेट्रन पॉली ब्राउन को खेल देखने का बहुत शौक़ था। कॉलिज की टीम का खेल होने पर वह जरूर जाती और अपना प्रिय पंखा हाथ में लेकर ठीक सामने की कुर्सी पर ही बैठती। पास होती रीना। कृष्णेन्दु मानो रीना से बदला लेने के लिए ही पागलों की भाँति अदम्य उत्साह के साथ खेलता। रीना को सचमुच ही क्रोध होने लगता। कृष्णेन्दु को हीदेन कहने का हठ उसका बढ़ता ही गया। जीता हुआ शील्ड जिस दिन कालेज में आया उस दिन लड़के कृष्णेन्दु को कन्धे पर उठाये नाच रहे थे। रीना बरामदे में निकल-कर आयी। अचानक कृष्णेन्दु को क्या सूझा कि रीना के हीदेन कहने के पहले ही वह चिल्ला उठा, "जै काली !" तभी विचित्र घटना हो गयी। रीना झपटकर कमरे में चली गयी।

उसके बाद रीना को देखते ही कृष्णेन्दु चिल्लाकर कहता, "जै काली !"

रीना भी कहती, "हीदेन !" पहले दिन अप्रतिभ होकर कमरे में चले जाने के बाद अब और अप्रतिभ नहीं होती रीना।

कुछेक महीने बाद बड़े दिन पर सैनिक छात्रों का सोशल फंक्शन हुआ। उसमें कुछ चुने हुए दृश्य भी दिखाये गये थे। एक दृश्य था 'ऑथेलो' से। ऑथेलो और डेसडिमोना। "इट इज दि कॉज, इट इज दि कॉज माई सोल" से लगाकर डेसडिमोना की हत्या तक का दृश्य ! जॉन वेल्टन ने ऑथेलो का पार्ट किया था और अधिकारियों की अनुमति

लकर रीना ने डेसडिमोना का। क्लेटन द्वारा ग्रॉथेलो का ग्रभिनय ग्रच्छा नहीं हुग्रा, पर ग्रपने चेहरे ग्रौर मीठे गले के कारण, खास तौर पर सहज ग्रभिनय के लिए, रीना की प्रशंसा हुई थी। कृष्णेन्दु ने देखा था वह ग्रभिनय। उसके बाद उसे क्या सूझा कि ग्रॉथेलो नाटक के उस दृश्य को उसने कण्ठस्थ कर लिया ग्रौर चाहे जब "इट इज़ दि कॉज, इट इज़ दि कॉज" कहकर यह स्वगत-भाषण बोलना ग्रारम्भ कर देता। रीना ने चिढ़कर तब से कृष्णेन्दु के सामने निकलना छोड़ दिया। तो भी कृष्णेन्दु खाली बरामदे की ग्रोर देखकर ऊँचे गले से कहता, "इट इज़ दि कॉज, इट इज़ दि कॉज।"

इसके बाद सब उलट-पुलट हो गया—नाटकीय रूप में नहीं, ग्रत्यन्त सहज ढंग से, स्वच्छन्द गति से। पहले उस परिवर्तन के समय कृष्णेन्दु को ग्रवश्य ही कुछ विस्मय हुग्रा था। पर ग्राज···? जंगली रास्ते पर चलते-चलते कृष्णेन्दु के मुख पर प्रसन्न-म्लान हँसी खिल उठी। किस बात का विस्मय? क्या कारण था विस्मय का? मनुष्य के भीतर प्राण-तत्व का यही तो स्वभाव है। यही तो मानव-देह की वेदी पर ईश्वर की तपस्या है। गुण के क्षेत्र में एक को दूसरे के साथ होड़ जिस भाँति मनुष्य का स्वभाव है, होड़ के बाद गुणग्राहता भी उसी प्रकार प्रकृति-धर्म है।

ग्रगले वर्ष फुटबाल का सीजन ग्राया। इण्टर-यूनिवर्सिटी शील्ड कम्पिटीशन में मेडिकल कालेज की टीम के जाने की बात ठीक हुई—ग्राई० एम० डी० ग्रौर एम० बी० क्लास के लड़कों की एक मिली-जुली टीम। क्लेटन ग्रौर कृष्णेन्दु दोनों ही चुने गये। चुने जाने के बाद ही दोनों का सीढ़ी के ऊपर ग्रामना-सामना हुग्रा। दोनों ही एकसाथ बोल उठे, "हैलो!" दोनों ने ही साथ-साथ हाथ बढ़ाये ग्रौर एक-दूसरे के हाथ दबा लिये। दोनों ने ही कहा, "तुम्हारे रहते मुझे कोई चिन्ता नहीं।"

टूर्नामेंट में ये लोग फाइनल तक पहुँचे थे। फाइनल में हार गये। खेल बम्बई में हुग्रा था। लौटकर ग्राये तब तक दोनों एक-दूसरे के ग्रन्तरंग बन्धु हो चुके थे।

क्लेटन ही उसे पॉली ब्राउन के घर ले गया था। पॉली ब्राउन बहुत खुश हुई थी। इस दुर्दान्त लड़के की कालेज में ऐसी लोकप्रियता देखकर सदा

आश्चर्य होता था। और कालेज के सब लोगों से वह भी अलग न थी। उसने कृष्णेन्दु का स्वागत करते हुए कहा था, "ऑथेलो, दि टर्बुलेण्ट मूर!" उसके बाद ही हँसकर बोली थी, "इट इज़ दि कॉज़, इट इज़ दि कॉज़।" तुम यह खूब कहते हो। मुझे बड़ा अच्छा लगता है। पर रीना को चिढ़ाने के लिए क्यों कहते हो? "यू नॉटी बॉय!"

रीना उस समय कमरे के दरवाजे पर खड़ी हुई मन्द-मन्द हँस रही थी। क्लेटन ने कहा था, "लैट बाइगॉन्स बी बाइगॉन्स। शेक हैण्ड्स यू टू, एण्ड बी फ्रेण्ड्स।"

कृष्णेन्दु ने उठकर हाथ बढ़ाते हुए कहा था, "मैं माफ़ी माँगता हूँ।"

रीना ने हाथ बढ़ाकर कृष्णेन्दु का हाथ दबाते हुए कहा था, "वी आर फ्रेण्ड्स!"

बातचीत के बीच अचानक पॉली ब्राउन ने आकर कहा था, "वह तुम एक बार सुनाओ न! 'इट इज़ दि कॉज, इट इज़ दि कॉज।' वही! सचमुच तुम वह बहुत अच्छा सुनाते हो। तुम्हारी भारी आवाज़ में एण्ड···एण्ड··· यू कैन पुट लाइवली इमोशन इन इट।"

रीना बोली, "एण्ड···" पर इतना कहकर ही चुप हो गयी।

क्लेटन ने पूछा, "क्या?"

रीना ने हँसकर कहा था, "तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक ऑथेलो की भांति। टॉल, मोर मूर-लाइक, इजण्ट इट?"

कृष्णेन्दु ने कहा, "पर तुमसे अधिक अच्छी डेसडिमोना की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। मुझे लगता है परफ़ैक्ट।"

क्लेटन ने कहा, "तो फिर तुम दोनों सारा सीन करो! लैट अस एन्जॉय एण्ड मेक दि मेमोरी ऑफ दि फर्स्ट मीटिंग अनफॉरगेटेबल। आज के इस परिचय की स्मृति चिरस्मरणीय हो जाये।"

जेम्स ब्राउन एक बार आकर तुरन्त ही लौट गया था। अजीब आदमी है। ठीक अजीब नहीं, वह उन सब अंग्रेजों में से है जो इस देश में एक छोटे-मोटे लाट साहब हैं। काले आदमी के साथ बात करने में भी नफ़रत होती है; और पक्के क्रिश्चियन की भांति हीदेन को छूने पर हाथ धोता है। नपितहीन है, इसीलिए चुपचाप रहता है।

रीना ने ब्राउन साहब के कमरे की ओर नज़र डालते हुए कुछ आपत्ति की थी। क्लेटन ब्राउन के पास जाकर अनुमति ले आया था। ब्राउन साहब ने पूछा था, "क्या सिर्फ कालेज में पढ़नेवाला भला लड़का है या भले घर का लड़का है?"

क्लेटन ने कहा था, "बोथ।"

"तो जरूर अनुमति दे सकता हूँ। ऊँची जाति का अपने यहाँ ?"

"हाँ। ही इज़ ए गुप्ता। वी हैव सो मैनी गुप्ताज़ अमंगस्ट अवर प्रोफेसर्स।"

"येस, येस, आई नो। गुप्ताज़ आई नो। येस।"

ब्राउन साहब ने अनुमति दे दी थी।

उन लोगों ने सारे ही दृश्य का पाठ किया था। अन्त में एक घटना भी हो गयी। डेसडिमोना की हत्या करने के समय जब उसने, 'इट इज़ टू लेट' कहकर उसका गला घोंटने का अभिनय किया और रीना जब 'ओह लॉर्ड, लॉर्ड, लॉर्ड' कहकर कातर चीत्कार कर उठी, तब उस क्षण वही आया 'रीना रीना' चिल्लाती हुई कमरे में घुस आयी थी।

चौंककर कृष्णेन्दु उठकर अलग खड़ा हो गया था।

रीना ने जल्दी में उठकर बैठते हुए उसे सान्त्वना दी थी। चकित हो गया था कृष्णेन्दु! रीना ने मेदिनीपुर-मानभूम-बाँकुड़ा इलाके की खास शुद्ध बँगला भाषा में सान्त्वना दी थी।

"झूठ, झूठ; यह सब झूठ-मूठ है; यह सब थिएटर की बातचीत है।"

जेम्स ब्राउन भी अपने कमरे से निकलकर दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया था। डरे हुए पशु की भाँति स्थिर दृष्टि से ताकती हुई वह स्त्री स्तब्ध मूक हो गयी थी।

"निकलो, इस घर से निकलो यू बिच, गैट आउट!" ब्राउन ने क्रोध में गरजते हुए कहा था। कृष्णेन्दु को थोड़ी बेचैनी-सी अनुभव हुई थी। रीना उस स्त्री का हाथ पकड़कर उसे वहाँ से बाहर उसके कमरे में पहुँचा आयी थी। पार्ली ब्राउन ने जेम्स ब्राउन को सम्हाला था।

क्लेटन ने हँसकर कृष्णेन्दु से कहा था, "दैट नेटिव वोमन—उसने रीना को एक महीने की उम्र से पाल-पोसकर बड़ा किया है। बहुत प्यार

करती है। रीना भी नापसन्द नहीं करती। बट यू सी, ही इज़ नॉट लाइक इट। मिस्टर ब्राउन अकृतज्ञ नहीं हैं, वह उसे निकालना नहीं चाहते, निकालना भी नहीं है। पर वह उसे माँ की भाँति प्यार करना चाहती है, अपनी बेटी की भाँति देखना चाहती है। यह वह बरदाश्त नहीं कर पाते। यू नो, मिस्टर ब्राउन इज़ ए पक्का साहेब। सिर्फ़ यही नहीं, ब्राउन बड़े कट्टर क्रिश्चियन भी हैं।"

रीना का वह रूप अभी तक याद है। एक बार देखती थी उस ओर जिधर ममता में आबद्ध मूक पशु की भाँति उसकी धाय चली गयी थी और फिर देखती थी बाप के कमरे की ओर। अचानक वह उस कमरे से निकलकर अपने कमरे की तरफ़ चली गयी थी।

पॉली ब्राउन ने लौटकर कृष्णेन्दु से कहा था, "मुझे बहुत दुख है गुप्टा! तुम कुछ खयाल मत करना! तुम जानते नहीं, यह स्त्री बड़ी अनक्लीन इन माइण्ड है। और कुछ आउट ऑफ़ माइण्ड है—थोड़ी-सी पागल। रीना सोती है कि वह इधर-उधर जादू-टोना करती रहती है। बड़ी खुशी हुई आज। और तुमने कितना सुन्दर काव्य-पाठ किया। फिर भी कभी आना! प्लीज़! प्लीज़, डू कम!"

•

क्लेटन के साथ उसका यह स्नेह-सम्बन्ध शारीरिक बल को लेकर ही था। उनके होस्टल में पहुँचते ही पंजा लड़ाने से शुरुआत होती। कमरे में घुसते ही हाथ बढ़ाकर कहता, "कम ऑन!"

उसके बाद तरह-तरह की होड़ चलती। जो कुछ भी क्लेटन को आश्चर्यजनक लगता, उसे जब वह पॉली ब्राउन के मकान पर कृष्णेन्दु को खींच ले जाकर दिखला लेता, तब पीछा छोड़ता।

सूखे नारियल को सिर्फ़ हाथ की ताकत से छीलकर सिर के ऊपर तोड़कर खाते हुए देखकर उसने पूछा था, "पत्थर हो?"

"नहीं। काटने से खून निकलता है," कृष्णेन्दु ने हंसकर कहा था।

एक दिन पचास उबले हुए अण्डे खाने का प्रमाण भी उसे ब्राउन-परिवार के घर जाकर दे आना पड़ा था।

इसी बीच रीना और वह कब परस्पर बन्धु हो उठे यह ठीक-ठीक बताना कठिन है, पर यह बन्धुत्व तिल-तिल करके बना था। अचानक किसी एक दिन की किसी आकस्मिक घटना के फलस्वरूप या एक दिन के किसी आकस्मिक आवेग का उच्छ्वास-मात्र नहीं था। अत्यन्त सहज स्वच्छन्द भाव और गति से बढ़ा था—ठीक फूल खिलने की भाँति।

हाँ, फूल खिलने की भाँति। फूल जिस दिन खिलता है उस दिन सूरज निकलने के पहले तक भी उसके वर्ण और गन्ध की घोषणा किसी को नहीं सुनाती। पर जब खिलता है तो उसके रंग की शोभा, गन्ध का निमन्त्रण चारों ओर बिखर जाता है। इसी भाँति इन लोगों ने एक दिन एक-दूसरे को जाना था।

क्लेटन दो वर्ष फेल होने के बाद जब पास होकर निकला तब कृष्णेन्दु छठे वर्ष में था। और उस समय वह सिर्फ खेल के मैदान में ही प्रसिद्ध न था, केवल दुर्दान्तता के लिए ही सर्वजन-परिचित न था, विद्या के क्षेत्र में भी उसकी प्रतिभा उजागर होने लगी थी। चिकित्सा की कई पद्धतियों में तभी ही वह पक्के डॉक्टर की भाँति निपुण हो गया था। हैजे में सैला-इन इन्जेक्शन और इन्ट्रीवीनस इन्जेक्शन देने के काम में वह बहुत दक्ष था। उसकी यह दक्षता ऐसी थी कि हैजे के केस में नामी डॉक्टर तक उसे मदद के लिए बुलाते थे। इन्जेक्शन वही देता था, डॉक्टर बस उपस्थित रहते। इससे उसे पैसा भी मिल जाता था। लवसैन इन्जेक्शन देने के लिए तो तब उसने एक हाल ही में पास होनेवाले डॉक्टर मित्र के नाम से एक चेम्बर ही खोल लिया था। इसमें क्लेटन ने उसकी बड़ी सहायता की थी। एंग्लो-इण्डियन समाज में उसे परिचित करा दिया था। क्लेटन ने तब तक उसे सूट पहनना भी सिखा दिया था। धोती-कमीज पहननेवाले डॉक्टर के पास ये लोग नहीं आना चाहते। उसे पैसे की कमी न होती थी। खुद ही कमा लेता था।

क्लेटन पास हुआ। उन लोगों को पास होते ही नौकरी मिल जाती है। नयी नौकरी पर जाना होगा। सैनिक छात्रों ने जानेवालों का अभिनन्दन किया। क्लेटन के प्रयत्न से 'ऑथेलो' का वही दृश्य फिर अभिनीत हुआ। उसी के कहने से ऑथेलो कृष्णेन्दु बना और डेसडिमोना रीना।

इस नाटक में ही कृष्णेन्दु ने आवेग-प्रखर दबे हुए गले से डेसडिमोना के मुख के ऊपर झुककर कहा था, "आइ विल स्मैल दी ऑन दि ट्री···।" तभी मानो वह अपना होश खो बैठा था। वह हिन्दू है, वह काला आदमी है। क्लेटन के आग्रह से अभिनय के लिए ऑथेलो का पार्ट मिलने पर भी डेसडिमोना रीना ब्राउन को चूमने का अधिकार उसका न था। तीव्र आवेग के बावजूद वहाँ उसने अपने-आपको संवरण किया। किन्तु—

"So sweet was ne'er so fatal. I must weep.

But they are cruel tears. This sorrow's heavenly."

कहते-कहते उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली थी। गला रुँधा जा रहा था, किसी तरह उसने समाप्त किया,

"It strikes where it doth love. She wakes."

रीना ब्राउन आँख मूँदे हुए भी उस आवेग के स्पर्श का अनुभव कर रही थी। आँख खोलकर देखा कि कृष्णेन्दु की आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है। पल-भर के लिए वह अभिभूत हो गयी थी। अगले ही क्षण उसने और कुछ अनुभव किया—शायद एकदम स्पष्ट नहीं, पर अन्धकार की भाँति वर्णहीन भी नहीं; कुहासे के बीच रंगों की झलक की भाँति।

बाद में रीना ने कृष्णेन्दु से यह बात कही थी। रीना को कहने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे, कृष्णेन्दु ने ही सुझाया था। "तुम कहना चाहती हो कि अन्धकार दूर होने के बाद कुहासे के बीच इन्द्रधनुष के रंगों की झलक की भाँति? जानती हो, काला कोई रंग नहीं। कालापन रंग का अभाव है, वर्णशून्यता।"

रीना ने कहा था, "दैट्स इट।" फिर बोली, "उसके बाद जब तुमने कहा, 'थिन्क ऑफ दाइ सिन्स', मैंने कहा, 'दे आर लव्स आइ बेयर टु यू', उस क्षण मेरी भी आँखों से आँसू फूट निकले थे।"

नाटक के बाद दोनों एक-दूसरे से कोई बात कहे बिना ही चले गये थे; मिले तक न थे। सात दिन तक। सिर्फ यही नहीं, कृष्णेन्दु जाने कैसा हो गया था।

कुछ ही दिन पहले लिखी हुई पिताजी की चिट्ठी बार-बार पढ़ता

और सोच में डूब जाता। पिताजी अचानक कलकत्ता आये थे। महीने-भर से उसने कोई चिट्ठी नहीं लिखी थी, इसी से चिन्तित होकर आ पहुँचे थे। और भी एक कारण था। उनके गाँव के हरिविलास वसु कलकत्ता में रहते थे। उन्होंने गाँव जाकर कहा था, "लड़का तो साहब हो गया, श्यामसुन्दर काका! कोट-पेंट पहनकर साहब-मेम के संग घूमता-फिरता है। रेस्टोरेंट में एक मेज़ के ऊपर बैठकर खाता-पीता है। मैंने अपनी आँखों से देखा है।"

पिताजी अगले दिन ही कलकत्ता आकर धर्मतल्ला के उस चेम्बर में पहुँचे थे। कृष्णेन्दु आजकल मेस के बजाय इसी पते का व्यवहार किया करता था। कोई गोल-माल नहीं होता था।

कृष्णेन्दु उस समय चेम्बर में एक फिरंगी लड़की को इन्ट्रावीनस इन्जेक्शन दे रहा था। उसके साथ की एक और लड़की बाहर बैठी थी। और दो मरीज़ इन्तज़ार कर रहे थे। सभी सलवर्सन के केस थे। इस मामले में इनकी मनोवृत्ति वैज्ञानिक है। ये लोग लज्जा नहीं करते। आकर साफ़-साफ़ कह देते हैं, 'वैल डॉक्, मुझे शक है, और शक का कारण भी है, कि मुझे बुरा रोग लग गया है। मेहरबानी करके देख लीजिए!" और इलाज भली-भाँति ख़त्म करके धन्यवाद देकर चले जाते हैं।

चेम्बर में लड़की को इन्जेक्शन देकर बाहर निकलते ही उसने पिता को देखा।

"पिताजी!"

"हाँ। महीने से भी अधिक अड़तीस दिन में तुमने चिट्ठी नहीं दी। चिन्तित होकर आया हूँ।"

"मैंने तो दी थी चिट्ठी!"

"हमें नहीं मिली।"

अचानक याद आया कि एक पत्र लिखा था डाक में डालने के लिए। चेम्बर में घुसकर ब्लॉटिंग पैड उठाकर चिट्ठी निकाली। अपराधी की भाँति उसे हाथ में लिये पिताजी के पास लौटकर उसने कहा था, "काम में भूल ही गया। डाली नहीं गयी।"

पिता हँस दिये थे। इस बारे में कोई बात न कहकर उन्होंने पूछा था, "ये सब ?"

"रोगी।"

"रोगी ? तुम···?"

"एक डॉक्टर मित्र यहीं इलाज करते हैं, उन्हीं की मदद करता हूँ। आपके आशीर्वाद से मैं डिग्रीशुदा डाक्टरों से भी अच्छा इन्जेक्शन देता हूँ।"

तभी क्लेटन और रीना आ गये थे। "हैलो मैन···"

कृष्णेन्दु ने जल्दी से अपने पिता का परिचय देते हुए कहा था, "क्लेटन, ये मेरे पिताजी हैं। पिताजी, ये मेरे मित्र। हमारे कालेज में ही पढ़ते हैं, जॉन क्लेटन, और ये हैं रीना ब्राउन, मेरी बन्धु।"

"ग्रैण्ड ओल्ड मैन," क्लेटन ने सचमुच खुश होकर बहुत सम्मानपूर्वक ही यह बात कही थी।

रीना स्थिर दृष्टि से उनकी ओर ताक रही थी।

पिताजी और नहीं रुके, चले गये थे। दूर सम्पर्क के किसी रिश्तेदार के यहाँ जाकर ठहरे थे। उनके कालीघाट चले जाने के बाद रीना ने कहा था, "ही इज ए ट्रू हिन्दू, ए टिपिकल ब्राह्मिन। मुझे तो बहुत ही अच्छा लगा। कैसी मीठी बात करते हैं! एण्ड यू, टर्बुलेंट मूर, ए रॉटर, हिज सन!"

कृष्णेन्दु हँस पड़ा था।

अगले दिन वह पिता को हावड़ा स्टेशन पर ट्रेन में बैठा आया था। पिता बात कम ही करते थे, गाड़ी में बैठने के बाद एक भी बात नहीं कही थी। गाड़ी छूटने के समय सिर्फ इतना कहा था, "होशियारी से चलना!"

कृष्णेन्दु को हँसी आ गयी थी। होशियारी से चलना होगा ? कैसे ? घर पहुँचकर पिताजी ने पत्र लिखा। लिखा था, "इच्छा थी कि आते समय तुम्हारे सामने ही सब बात समझाकर कह जाऊँ, पर 'होशियारी से चलना' के सिवा और कुछ न कह सका। पत्र में सब-कुछ खुलासा लिखने बैठा हूँ फिर भी जाने कैसी बाधा अनुभव कर रहा हूँ। तुम्हारी माँ से

भी ये सब बातें नहीं कह सका हूँ। इसी से मेरे मन की हालत समझ सकोगे। मुझे लग रहा है कि उचित न होगा। तुम योग्य पुत्र हो। विद्या और बुद्धि में जब तुम्हारी ख्याति हो रही है तब किस तरह से बुरा कहूँ। पर तो भी कहता हूँ कि मुझे अच्छा नहीं लगा। लगता है, ठीक नहीं होगा। मानो बहुत दूर बहे जा रहे हो। हमारे शास्त्रों में कहा है, उपनयन के समय तीन कदम से अधिक नहीं बढ़ना चाहिए। नहीं तो फिर लौटने का रास्ता नहीं बचता। मुझे लगता है कि तुम तीन कदम से अधिक ही बढ़ गये हो। दूसरी ओर कहा है, एक साथ सात कदम चलने से अविच्छेद बन्धुत्व होता है। देखा कि कलकत्ता में तुम बहुतों के साथ बहुत-से कदम चल चुके हो। सात कदम चले हो या नहीं, नहीं जानता। सप्तपद पूरे न हुए हों तो और आगे न बढ़ना। गोविन्द तुम्हारी रक्षा करें।"

पत्र पाने के बाद भी कृष्णेन्दु हँसा था। पिताजी की निर्मूल शंका पर हँसे नहीं तो क्या करे? पर इन घटना के बाद, अर्थात् फ्लेटन आदि के विदा-उत्सव के उपलक्ष्य में, ओथेलो के अभिनय के बीच अचानक ही अपना जो आत्म प्रकटीकरण उसके आगे हुआ, उसके बाद पिताजी की चिट्ठी को खोलकर बार-बार पढ़े बिना उससे नहीं रहा गया। स्वयं ही हिसाब लगा रहा था, कितने कदम पीछे छोड़ आया है, कितने कदम चला आया है रीना के साथ।

स्कूल एक कदम, सेण्ट जेवियर्स एक कदम, मेडिकल कालेज एक कदम। तीन कदम हो गये हैं। वह जानता है कि उपनयन के समय दो के बाद तीसरा पैर रखते समय पिता अथवा उपनयनदाता ही पकड़कर पीछे हटा देते हैं। घर-गृहस्थी में सीमित होकर बँधकर ही जीवन कट जाता है। मनुष्य के प्राण बन्द जल की भाँति भाप बनकर पुनर्जन्म की जल-धारा के समान झरते हैं, प्रवाह की कामना करते हैं। उसे यदि नदी के स्रोत की गति मिल जाये तो कोई खेद नहीं। सचमुच ही वह बहुत दूर चला आया है। उसकी रक्षा के लिए गोविन्द की कोई जरूरत नहीं। गोविन्द के क्षेत्र से बाहर है वह।

वह तो गोविन्द को मानता नहीं, विज्ञान के तथ्यों ने उसके आगे

नया रास्ता खोल दिया है।

और रीना के साथ ? कितने क़दम ? कितने क़दम हो गये ?

नहीं, और उस रास्ते पर नहीं चलना होगा ! रीना क्लेटन की मँगेतर है। क्लेटन उसका मित्र है। उसने रीना के घर जाना छोड़ दिया। रीना ने ही चिट्ठी लिखी। उसने उत्तर दिया, "जॉनी था, जॉनी के साथ आया करता था। जॉनी चला गया है। सिर पर इम्तहान भी है। जॉनी के लौटने पर आऊँगा। मेरी ग़लती पर ध्यान न देना।"

"बाबा साहब !"

"कौन ?" चौंककर कृष्णस्वामी खड़े हो गये।

"इतने सवेरे पैदल कहाँ जा रहे हैं ? साइकिल कहाँ गयी ?"

किसी गाँव से सिर पर घड़ा रखे और पाट के साक का बोझा लिये कुछेक नायक विष्णुपुर की ओर जा रहे थे।

कृष्णस्वामी रास्ता भूल गये हैं। जंगल में रास्ता भूलना मामूली बात है।

अपने घर का रास्ता छोड़कर बहुत दूर चले आये हैं। जंगल समाप्त होने को है। जंगल खत्म होते ही एकदम विष्णुपुर के किनारे पहुँच जायेंगे—बिलकुल यमुना के बाँध के पास।

थमकर खड़े हो गये कृष्णस्वामी।

यहाँ से लौटेंगे ? नहीं।

एक बार चलेंगे लाल बाँध के पास। लाल बाँध के किनारे ऊपर उस पत्थर को छू आयेंगे, जहाँ रामकृष्ण परमहंस ने बैठकर विश्राम किया था।

मन के भीतर, अबाध्य स्मृतियों का पीड़न उनसे और नहीं सहा जाता।

मिट जाये, अतीत की सारी स्मृति मिट जाये। पारस पत्थर के छूते ही लोहा सोना हो जाता है। उस परम वैरागी के आसन के स्पर्श से उनका मन भी वैराग्य से भर उठे। गेरुए के दाग से इन्द्रधनुष के सातों रंग पूरी तरह ढँके रहें।

पाँच

महापुरुष का स्पर्श महापुरुष के साथ ही चला जाता है। कम-से-कम भौतिक जगत् में तो नहीं रहता। भौतिक जगत् में पकड़कर रोक रखने की शक्ति नहीं होती, होती तो मिस्र के फराओं की ममियों की कृपा से ही पुराना मिस्र बचा रहता; बुद्ध की अस्थियों के ऊपर स्तूप के प्रताप से ही भारतवर्ष के सारे दुख मिट जाते; ईश्वर के पुत्र के आविर्भाव के बाद पड़ोसी-पड़ोसी के मेल से सारे यूरोप में एक अपूर्व प्रेम का राज्य खड़ा हो जाता।

रह जाती है महापुरुषों की वाणी। मनुष्य के भीतर-ही-भीतर बहती रहती है नदी की भाँति। पर मन में जब तृष्णा जागती है, जब मन मरु-भूमि हो उठता है, तब उस नदी का स्रोत भी सूख जाता है; सूखकर तप्त बालू के टीले की भाँति हाहाकार करने लगता है।

मन ठीक उसी प्रकार प्रखर तृष्णा से हाहाकार कर रहा है। किसी प्रकार भी कृष्णस्वामी रीना ब्राउन की बात भूल नहीं पाते। कैसे भूलें? इस रीना को देखकर उस रीना की याद कैसे भूलें?

विष्णुपुर के लाल बाँध के किनारे पत्थर से टिके हुए सोच में डूबे हैं कृष्णस्वामी।

याद आती है रीना की वही मूर्तिमती सान्त्वना-जैसी छवि। दीर्घ कृष्ण पक्ष के घेरे के बीच जल से भरी हुई बड़ी-बड़ी दोनों आँखें। सजल नयनों से कृष्णेन्दु की ओर देखकर उसने कहा था, "यू आर हार्टलैस, यू आर हार्टलैस, कृष्णेन्दु! आई डिड नॉट नो! नैवर थॉट इट ईवन!"

अचानक हार्ट फ़ेल होने से कृष्णेन्दु की माँ मर गयी थी। कृष्णेन्दु तार पाकर गया था और श्राद्ध आदि निबटाकर घुटा हुआ सिर लिये कलकत्ता लौटा था। मित्र लोग यह बात जानते थे, पर रीना को कहकर जाने की बात उसे न सूझी थी। कई महीनों से वह कुछ दूर ही हो गया था। वह डॉक्टर है। आजकल डॉक्टरी में मनोविज्ञान भी पढ़ना पड़ता है। एक साथ नब्बे दिन तक मन को बाँधे रखने से, दूर हटाकर रखने से मन में

आकर्षण का सूत्र जीर्ण-शीर्ण हो सकता है। उस दिन के बाद उसने संकल्पपूर्वक यही किया था। रीना क्लेटन की मनोनीता है। उसके माता-पिता जीवित हैं। पॉली ब्राउन के साथ भेंट होती थी, रोज़ ही उससे बातचीत करता; पर कम। लौटने के बाद उसके घुटे हुए सिर को देखकर पॉली ब्राउन ने आश्चर्य से पूछा था, "क्या हुआ कृष्णेन्दु। ऐनी मिसहैप ?"

"मेरी माँ···।"

"मर गयीं ? माता-पिता के मरने पर तुम लोग सिर घुटा देते हो ?"

"हाँ मिसेज़ ब्राउन, मेरी माँ अचानक हार्ट फेल होने से मर गयीं। मैं उन्हें देख भी न पाया।"

पॉली ब्राउन ने परम आत्मीय की भाँति ही सान्त्वना देने की कोशिश की थी। हृदय से धन्यवाद दिया था कृष्णेन्दु ने। सन्ध्या को वह धर्मतल्ला के चेम्बर में मित्र के साथ बैठा था कि रीना आयी। आँखों में आँसू भरकर उसने तिरस्कार के स्वर में कृष्णेन्दु से शिकायत की थी, "तुम हृदयहीन हो कृष्णेन्दु ! मैं नहीं जानती थी। सोचा भी नहीं था।"

"बैठो रीना !"

"नहीं। यही बात कहने के लिए आयी थी।"

हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए कृष्णेन्दु ने कहा था, "अपना अपराध स्वीकार करता हूँ।"

रीना बैठ गयी थी। उस दिन केवल उसकी माँ की बात ही पूछती रही थी और सचमुच ही रो पड़ी थी। "आज की बातचीत मेरे मन में अक्षय रहेगी रीना ! तुम्हारा पवित्र हृदय स्वर्ग की भाँति है। उसके स्पर्श से मेरा मन शीतल हो गया।"

थोड़ी-सी हँसी खिल पड़ी थी रीना के मुख पर—वेदना से म्लान किन्तु शान्त। कहा था, "सचमुच माँ का प्रेम मुझे कभी नहीं मिला कृष्णेन्दु ! पॉली मासी मुझे प्यार करती हैं, पर उनसे भी गहरे प्रेम का स्वाद मुझे कुन्ती के पास मिलता है। सोचती हूँ, उसने तो सिर्फ पाला है। मेरी आया है। तो फिर गर्भ में रखनेवाली माँ के स्नेह का स्वाद कैसा होता होगा ?" कृष्णेन्दु रीना के जाने के बाद कुछ देर तक अभिभूत बैठा रहा था।

रीना के साथ सम्पर्क फिर से नया हो उठा। सूत्र सूत का न था, काल के साथ कुछेक महीनों में जीर्ण हो जानेवाले उपादानों से बना न था। वह था सोने-जैसी धातु से निर्मित—हज़ार वर्ष बाद भी मिट्टी के नीचे से निकलनेवाले सोने के आभूषण की भाँति हज़ार वर्ष पहले के दो हृदयों के मिलन की साक्षी समान।

असली सोना; कोई मिलावट न थी।

फिर अचानक एक दिन, वह अस्पताल के कम्पाउण्ड में घुस रहा था कि रीना की आया दौड़ती हुई आयी और उससे बोली, "डॉक्टर साहब!"

उसकी आँखों की दृष्टि अद्भुत थी। वह दृष्टि ऐसी थी मानो बोल रही हो। हृदय के भीतर क्रोध हो, प्रतिहिंसा हो, भय हो, आतंक हो, वह मानो अपना रंग लेकर उनमें स्पष्ट बाहर आ जाता था। कुन्ती की आँखों में उस दिन आतंक और आकुल प्रार्थना थी।

कृष्णेन्दु ने तब हाल ही में परीक्षा पास की थी और हाउस-सर्जन था। उसकी इच्छा थी कि विलायत जाये। दो-एक वर्ष में ही इतने रुपये इकट्ठे हो जायेंगे। हैजे के इलाज में सैलाइन इन्जेक्शन के लिए अभी से उसकी बड़ी ख्याति थी और उसमें साहस भी बहुत था। इधर उसका उपार्जन का रास्ता खुला था। जब तक पास नहीं किया था तब तक किसी और डॉक्टर के पीछे-पीछे जाना पड़ता था। अब उसे अकेले जाने का अधिकार प्राप्त हो चुका था। इस देश के अमीरों के घर में बुरा खान-पान भी है, और चाहे जो-कुछ खाने-पीने की प्रवृत्ति भी उनमें बड़ी प्रबल है। कलकत्ता शहर में मक्खियों की कमी नहीं। वैक्सीन भी लोग नहीं लेते। उन लोगों के घरों से रुपया पैदा करने के रास्ते में उसके लिए कोई बाधा नहीं। धर्मतल्ला के चेम्बर के सिवा चितपुर के इलाके में भी एक चेम्बर खोल लेगा। सलवर्सन इन्जेक्शन में भी उसका नाम है। एंग्लो-इण्डियन बिना लज्जा के इलाज कराते हैं। इस इलाके में लज्जा के कारण जो बहुत छिप-छिपाकर इलाज कराना चाहते हैं, उनके लिए चेम्बर होगा। वहाँ वह चार के बजाय आठ रुपये फीस रखेगा।

कुन्ती के मुख और आँखों की हालत देखकर वह डर गया था।

"क्या है कुन्ती ?"

कुन्ती ने भय से आँखें फैलाते हुए कहा था, "रीना रो रही है, डाक्टर साहब !"

"रो रही है ?"

"फफक-फफककर रो रही है—सवेरे से ।"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

"पता नहीं, साहब के पिता के पास से कोई चिट्ठी आयी है साहब के पास ।"

"चलो, मैं चलता हूँ !"

एक चिट्ठी उसकी ओर फेंककर रीना ने कहा था, "मैं क्या करूँ कृष्णेन्दु ?" और वह फिर फूट-फूटकर रो पड़ी थी ।

जॉनी के पिता चार्ल्स क्लेटन ने ब्राउन साहब को पत्र लिखा था । "आपका पत्र जॉन को मिल गया । आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । आप एक सच्चे अंग्रेज और क्रिश्चियन हैं। मैं भी हूँ । जॉनी को भी वही शिक्षा मिली है । इस मामले में वह अब आपको पत्र लिखने ही वाला था कि आपका पत्र मिला। जॉनी जो बात आप लोगों को सूचित करना चाहता था वह मैं ही लिखे दे रहा हूँ। परीक्षा के बिना प्रेम का ठीक मूल्य नहीं समझा जा सकता । आपकी लड़की रीना के साथ बन्धुत्व को उसने भूल से प्रेम समझ लिया था । शायद आप लोगों ने भी ऐसा समझा था । जॉन ने यहाँ आकर नौकरी कर लेने के बाद बड़े समाज में प्रवेश करके अपने लिए प्रेमपात्री खोज ली है। कर्नल रेमण्ड मेरे पुराने मित्र हैं। पॉली उन्हें जानती है । उन्हीं की लड़की है एमिली । एमिली रेमण्ड बहुत ही योग्य और सुन्दर लड़की है। ये दोनों ही एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, और शीघ्र ही वे पति-पत्नी हो जायेंगे। ए गर्ल इन डिस्ट्रेस इज ए सेक्रेड थिंग । आपकी लड़की रीना को दुख होगा, उसके लिए मेरी हार्दिक सहानुभूति स्वीकार कीजिए । समय से सब ठीक हो जायेगा ।"

कृष्णेन्दु स्तम्भित हो गया था । क्लेटन के बारे में मन में एक आघात-सा लगा था । उसके मन के भीतर एक तीव्र क्षोभ जाग उठा था । आज वह यहाँ होता तो··· । वह खुली हुई खिड़की में से कलकत्ता की

इमारतों के ऊपर आकाश की ओर ताक रहा था। क्लेटन ऐसा ढोंगी निकला!

"आई गेव हिम माई ऐवी थिंग, कृष्णेन्दु," रीना तकिये में मुख छिपाकर रो उठी।

"रीना, रोओ मत रीना! लुक ऐट मी इन माई फ़ेस रीना!"

रीना ने घूमकर उसकी ओर ताका था। मृदु उदास हँसी के साथ कहा था, "तुम अगर आज मुझे ऑथेलो की भाँति गला घोंटकर मार डालते, कृष्णेन्दु!"

एक क्षण में क्या हो गया था। एक बड़े भारी ऊँचे बाँध को काँपते-काँपते हठात् टूटकर भूमिसात् होते देखा है? ठीक उसी भाँति सब बाधा-बन्धन टूटकर गिर गये और उन्मुक्त जल-स्रोत की भाँति जीवन का सारा आवेग मानो पल-भर में उन्मुक्त हो उठा। "रीना—रीना—मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" ये कुछेक शब्द उसके मुख से निकल पड़े थे। उसने पागल की भाँति रीना के वक्ष पर गिरकर उसे बाँहों में भर लिया था।

"रीना, आई लव यू, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, रीना! रीना! माई लव। मेरी सर्वस्व रीना! मैं तुमसे प्रेम करता हूँ!"

कोमल अस्फुट स्वर में रीना ने केवल इतना कहा था, "कृष्णेन्दु! माइ कृष्णेन्दु!"

"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ रीना!"

"मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ!"

उसके बाद वे एक-दूसरे के मुख के ऊपर मुख रखकर बहुत देर तक स्तब्ध बैठे रहे थे। कुछ देर बाद कृष्णेन्दु ने कहा था, "मैं देर नहीं करना चाहता। जितनी जल्दी हो सके विवाह करना चाहता हूँ। कल आकर मैं तुम्हारे माता-पिता से बात करूँगा।"

अगले दिन कृष्णेन्दु ने ब्राउन साहब से आकर बातचीत की थी।

ब्राउन ने उसके मुँह की ओर देखकर कहा, "यू सी मिस्टर गुप्ता, मैं एक अंग्रेज हूँ। उससे भी अधिक, एक ईसाई हूँ। मेरी लड़की रीना अवश्य एंग्लो-इण्डियन है, उसके भीतर कुछ रक्त इस देश का भी है, पर वह भी

ईसाई हूँ। आजकल की भाँति कानूनी रजिस्ट्री द्वारा विवाह मुझे मंजूर नहीं। वह भी राजी नहीं होगी। वह मुझसे भी अधिक ईसाई है। तुम्हें मैं जानता हूँ। तुम कर्मठ व्यक्ति हो, साहसी और सज्जन हो। विवाह से मुझे इन्कार नहीं, पर तुम्हें ईसाई होना होगा।"

"ईसाई होना होगा!" कृष्णेन्दु स्तम्भित रह गया! यह सब उसने नहीं सोचा था।

"सोच देखो, यंग मैन! कल आकर उत्तर दे जाना। कल न हो सके तो और कुछेक दिन बाद सही।"

कृष्णेन्दु सिर झुकाकर सोचता-सोचता लौटा। रीना के कमरे के दरवाजे पर ठिठककर खड़ा हुआ। दरवाजा बन्द था। उसने पुकारा, "रीना!"

क्रन्दन-रुद्ध कण्ठ से उत्तर मिला था, "तुम जाओ, तुम जाओ। मैंने नहीं सोचा था। मैंने यह बात नहीं सोची थी।"

"रीना!"

"नहीं! नहीं! नहीं!"

वह चला आया था। सीढ़ी के मोड़ पर कुन्ती खड़ी थी, वह भी रो रही थी। कृष्णेन्दु को देखकर बोली थी, "रीना मर जायेगी, डाक्टर साहब, रीना मर जायेगी।"

पृथ्वी घूम रही थी, धरती-आकाश, घर-द्वार, मनुष्य—सब मानो चक्कर खाकर एक हुए जा रहे थे। एक असीम शून्यता से उसका मन भरा जा रहा था। सब शून्य है, सब शून्य है। रीना के बिना आज वह जीवित रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। धर्म? धर्म को तो वह नहीं मानता। सचमुच ही नहीं मानता। ईश्वर को भी नहीं मानता। वह नये युग के नये सत्य को मानता है। ईश्वर नहीं, यह सत्य ही आज उसके लिए एक मात्र सत्य है। ट्रूथ इज गॉड—सचमुच ही अगर भगवान् है, तो सब धर्म ही आज उसके निकट एक-से मिथ्या हैं। तो भी एक का सहारा लेकर उसे रहना पड़ा है। वह नहीं मानता, पर लोग उसे कहते हैं हिन्दू, वैद्य। यह उसे कागज में भी लिखना पड़ता है, इसी रूप में फार्म भरने पड़ते हैं। आज रीना उसके जीवन का सत्य है। उसके लिए वह ईसाई होगा,

ईसाई ही होगा। उसके पिता···

उसका हृदय भीतर से हाहाकार कर उठा।

पिता! उसके पिता! क्या इसे खुशी-खुशी स्वीकार नहीं कर सकेंगे? ईसाई होकर भी क्या वह उनकी सन्तान न रह सकेगा? अपना धर्म लेकर वह रहेंगे। उनके आचार-आचरण सबको जिस श्रद्धा से वह आज देखता है वैसे ही सदा देखेगा। वह तो किसी धर्म के आचरण में अपने जीवन-सत्य को नहीं खोजेगा। वह अपना धर्म खोजेगा इस चिकित्सा-विज्ञान में में, चिकित्सक जीवन के आधार-आचरण में में। तो फिर किस बात का विरोध, किस बात का संघर्ष होगा, नाममात्र को उसके ईसाई धर्म ग्रहण कर लेने में? वह तो दूर ही रहता है, पिताजी गाँव में रहते हैं। वे वृद्ध हो गये हैं। उन्हें मेरी आवश्यकता ही कितनी होती है? सेवा के लिए? सेवा वह करेगा ही। वे छुयेंगे नहीं, उसे नहीं छुयेंगे, रीना को नहीं छुयेंगे? क्यों नहीं छुयेंगे? क्यों?

आधे पागल की भांति वह बाहर चला आया। उसके अन्तर में लगाकर देह का अणु-परमाणु तक पुकार रहा था 'रीना—रीना—रीना!' रीना से अलग होकर वह जीवित नहीं रह सकता। यह उसकी देह-लालसा नहीं है। उसने बार-बार परीक्षा कर ली है। यह उससे अधिक कुछ है, बहुत अधिक कुछ।

अस्पताल से वह 'तबीयत खराब है' कहकर चला आया। छोटे बैग में कुछ मामूली चीजें रखकर गाड़ी में आ बैठा; घर पर पिता के सामने आकर खड़ा हुआ।

"अचानक तुम?" पिता चौंक उठे।

"आप ही के पास आया हूँ, आज्ञा लेने के लिए। मैं एक ईसाई एंग्लो-इण्डियन लड़की से विवाह करना चाहता हूँ।"

पिता इस बात से चौंके नहीं, चीखे-चिल्लाये भी नहीं। उसके मुख की ओर देखकर अपने सदा के अभ्यास के अनुसार शान्त भाव में ही बोले, "यह मैं जानता था।"

पिता के दोनों पैर पकड़कर कृष्णेन्दु पागल की भांति कह उठा था, "आप कह दीजिए।"

पिता ने कहा था, "तुम पागल हो। नहीं तो पिता के पैर पकड़कर निर्लज्ज की भाँति यह बात नहीं कह पाते।"

"उसके बिना मैं नहीं जी सकता।"

"तुम्हारे मर जाने पर मैं आत्म-हत्या कर लूंगा, यह बात मैं कहूँ तो झूठ होगा। मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा, कष्ट जरूर होगा, पर जीता रहूँगा। भगवान् का नाम लेकर जीता रहूँगा।"

वह चीख उठा था, "पिताजी!"

पिता ने शान्त स्वर में कहा था, "मैंने उत्तर दे दिया है कृष्णेन्दु! उस लड़की से ब्याह कर लेने पर भी मेरे लिए तुम मृत हो और लड़की को न पाने के कारण मर जाने से भी। मैंने तुमसे कहा था, 'और आगे न बढ़ना।' तुमने नहीं सुना। उसके साथ जीवन-अग्नि को साक्षी करके सात कदम अगर चल चुके हो, तो फिर तुम्हारे लिए और क्या रास्ता है?"

लम्बी सांस लेकर हँसते हुए उन्होंने गोविन्द का स्मरण किया था। और कोई बात नहीं कही, उठकर चले गये। कुछ देर खड़े रहकर कृष्णेन्दु जैसे पागल की भाँति गया था वैसे ही पागल की भाँति लौट आया—सीधा स्टेशन। कलकत्ता के रास्ते में बीच ही में उतर पड़ा था। सारी रात प्लेटफार्म पर बैठा रहा था। बहुत सवेरे फिर गाड़ी पकड़कर कलकत्ता लौट आया था।

आकर रीना की चिट्ठी मिली थी, "नहीं—नहीं—नहीं। यह तुम मत करना कृष्णेन्दु, मैं पैरों पड़ती हूँ। मैं आसनसोल जा रही हूँ। रेवरेण्ड अर्नेस्ट के पास। उसके पास शान्ति है। मैं शान्ति के लिए ही जा रही हूँ। रीना।"

तब तक कृष्णेन्दु दृढ़प्रतिज्ञ हो चुका था।

रीना को उसे पाना ही होगा। जीवन के किसी भी मूल्य पर रीना उसे चाहिए ही। धर्म-जाति-कर्म-प्रतिष्ठा—सब-कुछ दे सकता है। रीना नहीं जानती, रेवरेण्ड अर्नेस्ट उसे शान्ति न दे सकेंगे; दे ही नहीं सकते। उनका धर्म भी नहीं दे सकता। शान्ति-सुख-आनन्द-तृप्ति—सब-कुछ है उसके उसे पा लेने में। जीवन का सुख, जीवन की शान्ति जिस

प्रकार भोग में, पदार्थों में नहीं है उसी प्रकार जीवन को छोड़कर, आदर्शवाद अथवा धर्म के आचार-आचरण में, मन्त्र-जाप में, त्याग-तपस्या में भी नहीं है; केवल काया में भी नहीं है। काया को छोड़कर माया में भी नहीं है। काया-माया में मिला-जुला ही जीवन है। जीवन का काम्य यदि कहीं है तो वह जीवन में ही है। रीना, तुम जो चाहती हो वह मुझमें है, मैं जो चाहता हूँ वह तुममें है। रूप, रस, स्वाद, मन-माधुर्य, स्नेह, प्रेम, सान्त्वना यही तो जीवन की कामना है। यह सब जीवन में ही है। और कहीं नहीं है, और कहीं भी नहीं है।

वह फिर निकल पड़ा था। और अधिक देर नहीं। वह सीधा ब्राउन के पास, पाली के पास गया था, "मैंने ईसाई होने का फैसला कर लिया है, मिस्टर ब्राउन!"

ब्राउन कुछेक पल तक स्थिर भाव से मुँह की ओर ताकता रहा। फिर उठकर उसका हाथ पकड़कर बोला था, "मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ, गुप्ता!"

कृष्णेन्दु ने कहा था, "आशा करता हूँ रीना के साथ विवाह करने में आपको अब कोई आपत्ति न होगी।"

"बिलकुल नहीं। बहुत ही खुशी-खुशी स्वीकृति दूँगा।"

"ठीक है, आज ही मैं चर्च जा रहा हूँ।"

"कहो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

"मैं बहुत आभारी होऊँगा, मिस्टर ब्राऊन!"

ब्राउन की मदद से उसका धर्म-परिवर्तन बहुत ही आसानी से हो गया था। धर्म-परिवर्तन के बाद ब्राउन ने कहा था, "यू रन अप टु रीना। ब्रिंग हर बैक।"

पॉली ने कहा था, "वह रोती-रोती गयी है। अब हँसी-खुशी लौट आये।"

कृष्णेन्दु ने कहा था, "कल जाऊँगा।"

वह अपने घर लौट आया। एक दिन पहले ही उसने धर्मतल्ला में नया घर ले लिया था—रीना के साथ गृहस्थी बसाने लायक घर। जहाँ पहले रहता था वहाँ ईसाई होने के बाद वह नहीं रहना चाहता था।

पड़ोसी बड़ी निष्ठुरता से चोट पहुँचायेंगे। मन में एक प्रश्न उठा था। धर्म यदि ईश्वर देता है तो इतना अनुदार क्यों है? प्रेमहीन क्यों कर देता है मनुष्य को? एक क्षण में ही इतने दिनों का प्रेम-स्नेह सब मिट गया? सब मिट गया? ईश्वर क्या प्रेमहीन, प्रीतिहीन, स्नेहहीन है? वह क्या विद्वेषी है? वह क्या चोट पहुँचाता है? मन जाने कैसा हो गया था? धर्म को वह नहीं मानता। ईश्वर नहीं है इस बात को वह अटल सत्य समझता है। तो भी हिन्दू धर्म छोड़ ईसाई धर्म ग्रहण करके मन जाने कैसा हो गया!

सारी रात वह बरामदे में डेक चेयर पर बैठा रहा। न्यू टेस्टामेण्ट लेकर पढ़ने की कोशिश की, पर मन नहीं लगा। रीना की तस्वीर लेकर उसे निहारता बैठा रहा। मन तब फिर उत्साह से भर उठा। सारी रात रीना के साथ ब्याह के स्वप्न देखता रहा। वह उठा। आसनसोल, उसे आसनसोल जाना है—रीना के पास। सुबह की धूप उसे सोने की झलक जैसी जान पड़ी।

पृथ्वी मिट्टी है। पृथ्वी कठिन है। सूर्य का आलोक सोना नहीं है, बड़ा उत्तप्त है। मनुष्य का सबसे बड़ा सर्वनाश उसकी आत्म-प्रवंचना में है। उसने अपने साथ जितना छल किया है, उससे अधिक और किसी ने नहीं किया। मिथ्या को सत्य समझ उसके पीछे घूमते-घूमते थककर एक दिन वह मुँह के बल गिरता है और हाहाकार करता हुआ मरता है। इसी मिथ्या के मोह से वह सोने को मिट्टी कहता है। सुख का कौर फेंक उपवास द्वारा निज को पीड़ित करता है।

रीना की वह दृष्टि, वह स्तम्भित, विस्मय-भरा मुख आज भी उसे याद आता है।

आसनसोल पहुँचकर रीना उसे सामने ही मिली थी। रेवरेण्ड अर्नेस्ट के बंगले के बाहर खड़ी उदास दृष्टि से आकाश की ओर ताक रही थी।

कृष्णेन्दु ने उल्लास से उच्छ्वसित होकर उसे दूर से पुकारा था, "रीना! रीना!"

रीना चौंक गयी थी। अस्फुट स्वर में कह उठी थी, "कृष्णेन्दु!"

"हाँ रीना, मैं कल बैप्टाइज हो गया। तुम्हें लेने आया हूँ। अब और कोई बाधा नहीं है। तुम मेरी हो! यू आर माइन!"

रीना में विचित्र रूपान्तर होने लगा। कृष्णेन्दु उसका हाथ पकड़ते-पकड़ते ठिठककर रुक गया। रीना जाने कैसी हुई जा रही थी।

अपलक दृष्टि स्थिर हो गयी—उसके मुख के ऊपर गड़ी हुई, तो भी मानो उसे देखती नहीं। उसके यौवन-माधुर्य से प्रदीप्त मुख पर कौन-से शब्द लिखे दीख रहे हैं; मस्तक पर, भृकुटी पर, दोनों होंठों पर हलकी रेखाओं में मन के स्तम्भित विस्मय के साथ-साथ और भी दुर्बोध्य कुछ प्रगट होता जा रहा है। उसमें विचित्र दृढ़ता है तथा विचित्र कुछ और है। महिमा? हाँ वही।

धीरे-धीरे रीना ने कहा था, "तुम ईसाई हो गये? मेरे लिए?"

"हाँ, रीना!"

"अपने धर्म को, अपने ईश्वर को तुमने त्याग दिया? मेरे लिए?"

"रीना, क्या कह रही हो?"

"तुम समझ नहीं पा रहे हो?"

"समझ रहा हूँ। मैं तुम्हारे लिए प्राण दे सकता हूँ रीना!"

"लाइफ़ इज़ मॉर्टल। प्राण नश्वर हैं। एक दिन वह जायेंगे ही। असंख्य प्राण दिन-रात जा रहे हैं कृष्णेन्दु, जान-बूझकर आदमी मरता है, जहर खाता है, गले में फाँसी लगाता है, आदमी आदमी को मारकर स्वयं मरता है। कृष्णेन्दु, उस दिन यहाँ से थोड़ी ही दूर पर हजारी बाग में एक आदमी शेर को मारने के प्रयत्न में स्वयं शेर के हाथों मारा गया। जॉन क्लेटन शायद किसी युद्ध में गोली के सामने खड़ा होकर प्राण देगा। मजबूर होकर देगा। इस भाँति प्राण देना नया है कृष्णेन्दु! मुझे प्रभु ने प्राण दिये हैं, ईश्वर के लिए, धर्म के लिए। मेरे लिए तुमने उसी धर्म को, अपने विश्वास के ईश्वर को छोड़ दिया कृष्णेन्दु! फ़ॉर ए गर्ल? फ़ॉर दीज़ आइज़ ऑफ़ माइन व्हिच यू सो एडोर··!"

पहले तो कृष्णेन्दु रीना के इस आकस्मिक आक्रमण से विचलित हो गया था। इस रीना को उसने आज पहली बार देखा। धर्मान्धता में उग्र, पागल! उसने अपने को संवरण करते हुए उसे रोककर [illegible] था,

"डोण्ट बी सिली, रीना !"

"सिली ?" प्रदीप्त हो उठी थी रीना ।

कृष्णेन्दु ने भी दृढ़ स्वर में कहा था, "येस ! सिली । क्योंकि रीना, मनुष्य किसी एक धर्म का अवलम्बन करता है, उसका अतिक्रमण करके सार्वजनीन मानव-धर्म में दीक्षित होने के लिए। इस एक धर्म की कट्टरता और बन्धन में बन्दी की भांति बंधे रहने के लिए नहीं ।"

"येस । मानती हूं । सुना है, पर समझ नहीं पाती । नहीं समझ पाती । इतना कह सकती हूं कि जो लोग वहां पहुंचने की कोशिश करते हैं वे किसी एक व्यक्ति को पाने के लिए ऐसी तपस्या नहीं करते । वे तपस्या करते हैं सब मनुष्यों को आत्मीय रूप में प्राप्त करने के लिए । एक नारी के आगे अपने-आपको समर्पण नहीं करते कृष्णेन्दु, सब लोगों के बीच अपने-आपको विलीन कर देते हैं, ढाल देते हैं । ईश्वर बड़ा पवित्र है, बड़ा मूल्यवान है । उसका तुमने परित्याग कर दिया कृष्णेन्दु ? मेरे लिए ? नहीं, नहीं ।"

"यह तुम क्या कह रही हो, रीना ?"

रीना फिर स्थिर दृष्टि से उसकी ओर ताकती रही ।

"रीना !"

रीना ने कहा, "नहीं, मेरे लिए नहीं । जिस सौन्दर्य से तुम प्रेम करते हो उसी सौन्दर्यमयी एक नारी के लिए ।" उसका गला रुंधता जा रहा था । इस बार आंखों से जल बह निकला ।

कृष्णेन्दु ने व्याकुल होकर उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, 'रीना···"

"छोड़ दो । लीव मी ! डोण्ट टच मी । प्लीज़···प्लीज़ !"

"रीना !"

निरुच्छ्वास क्रन्दन के साथ रीना ने कहा था, "तुम भयंकर हो, कृष्णेन्दु, तुम भयंकर हो । एक नारी के लिए तुम अपने ईश्वर को छोड़ सकते हो । कृष्णेन्दु, मुझसे सुन्दर नारियां बहुत हैं । तो फिर उनमें से किसी को जब देखोगे, सम्पर्क में आओगे, उस दिन तुम मुझे भी तुच्छ वस्तु की भांति छोड़कर चले आओगे । ईश्वर, जिस ईश्वर को तुम इतने दिन अपना एकान्त आत्मीय मानते आये हो, जिसे प्यार करते रहे हो···!

ओह ! तुम जाओ ! तुम जाओ ! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। पर नहीं, विवाह मैं नहीं कर सकूँगी। तुम भयंकर हो !"

कृष्णेन्दु पत्थर हो गया ! स्थिर स्तब्ध भाव से खड़ा रहा। रीना ये शब्द कहकर ही बंगले के भीतर चली गयी थी। बरामदे में वृद्ध पादरी खड़े हुए थे। शायद वे इन दोनों की बातचीत के बीच नहीं आना चाहते थे। अब वे उतर आये।

"यंग मैन !"

"गुड मॉनिंग, फ़ादर !"

"गुड मॉनिंग। बैठोगे—आराम करोगे ?"

"थैंक यू, फादर ! बहुत-बहुत धन्यवाद ! इसकी ज़रूरत नहीं। मैं नैक्स्ट ट्रेन पकड़ना चाहता हूँ।"

वह बाहर निकलकर चला आया था।

वही रीना ब्राउन ! जिसने इसके बाद वक्ष पर क्रॉस लटका लिया था और जो केवल होली बाइबिल ही पढ़ती थी, वही रीना ब्राउन ! जिस रीना ब्राउन ने जीवन-भर अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की थी, वही रीना ब्राउन ! उसने उन्मादिनी की भाँति शराब और व्यभिचार में अपने-आपको बहा दिया है। अमरीकी अफसर के जीवन के अरमान पूरा कर लेने के उच्छृंखल उल्लास में आत्म-समर्पण करके भटक रही है, बह रही है। शायद स्मृति भी नष्ट हो गयी है।

'अथेलो' की बात भी उसके मन से मिट गयी है। कहने से भी याद नहीं आती, भौंहें चढ़ाकर देखती रहती है, अन्तस्तल से सहन न कर सकने के इंगित तीखी दृष्टि में झलक उठते हैं।

और कृष्णेन्दु ? उसने कृष्णस्वामी होकर इस जंगली इलाके में रोगियों की चिकित्सा और कुष्ठ-रोगियों की सेवा में अपने-आपको विलीन कर दिया। रीना ने कहा था, "धर्म-विशेष को छोड़कर मनुष्य निर्विशेष मानव-धर्म में पहुँच गया है। मानव एक व्यक्ति के लिए नहीं, एक नारी अथवा एक पुरुष को पाने के लिए नहीं, सब मनुष्यों को आत्मीय रूप में पाने के लिए है।"

अब वह केवल रेवरेंड कृष्णेन्दु गुप्त नहीं है। वह ईसाई है, वह

भारतीय संन्यासी है, वह रेवरड कृष्णस्वामी हैं। जिस ईश्वर की उपेक्षा करने के कारण रीना को उससे भय हुआ था, उस ईश्वर को पाना ही होगा। उसी को उसने खोजा है। उसका पता उसे मिल गया है।

मनुष्य की भौतिक देह में उन्हें उसने तपस्यारत देखा है।

चिद्विभ्रान्तिकारी महासत्ता। मनुष्य विराट् महासत्ता की दीक्षा लेगा। शुद्ध पवित्र ममता से कोमल, सत्य से निर्मल और प्रेम से परिशुद्ध अहिंसक। इस युद्ध के समय भी वह तपस्या को डुबाकर समाप्त नहीं कर सका। तापसी की भाँति वह उसे निगलने की कोशिश करके भी निगल नहीं सकी।

विचित्र विस्मय यह है कि उसे उसी ईश्वर की खोज में लगा देखकर रीना को आज भय हुआ, वह संकुचित हो उठी, हिंस्र हो उठी—मनुष्य को देखकर सरीसृप की भाँति।

आश्चर्य है, वह निर्मल आलोक-सन्धानी रीना—आज इस युद्ध में जो उन्मादिनी तामसी प्रकट हो रही है, जो सारी तपस्या को भ्रष्ट करना चाहती है, ईश्वर की हत्या करना चाहती है—उसी तामसी की क्रीतदासी है रीना, क्रीड़ा-संगिनी है, प्रेतनी है। वल्कि शायद उसी की प्रतीक है। हे भगवान्! ओह गॉड!

रीना—अचानक जीप की गड़गड़ाहट से उनका विचार-सूत्र टूट गया। जीप! वह त्रस्त हो उठे। जीप के साथ रीना का अस्तित्व मानो मन के भीतर जुड़ गया है—विजली की चमक के साथ मेघ-गर्जन की भाँति। वह उठ खड़े हुए। अचानक नजर पड़ी कि बँगले के मन्दिर के छोर पर फौजी पोशाक पहने कोई घूम रहा है, बाइनॉकुलर से कुछ देख रहा है। प्रमोद-भ्रमण और उल्लास, उच्छृंखलता और उन्मत्तता। तामसी रीना साथ है। निश्चय। भयार्त्त की भाँति कृष्णस्वामी चल पड़े—पक्की सड़क पर नहीं, खेतों-खेतों आकर जंगली रास्ते पकड़ते हुए।

छः

कृष्णस्वामी जंगल में होकर चले जा रहे थे। तेज चाल से ही चल रहे थे। बहुत देर हो गयी है। कोई सात बजे होंगे। मरीज आकर बैठे होंगे। बीमार इन्सान। उनका बस भगवान् ही है। ब्लैसिड आर दि पुअर इन स्पिरिट : फॉर देयर इज दि किंगडम ऑफ हैवेन। वे ही भक्त हैं। "नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।" भक्तों के हृदय में वास करता हूँ। वे लोग अशिक्षित होकर भी भगवान् की भक्ति करते हैं। अँधेरे में रहकर भी वे आलोक की कामना करते हैं। वे जीवन का प्रकाश बुझाकर अँधेरा नहीं करते। प्रकाश के अभाव में ही प्रकाश-प्रकाश कहकर रोते हैं। उनके भीतर ईश्वर की तपस्या है।

जंगल में कोई फूल खिला है। गन्ध उड़ रही है। पक्षी कलरव कर रहे हैं। सूरज आज बादलों के पीछे छिपा हुआ है। वनभूमि वर्षा की आशा में उन्मुख है। कृष्णस्वामी प्रत्येक पत्ते के भीतर उद्भिद प्राणों की व्याकुल प्रत्याशा का अनुभव करते हैं।

"हैलो, डू यू हियर? हैलो?"

कृष्णस्वामी चौंक उठे। नारी का कण्ठ-स्वर, रीना ब्राउन की आवाज इस जंगल में? इतनी सवेरे? इधर-उधर ताकने पर कृष्णस्वामी ने देखा कि रीना ब्राउन जंगल के भीतर एक खुली जगह में अकेले बड़े शाल वृक्ष के तने का सहारा लेकर बैठी है। पास में एक फ्लास्क रखा है, हाथ में सिगरेट है। पोशाक वही है।

कृष्णस्वामी ने सिर्फ कहा, "येस?"

"कम हियर, सिट डाउन। हैव ए ड्रिन्क, ए स्मोक।"

"आई डोण्ट ड्रिन्क, आई डोण्ट स्मोक। थेन्क यू।"

अब रीना चीख उठी, "कृष्णेन्दु!"

कृष्णस्वामी ने हँसकर कहा, "मेरे रोगी बैठे होंगे रीना, मैं चलूँ। मुझे क्षमा करो।" उसके बाद फिर बोले, "तुमने पहचान लिया रीना? कल सोचा था कि तुम्हारी स्मृति भी क्षीण हो गयी है।"

"हो गयी है। बहुत-कुछ हो गयी है। पर 'ओथेलो' नहीं भूल सकी।

ी लुक ऐट युग्रर ग्राइज, लुक इन माई फ़ेस' कहकर जैसे ही तुमने
ोर देखा, तभी मैं तुम्हारी दृष्टि को पहचान गयी थी, पर···।"
रीना सिगरेट का कश खींचने लगी। बहुत शराब पीने के कारण
ी उँगलियाँ काँप रही थीं।

"मैं चलूं रीना !"

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? यह कैसी पोशाक है ? यह क्या चेहरा
ा रखा है ?"

"मैं क्रिश्चियन संन्यासी हूँ रीना ! भारतवर्ष का संन्यासी ! संन्यासी
कर जो किया जाता है, वही कर रहा हूँ। ईश्वर को खोज रहा हूँ।
वश्य ही, मनुष्य की सेवा में से। मैं डाक्टर हूँ, बीमार होने पर उनका
लाज करता हूँ। पर असली इलाज कुष्ठ-रोगियों की चिकित्सा का ही
ह।"

रीना के हाथ से सिगरेट गिर पड़ी। एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोली,
"जीवन नष्ट कर रहे हो कृष्णेन्दु ! ग्राइ ऐम दि कॉज, ग्राइ ऐम दि
कॉज···"

"नहीं, मेरा जीवन नष्ट नहीं हुआ।"

"ग्राइ ऐम ग्लैड।"

"मैं चलूं। गुड बाई।"

"एक मिनट ! मेरी कोई बात नहीं पूछोगे ?"

"नहीं, तुम्हारा हाल तो तुम्हारे रूप से ही प्रकट है रीना ! ग्रौर
क्या पूछूं ?"

"ईश्वर नहीं है कृष्णेन्दु ! मैंने तुमसे ग़लत कहा था। दुख पहुंचाया
था। ईश्वर नहीं है।"

रीना ब्राउन उठकर खड़ी हो गयी। "मैं कहती हूँ, ईश्वर नहीं है।
नथिंग इज सिन—पाप नहीं, ईश्वर नहीं।"

उसका कण्ठ-स्वर तीव्र हो उठा।

"तुम यह सब छोड़ दो कृष्णेन्दु ! जीवन को नष्ट मत करो। लौट
जाग्रो, नया जीवन ग्रारम्भ करो।"

"तुम्हारे साथ ?"

रीना ब्राउन 'ही-ही' करके हँस उठी। तीव्र तीक्ष्ण वीभत्स हँसी। हँसी रोककर बोली, "मेरा दाम बहुत है कृष्णेन्दु ! तुम्हारा दाम मेरे लिए उस दिन से भी कम। उस दिन भय हुआ था। आज करुणा होती है। हार्मलेस, होमाइल, वर्थलेस, आस्तिक, ईश्वर-खोजी तुम, निर्बोध तुम, मूर्ख तुम, मेरी घृणा के भी पात्र नहीं हो, करुणा के पात्र !"

कृष्णस्वामी ने और कोई बात नहीं कही, आगे बढ़ गये।

पीछे से तीव्र चीत्कार करके रीना बोली, "सुनो मेरी बात। सुनो। यू मस्ट लीव दिस प्लेस। यहाँ तुम नहीं रह सकोगे। चले जाओ। बहुत दूर।"

कृष्णस्वामी घूमकर खड़े हो गये।

रीना की ऐसी तीव्र उग्र मूर्ति उन्होंने कभी नहीं देखी थी। उसकी घनी काली बड़ी-बड़ी बरौनियों की स्वप्निल वेष्टनी के भीतर जड़ी हुई काली आँखें ऐसी ज्वलन्त हो सकती हैं, यह उनके लिए कल्पनातीत था। उसकी दोनों आँखें जल रही थीं, भकभक कर रही थीं।

रीना ने कहा, "तुम्हारा वह बंगला मुझे चाहिए। मैं वहाँ रहूँगी। बहुत दिन रहूँगी। तुम्हें मैं सहन नहीं कर सकती। तुम्हें यह इलाका छोड़कर चले जाना होगा। यू मस्ट। नहीं तो मैं उन्हें भड़का दूँगी। वे लोग तुम्हें, वे लोग क्यों, मैं ही तुम्हें गोली मार दूँगी।"

कृष्णस्वामी कोई उत्तर न देकर चुपचाप फिर चल पड़े। फिर नहीं लौटे। भय उन्हें हुआ—अपने लिए नहीं, उस झुमकी के लिए और सिन्धु के लिए।

रीना ब्राउन प्रेतिनी की भाँति पेड़ के नीचे खड़ी शायद निष्फल आक्रोश में उबल रही है, शायद फ्लास्क खोलकर शराब पी रही है, यह अनुमान करने में उन्हें तनिक भी विलम्ब नहीं हुआ।

उन्होंने तय किया कि झुमकी और सिन्धु गाँव के भीतर जाकर रहेंगी। लालसिंह उनकी रक्षा करेगा। वह भी चला जायेगा। वह अकेले रहेंगे।

उन्हें कोई भय नहीं। भय कृष्णेन्दु को कभी भी नहीं रहा। कृष्णस्वामी होकर ईश्वर को खोजते फिरते हैं। उन्हें मृत्यु से क्या भय होगा?

मृत्यु। अन्याय का सामना करते हुए वे मरेंगे। प्रेतिनी रीना ब्राउन भय से वे भाग निकलेंगे ?

रात के नौ बजे होंगे। वह बैठे हुए थे। हर जीप अथवा मोटर की वाज़ से थोड़े सजग हो उठते थे। बीच-बीच में दीर्घ निस्तब्धता के च मेघाच्छन्न आकाश की ओर देखकर सोचने लगते थे। आकाश वर्षा वादलों से भर उठा है। आज शायद बारिश होगी। क्षितिज पर हल्की-सी बिजली चमक रही है। पर वह यह बात नहीं सोच रहे थे। सोच रहे थे निष्कलुष पवित्रता की प्रतिमूर्ति रीना की बात। प्रेतिनी रीना ब्राउन की बात। प्रेतिनी नहीं, साक्षात् तामसी हो उठी है आज रीना ब्राउन !

रात तामसी नहीं है। रात के अँधेरे में जीवन के भीतर से ही तामसी निकलकर आती है। भौतिक जगत् में विक्षोभ के कारण बिना, अनियम हुए बिना, वह नहीं जागती। विक्षोभ मिटाते ही वह शान्त हो जाती है, स्थिर हो जाती है। जीवन के भीतर ही वह सदा जागृत है, चेतना के भीतर ही वह दिन-रात सक्रिय है। सुप्ति के बीच वह एक दुःस्वप्न है; अवकाश-विश्राम के बीच वह कुटिल कल्पना है। वह मनुष्य को शान्ति के रास्ते पर, सुख के रास्ते पर, चैतन्य के रास्ते में नहीं बढ़ने देगी। निष्ठुर आक्रोश से अजगर की भाँति पीछे से खींचती रहती है, निगलना चाहती है। एक बार पकड़ लेने पर निगले बिना शान्त नहीं होगी।

उस समय प्रायः आधी रात बीत चुकी होगी। कृष्णस्वामी को झपकी-सी आ गयी थी। टॉर्च की रोशनी में झपकी टूट गयी। वे उठकर बैठ गये।

"कौन ?"

दूर क्षितिज पर बिजली चमक उठी। उस क्षणिक प्रकाश में उन्हों देखा, हाँ सचमुच वही है। दीर्घांगी नारी-मूर्ति बढ़ी आ रही है। थोड़ी थोड़ी लड़खड़ा रही है। रीना ब्राउन ने उत्तर दिया, "मैं ! देखती हूँ मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो !"

"कर रहा हूँ। सिर्फ तुम्हारी ही नहीं, तुम्हारे साथ और भी ल की प्रतीक्षा कर रहा था, जो लोग मुझे डराते; यह घर छोड़कर

जाने के लिए कहते। मैं समझ गया हूँ कि इस मकान की चाहे इतनी जरूरत तुम्हें न हो, पर उससे भी अधिक तुम्हें मुझे यहाँ से भगाने की जरूरत है। तुम्हें चैन नहीं मिल रहा है। पर क्यों?"

एक कुरसी पर बैठकर रीना बोली, "यू मस्ट गो अवे फ्रॉम हियर। तुम्हें जाना ही पड़ेगा।"

"नो। आई मस्ट नॉट गो। मैं ईश्वर की साधना में शपथ लेकर यहाँ आया हूँ।"

"स्टाप!" रीना चीख उठी। आसमान के बादलों की ओर देखकर वह बोली, "सब झूठ है। ईश्वर नहीं है। कभी था या नहीं, मैं नहीं जानती। था भी तो वह मर चुका है। इन्सान ने उसे मार डाला है। मेरी ओर देखो। मैंने उसे मार डाला है। आदिम युग के मनुष्य की भाँति उसके शव को ममी की भाँति चिपकाकर मत बैठो। जो मर चुका है वह बच नहीं सकता।"

"तुम आज चाहे जो हो गयी हो रीना, तुम ईसाई हो।"

"नहीं, नहीं, नहीं। मैं ईसाई नहीं हूँ।"

"रीना!"

"कभी नहीं थी। अपना क्रॉस, अपनी बाइबिल मैं फेंक चुकी हूँ। मैं कभी बैप्टाइज नहीं हुई। मेरे पिता ने मुझे कभी दीक्षा नहीं लेने दी। मेरा कोई धर्म नहीं। पिता चार्ल्स ब्राउन अग्रेज थे, धर्म से ईसाई। पर अत्याचारी जमींदार। मेरी माँ हीदेन, हिन्दुओं से भी जंगली अछूत जाति की स्त्री। वासना पूरी करने के लिए पिता ने उसको उप-पत्नी के रूप में रखा था, उसको खरीद लिया था। मैं उन्हीं की जारज सन्तान हूँ। कृष्णेन्दु, वही आया, वही कुन्ती मेरी माँ थी।"

बिजली की चमक के साथ मेघ-गर्जन ठीक उसी क्षण रीना की बात की प्रतिध्वनि की भाँति गूँज उठा। कृष्णेन्दु वज्राहत की भाँति स्तम्भित हो गया। कोई बात, एक विस्मयसूचक मर्मान्तक ध्वनि तक उनके मुँह से नहीं निकली। रीना हँस उठी। अचानक हँसी रोककर कन्धे पर लटके हुए फ्लास्क से थोड़ी-सी शराब पीकर बोली, "और सुनोगे? और भी बहुत है। मेरी वह माँ कुन्ती, वह उसी मेदिनीपुर में, जहाँ ब्राउन की

ज़मींदारी थी, वहीं के जंगली इलाके के एक पुराने क्षत्रिय ठेकेदार की रखैल की, एक ऐसी ही जंगली स्त्री की, लड़की थी। ठेकेदार की रखैल एक ब्राह्मण के व्यभिचार का फल थी। और भी सुनोगे ? काली औरतों के रक्त के साथ बहुत-सा गोरे रंग के लोगों का रक्त भी मिल गया था। सबके अन्त में गोरे अंग्रेज का रंग ! यह सारा मेरे भीतर प्रकट हुआ। काले बाल, बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें, काला रंग। रंग-रूप मेरा जो भी हो, मेरा क्या कोई धर्म है, मेरा क्या कोई ईश्वर है ? ईश्वर की, धर्म की मैं जीवन्त समाधि हूँ। मृत ईश्वर मेरे भीतर सड़ रहा है। बदबू उठ रही है।"

अचानक रीना शान्त हो गयी। कुछ देर स्तब्ध भाव से ही बैठी रही।

कृष्णस्वामी को लगा कि उसकी आँखें भर आयी हैं। उन्होंने कहा, "तुम रो रही हो ?"

"रो रही हूँ ? लुक," उसने टार्च जलाकर अपने मुख पर डाला। नहीं, रीना रोयी नहीं थी। उसकी दोनों आँखें नशे से लाल थीं। दृष्टि असहनीय तीव्र थी।

"मेरी आँखों का पानी बहुत दिन पहले सूख चुका है। मरुभूमि हो गयी हैं वे। बहुत रोने से पानी खत्म हो चुका है।"

धीरे-धीरे रीना ने कहा, "सब तुम्हारे कारण कृष्णेन्दु, यू आर दि कॉज, यू आर दि कॉज। आज खुल्लम-खुल्ला तुम्हारा नाम लेकर ही कहती हूँ, यू आर दि कॉज।" रीना थोड़ा हँसी। शायद 'ऑथेलो' के उस दृश्य के अभिनय की सुखद स्मृति ने क्षण-भर के लिए थोड़ी-सी मधुरता का संचार कर दिया।

"तुम्हारे-जैसे प्रिय व्यक्ति को लौटा दिया था, केवल इसलिए कि तुम ईश्वर में, धर्म में हृदय से विश्वास नहीं करते थे। कल तुम्हारे साथ भेंट होने के बाद से ही सोच रही हूँ कि उस दिन स्वयं को छोड़कर अपने ईश्वर को, अपने सारे धर्म को तुम्हें दे दिया था। मेरे अनजान में ही तुम मेरा सब-कुछ छीन लाये थे।"

फिर कुछ देर शान्त रहकर बोली, "आसनसोल से लौट आयी।

ईश्वर और धर्म से मुझे इतना प्रेम था कृष्णेन्दु, कि अन्तर में हाहाकार उठने पर भी मैं रोयी नहीं। संकल्प किया था कि सारा जीवन 'नन' होकर काट दूँगी। ब्राउन साहब ने···उसे पिता कहते मुझे घृणा होती है कृष्णेन्दु, तुम्हारे बारे में पूछा। 'वह कहाँ है?' मैंने कहा, 'मैंने उसे अस्वीकार कर दिया।' उसने पूछा, 'क्यों? वह ईसाई हो गया है, तुम यह नहीं जानतीं? उसने तुम्हें नहीं बताया?' मैंने कहा, 'बताया है।' उसने पूछा, 'तो फिर?' मैंने तुमने जो-कुछ कहा था सब उसे बता दिया। कृष्णेन्दु, एक पल में उसका मुखौटा उतर गया। चीखकर बोला, 'बँस्टर्ड··· बिच!' उसके बाद अनर्गल, गन्दी अश्लील गाली-गलौज। बोला, 'क्रिश्चियन यू क्रिश्चियन? डू यू नो, वह हीदेन कुत्ती, बल्कि हीदेन लोगों से भी अधिक घृणित—लगातार तीन पीढ़ियों से बँस्टर्ड—वही तेरी माँ है?' बोला, 'जिन्दगी में पल-भर की दुर्बलता ने मुझसे इतनी बड़ी ग़लती करा दी। तेरा गोरा रंग देखकर मैं भूल गया। तुझे बचाकर रखा।'

रीना ने एक सिगरेट सुलगा ली। उसके बाद फिर बात शुरू करते ही ठिठककर आकाश की ओर देखती हुई बोली, 'इट्स रेनिंग। पानी बरसने लगा।" हँसकर बोली, "मेरी कुन्ती माँ कहा करती थी, मरे मेह आ गया!"

कई-एक बड़ी-बड़ी बूँदें कृष्णस्वामी के माथे पर, हाथ पर आकर गिरीं। दूर से साँ-साँ की आवाज उठ रही थी। बरसात का जलप्लावन। मृदु मन्द हवा बह रही है।

कृष्णस्वामी ने कहा, "भीतर चलो रीना!"

"कमरे के भीतर? चलो! पर उसकी जरूरत ही क्या है? मैं चलती हूँ। बस इतना कहे जाती हूँ, तुमसे कह चुकी हूँ और फिर कह रही हूँ, यहाँ से तुम्हें चले जाना होगा। मुझे चैन नहीं मिल रहा है। यू मस्ट।"

"वह सब होगा रीना! पर इस बारिश में, रात के अँधेरे में, कहाँ जाओगी?"

"भीगती-भीगती चली जाऊँगी। मुसीबत मुझे अच्छी लगती है, कृष्णेन्दु! पहले आँधी-पानी से डर लगता था। अब आनन्द मिलता है।

आई फ़ियर नो डार्कनेस, आई फ़ियर नो स्टॉर्म, आई फ़ियर नो थण्डर, लेट मी गो। वट यू मस्ट लीव दिस प्लेस।"

"नहीं, नहीं, बैठो!"

कमरे के भीतर आकर मद्धिम लालटेन को कृष्णस्वामी ने ऊँचा किया।

"नो," कहती हुई रीना ने आकर रोशनी को कम करके बुझा दिया। बत्ती गिर गयी। "अँधेरा···अँधेरा अच्छा है। जानते हो, ब्राउन से सारी बात सुनने के बाद तीन दिन तक मैं अँधेरे में पड़ी-पड़ी रोती रही थी। दरवाज़े, खिड़कियाँ बन्द कर ली थीं। रोशनी नहीं जलायी थी। अपनी ओर ताकने में मुझे भय होता था। और मेरे साथ-साथ लगातार रोती थी मेरी माँ कुन्ती। ब्राउन से मैं घृणा करती हूँ। कुन्ती से घृणा नहीं कर सकती। हतभागिनी! ब्राउन के डर से भयभीत मूक जन्तु की भाँति आजीवन मेरी आया बनकर रही, किसी दिन मुझे बेटी कहकर एक बूँद स्नेह-श्रद्धा मुझसे न माँग सकी। अँधेरे में हम दोनों रोती थीं। अपने कलंक के भय से—मेरी माता के परिचय की बदनामी बाद में उसे लगे, मुझे लगे, इस लज्जा से—ब्राउन ने मुझे ईसाई धर्म में दीक्षित तक न किया था. मुझे नर्सरी में भेज दिया। किन्तु मेरी माँ के पास तब भी रूप-यौवन था। उस रूप में एक वन्य आकर्षण था। विचित्र था वह आकर्षण। मेरे बालों में, आँखों में, पलकों में उसकी छाप मौजूद है। उसे भी ब्राउन ने निकाला नहीं। उसे तो उसने खरीद ही लिया था। उसका भोग करता था, बर्बर की भाँति। क्रिश्चियन! क्राइस्ट! सन ऑफ़ गॉड वह थे, क्रॉस पर बिंधकर मारे गये थे। उन्हें रोमन साम्राज्यवादियों ने मार डाला था। लोगों का विश्वास है कि वह फिर से जीवित हुए थे। हुए भी हों तो साम्राज्यवादी अभी मरे नहीं हैं। वे उन्हें नित्य क्रॉस पर लटकाकर मार रहे हैं।"

रीना हँसी। हँसकर बोली, "पर ये लोग एक जगह महान् हैं। स्टेटन ने मुझसे ब्याह करना चाहा था, पर इस शुद्ध अंग्रेज जमींदार ने अपनी सम्भ्रान्तता कायम रखते हुए मेरा सारा हाल उसे बता दिया था। स्टेटन के पिता ने ब्राउन को धन्यवाद दिया था। तुम हीदेन हो इसलिए

तुम्हें सब बात बताने की ज़रूरत भी उसने नहीं समझी। मैं ईसाई नहीं हूँ, तो भी तुम्हें ईसाई बनाये बिना मेरे साथ विवाह करने की अनुमति नहीं दी। मैं हीदेन के गर्भ से उत्पन्न लड़की हूँ, मुझे खेलने के बहाने बाईबिल और क्रॉस दिया था।

बाहर अब मूसलाधार वर्षा होने लगी थी। चारों ओर के विशाल सुदीर्घ शालवन के पत्तों पर पानी गिरने के शब्द में चारों ओर मेघ-मल्लार-जैसा संगीत बज उठा था—विचित्र भरता हुआ-सा संगीत। संसार के और सब शब्द डूब गये थे, यहाँ तक कि जीप अथवा मोटर की आवाज़ भी अच्छी तरह नहीं सुनायी पड़ती थी।

अचानक रीना उठ पड़ी। वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गयी। खिड़की में से बाहर की ओर ताकती हुई रुक-रुककर कहने लगी, "कितनी सुन्दर रात है! लगता है इस संसार में तुम्हारे और मेरे सिवा और कोई नहीं है, कुछ नहीं है।"

कृष्णस्वामी स्तब्ध होकर रीना की कहानी सुनते-सुनते वैसे ही स्तब्ध बैठे थे। वेदना और करुणा से उनका अन्तर अवसन्न हो गया था। बाहर की उस सजल हवा के प्रवाह की भाँति हाय-हाय कर रहा था। वैसे ही रो भी रहा था। हे भगवान्, तुम उसके अन्तर में फिर से जाग उठो! उसके हृदय की समाधि को तोड़कर जाग उठो! अपने स्पर्श से, कुष्ठ रोगी के निरोग होने की भाँति ही कठिन आघात से विकृत व्याधिग्रस्त अन्तर को स्वस्थ सुन्दर बना दो! रीना सुन्दर है, अब भी सुन्दर है। आज भी उसके सर्वांग में वही माधुरी है, आज भी उसकी दीर्घ घनी काली पलकों में जड़ी हुई दोनों काली आँखें मानसरोवर की भाँति स्वच्छ और गम्भीर हैं। आज भी उसने आकाश की नील आभा को प्रतिबिम्बित करने की शक्ति नहीं खोयी है। तुम बादलों को काट दो, हटा दो। हे ईश्वर!

धीरे-धीरे आगे आकर उन्होंने कहा, "रीना, तुमने बराबर ईश्वर की समाधि रचने की चेष्टा की है, ईश्वर-विरोधी शक्ति की। आलोक और कालिमा। भला और बुरा। पर बार-बार बुराई हारी है और भलाई जीती है। ईश्वर उस समाधि को तोड़कर फिर से आविर्भूत हुए हैं। हाय रीना, तुमने बहुत दुख पाया है, बहुत वेदना झेली है। मेरा दुर्भाग्य है कि

मैं उस समय दूर था। मुझे पता चलता तो ये दुख तुम्हें न सहने देता। कहता—जीवन, वह तो ईश्वर का अंश है। सृष्टि के भीतर मनुष्य के जीवन द्वारा ही भगवान् बात करते हैं, हँसते हैं, रोते हैं, प्यार करते हैं, स्वयं अपनी बलि देते हैं। विश्व के आगे अपने-आपको समर्पित करते हैं, मनुष्य के भीतर ही वे प्रत्यक्ष हैं। मनुष्य के भीतर जीवन, वह चाहे जहाँ पैदा क्यों न हो, सब जगह पवित्र है। ब्राह्मण नहीं, चण्डाल नहीं, ईसाई नहीं, हीदेन नहीं, धनी नहीं, दरिद्र नहीं। गोत्र, कुल, इतिहास का परिचय हो या न हो, मनुष्य सदा एक-सा पवित्र है, उसके भीतर से ईश्वर सदा एक-सी महिमा में आत्माभिव्यक्ति के लिए व्याकुल रहते हैं। तुम्हारे साथ मैं परम आनन्द से यह तपस्या करता।"

फिर पीठ पर हाथ फेरकर बोले, "जिस ईश्वर को तुम समाधिस्थ कर दिया बताती हो, वह फिर उठेंगे। तुम शान्त हो जाओ!"

"डोण्ट टच मी प्लीज़! डोण्ट। डोण्ट, कृष्णेन्दु! मुझे मत छुओ!" रीना चीख उठी। वह जैसे कोई आर्त्तनाद था।

"पीस एण्ड बी स्टिल, रीना!" ऑथेलो की याद दिलाकर कृष्ण-स्वामी ने उसके हृदय में स्वप्नावेश की स्निग्धता का संचार करने की चेष्टा की।

पर रीना अधीर कण्ठ से बोली, "मेरे लिए शान्ति नहीं। मैं स्थिर नहीं हो सकूँगी कृष्णेन्दु! तुम नहीं जानते। उन सबके ऊपर किसी तरह भी मेरा कोई अधिकार नहीं बचा है। मेरा अन्तर सड़ गया है। मेरे ऊपर शैतान ने कब्जा कर लिया है। बहुत कोशिश कर चुकी हूँ, पर कोई बस नहीं चलता। असह्य क्रोध से मेरा हृदय पागल हो उठता है, शरीर में प्रचण्ड विक्षेप जाग उठता है। मुझसे रोया नहीं जाता। ब्राउन के ऊपर क्रोध और आक्रोश से मैं बाहर निकल पड़ी थी। बाइबिल को फेंक दिया था। तुमसे भेंट हो जाने के भय से एक जघन्य मोहल्ले में जा छिपी थी। साथ में मेरी माँ थी। वह भी ठीक इस रात जैसा ही था—अन्धकारपूर्ण, मूक! पाप करो, पुण्य करो, किसी का कोई प्रतिवाद नहीं, नियन्त्रण नहीं, वरन् नीरव प्रश्रय है। काले कपड़े की कालिमा में सारे अंग ढक जाते हैं, उजागर नहीं होने पाते। मैंने यह जीवन रिपन स्ट्रीट के

इलाके में शुरू किया, 'नाइट डेन' का जीवन, फिटनों के कोचवान, डेन के वेयर जिसके परिचालक थे। वहाँ से एक होटल में जा पड़ी। होटल से इस लड़ाई के जमाने में देह बेचती फिर रही हूँ। उन लोगों ने मुझे बाँध रखा है।"

"रीना!" कृष्णस्वामी सिहर उठे।

"नहीं। किसी को दोष नहीं देती। सब मेरे कर्मों का फल है। मेरा अन्तर मर गया है कृष्णेन्दु; वहीं कब्र के नीचे तुम भी दब गये हो, ईश्वर दब गया है, ईश्वर का पुत्र दब गया है। मैंने अपने हाथों दबा दिया है।"

"रीना!" कृष्णस्वामी ने उसका हाथ अपनी ओर खींच लिया।

"मुझे चाहते हो? प्रेम नहीं, देह दे सकती हूँ मैं। प्राण नहीं, मन नहीं। मन चला गया। प्रेम भी नहीं है। चाहते हो तुम?"

कृष्णस्वामी ने हाथ छोड़ दिया। बोले, "भगवान् तुम पर दया करें..."

"नो! नो! नो! वह नाम मत लो?"

"मरे हुए से तुम्हें क्या भय है?"

"भय नहीं, घृणा है। सुनो कृष्णेन्दु, तुम यहाँ रहोगे तो मुझे चैन नहीं मिलेगा। तुम्हें यहाँ से जाना ही होगा। तुम जाओ कृष्णेन्दु! नहीं तो शायद मैं तुम्हें गोली मार दूँगी। अथवा वे लोग मार देंगे। यदि उन्हें यह मालूम हो गया कि तुम्हारे कारण मैं चली जाऊँगी तो वे क्षमा नहीं करेंगे।"

कृष्णस्वामी अँधेरे में ही दीवार पर जिधर क्रॉस-विद्ध यीशु की एक मूर्ति टँगी हुई थी, उधर देख उठे। हे अविनश्वर! अपने-आपको प्रकट करो!

"कृष्णेन्दु, जाओगे या नहीं, बोलो?"

"नहीं।"

"नहीं?"

"नहीं।"

"क्यों? किसलिए? मेरे लिए? मेरी देह चाहते हो?"

कानों में उँगली डालते हुए कृष्णस्वामी ने कहा, "नहीं। तुम्हारी देह लेकर क्या करूँगा ? 'येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्।'" साथ-साथ अंग्रेजी में अनुवाद करते हुए कहा, "उसका क्या होगा ?"

"तो फिर क्यों ? किसलिए ?" रीना चीख उठी।

"टु बी क्रूसिफाइड अगेन।"

कहते-कहते ही उन्होंने रीना के हाथ से टार्च लेकर जलायी। क्रॉस-विद्ध यीशु की मूर्ति आलोकित हो उठी।

अगले ही क्षण रीना ने बड़ी तेजी से कुछ खींचकर बाहर निकाला। पिस्तौल ! पिस्तौल उठाकर गोली चला दी। मूर्ति टूटकर गिर गयी।

अगले क्षण पथभ्रष्ट उल्का की भाँति रीना बाहर निकल गयी थी। बाहर से सुनायी पड़ा, "कल तुम्हें जाना होगा, यू मस्ट, ऑर यू डाई।"

आश्चर्य है, अगले दिन से रीना फिर दिखायी नहीं दी।

कृष्णस्वामी कितने ही दिन प्यारा-डोबा गये, कितने ही दिन मोरार की सड़क के चौराहे पर खड़े रहे, कितने ही दिन तक रामचरन के फाटक पर बिना प्रयोजन ही जाकर बैठते रहे। कितनी जीपें आयीं, कितनी विलासिनी स्त्रियाँ गयीं। पर रीना उनमें नहीं थी।

रामचरन और रामचरन के बेटे ने कहा, "वह मेम कहाँ चली गयी बाबा साहब ?"

कृष्णस्वामी क्या बतायें ?

कहते, "कौन जाने !"

कौन जाने, वह कहाँ है ! शायद किसी दूर देश में, सुदूर विस्तृत युद्ध-क्षेत्र की सीमा पर रीना तामसी उल्का की भाँति तड़पती भटक रही है। कौन जाने !

सात

पृथ्वी केवल जल और मिट्टी नहीं है। समुद्र, वन, पहाड़—इसी के बीच पृथ्वी की सीमा समाप्त नहीं हो जाती। उसका एक ऊर्ध्व लोक भी है।

आकाश में जितनी दूर तक मध्याकर्षण विस्तृत है, वहाँ तक उसकी सीमा है। फिर मिट्टी के वक्ष के भीतर, अँधेरे गह्वर में उसका एक अधोलोक भी है। पेड़ की जड़ रहती है मिट्टी के नीचे, फूल खिलते हैं आकाश में। पक्षी पंख फैलाकर आकाश में उड़ते हैं। आकाश में पहुँचकर और भी, और भी ऊपर उठना चाहते हैं। पर उनका नीड़ मिट्टी के वक्ष में अटके हुए वृक्ष की डाल पर है, वहाँ उसे उतरना ही होता है। सरीसृप मिट्टी के वक्ष के अँधेरे गह्वर में रहते हैं। उन्हें बाहर मिट्टी के ऊपर निकलकर आना होता है—वायु के लिए, आहार के लिए, प्रकाश के लिए।

कृष्णस्वामी का मन विहग की भाँति आकाश-विहारी है। आलोक, और भी अधिक आलोक के लिए उसने पंख फैला दिये हैं। रीना ब्राउन ने ही एक दिन यह पंख फैलाने की आकांक्षा जगायी थी। मनुष्य के जीवन में घात-प्रतिघात की यह शक्ति कितनी विचित्र है! पिता जेम्स ब्राउन के आघात से वही रीना ब्राउन अँधेरे गह्वर में सरीसृप बन गयी। बचपन में किसी पुराण में पढ़ा था कि कोई राजा किसी के अभिशाप से अजगर हो गया था। माँ से काजलहारा की कहानी भी सुनी थी। काजलहारा ठीक रीना की भाँति स्फटिक की बनी लड़की थी। उसकी सौत ने उसे जादू की लकड़ी से साँपिनी बना दिया था। ब्राउन ने घृणा और अमर्यादा की लकड़ी के आघात से उसे ठीक साँपिनी ही बना दिया है।

पर पक्षी को भी तो धरती के वक्ष पर उतरना पड़ता है। सरीसृप को भी धरती के ऊपर आना होता है। अचानक दोनों की भेंट हो गयी। ठीक वैसा ही। कृष्णस्वामी का रीना ब्राउन के इस जीवन से सम्पर्क ठीक वैसा ही है। अँधेरी रात में सरीसृप-रूपिणी रीना विहंग कृष्णस्वामी के नीड़ में आकर अपनी विषैली साँसों के गर्जन से उन्हें घबराकर चली गयी। फिर भेंट नहीं हुई।

कृष्णस्वामी कई दिन तक अँधेरी रात में सरीसृप की प्रतीक्षा करते रहे, पर वह फिर कभी नहीं आयी। कहाँ, किस सुदूर स्थान में नये अँधेरे विहार की खोज में वह चली गयी है? कृष्णस्वामी ने आकाश में अपने पंख फैला दिये। ऊपर, और ऊपर उठेंगे। रीना अपने रास्ते चली

गयी है, वह अपने रास्ते चलेंगे। केवल बीच-बीच में, आकाशचारी विहंग की धरती पर पड़नेवाली दृष्टि की भाँति, रीना की बात याद आने पर दिगन्त की ओर ताककर भगवान् से उसके मंगल की कामना करते। कल्याण करो भगवान्। रीना के चित्त को स्वस्थ करो, शान्त करो। कुष्ठ-रोगी तुम्हारे पास आया, तुमने उसे छुआ, उसे नवजीवन प्राप्त हुआ, उसी प्रकार रीना के चित्त को स्वस्थ करो! कहो, "बी दाउ क्लीन!" फिर कुछ क्षण बाद रीना की चिन्ता छोड़कर अपने-आपको काम में डुबो देते हैं। असमय ही साइकिल लेकर निकल पड़ते हैं। गाँव-गाँव भटकते फिरते हैं।"

"कैसे हो तुम लोग सब? एँ? अजी महाशयो!"

"अच्छे कहाँ बाबा साहब? भूखा रहकर बचता है इन्सान! पेट में राक्षस घुस गया है। लड़के, लड़की, जानवर—सब।"

"देखता हूँ, देखता हूँ, एस० डी० ओ० से बात करके देखता हूँ।"

"किरोसिन तेल और कपड़े की बात कहना बाबा!"

"कहूँगा, पर अभी किसी का हाथ तो नहीं देखना है?"

"यही छोटी-मोटी बीमारी है, वह क्या देखेंगे?"

"उस बच्चे की पीठ पर यह दाग कैसा है जी? देखूँ, देखूँ!"

अचानक एक लड़के की पीठ पर गरदन के पास एक फीके सफ़ेद दाग पर नजर पड़ गयी थी। "देखूँ रे लड़के, इधर आ, इधर आ, सुन, सुन!"

"जाता क्यों नहीं रे, हरामजादा बदजात! दिखाता क्यों नहीं?"

देख-भालकर कहते, "तभी तो महाशय जी, कैसा पारे-जैसा लग रहा है! इसे तो दिखाना चाहिए। क्यों नहीं ले आते मेरे यहाँ। अच्छी तरह से जाँचकर देखूँगा।"

और फिर चल पड़ते हैं। कुष्ठ को फैलते देखकर मन-ही-मन चिन्तित होते हैं, वेदना अनुभव करते हैं। और सब-कुछ भूल जाते हैं।

कृष्णस्वामी के पास शुरू से ही अपना एक माइक्रोस्कोप है। विद्यार्थी-जीवन में जब अपने मित्र के साथ उनके नीचे रहकर प्रैक्टिस करते थे, तब ही से है। क्लेटन ने कम दामों में जुटा दिया था। चोरी का माल

है यह जानते हुए ही कृष्णेन्दु ने खरीदा था। उस समय वह विद्यार्थी-जीवन का कृष्णेन्दु था। उसे कोई दुविधा नहीं हुई। पर आजकल जब कृष्णस्वामी उससे कोई काम करते हैं तो भगवान् से क्षमा-याचना कर लेते हैं और साथ-ही-साथ पिता-माता को प्रणाम कर लेते हैं। उनकी माँ अपने सारे गहने कृष्णेन्दु को दे गयी थीं। कृष्णेन्दु पास हुआ है। इन गहनों में से चूड़ियों का जोड़ा बहू को देगा और बाकी गहनों के रुपयों से डिस्पेन्सरी खोलेगा। श्राद्ध के बाद उसके पिता ने वे सब उसके हाथों में रख दिये थे। कहा था, "लो रखो। तुम्हारी माँ तुम्हें ही दे गयी है, अपने पास ही रखो! तुम्हें पढ़ाने के बाद मेरा हाथ अब खाली है। गरीबी में क्या कर बैठूँ, कोई ठीक नहीं।"

वह कृष्णेन्दु माँ का लाडला था। गृहस्थी की सभी चीजों पर उसी का पहला अधिकार था। वह लेना ही जानता था, देना नहीं। सीखा ही न था। देना पहली बार उसने रीना को स्वयं को देकर ही सीखा।

छोड़ो रीना की बात! उसका कल्याण हो! उसकी बात सोचते-सोचते बीच-बीच में लगता है, रीना ने निज को उसे नहीं सौंपा, उसके बजाय लौटाने के समय अपने ईश्वर को देकर स्वयं कंगाल हो गयी। ईश्वर, उसका मंगल करो! हे ईश्वर, उसकी जीवन-समाधि को जीवन्त करके तुम फिर से जाग उठो! मनुष्य की प्राण-शक्ति की सद्‌बुद्धि, उसे हाथ के इशारे से बुलाने के प्रकाश, ईश्वर, तुम जागो! रीना को तुम्हारे हाथों समर्पण करके कृष्णस्वामी निश्चिन्त है।

रीना अँधेरे में विलीन हो जाती है। मन से दूर हो जाती है।

कृष्णस्वामी को पिता की याद आती है—अल्पभाषी, निर्लिप्त व्यक्ति, बेहद कठोर। एक वाक्य में कृष्णेन्दु से कह दिया था, "जाओ! तुम्हारी जरूरत नहीं!" ठाकुरजी को लेकर वृन्दावन चले गये थे। सारी सम्पत्ति बेच दी थी। कुछ और रुपया ठाकुरजी के मठ में दे गये हैं। अपने जीवन में उन्होंने थोड़ा ही रुपया खर्च किया था। बाकी तेरह हजार कुछ-एक सौ रुपया बैंक में रखा था। वकील से कह गये थे, कृष्णेन्दु की तलाश करके उसे दे देना। वह कृष्णस्वामी को मिला है। उसी से आश्रम चलता है। किन्तु इस प्रकार आश्रम को कुष्ठ अस्पताल बनाने से कितने दिन

। यहीं कृष्णस्वामी ने कुष्ठ रोगियों की एक डिस्पेन्सरी-सी बना
।
लालसिंग और सिन्धु सन्त्रस्त हो उठे, "बाबा साहब ! यह ठीक
है।"

कृष्णस्वामी हँसते हैं। बीच-बीच में पूछते हैं, "तुम्हें डर लगता है
लालसिंग ?"

लालसिंग मौन द्वारा ही सूचित करता है, हाँ लगता है।

सिन्धु साफ़ कहती है, "हाँ बाबा साहब ! महामारी से किसे डर नहीं लगता ? हाँ, आपको सचमुच नहीं है। सो आपका पुन्न है, हमारे भाग में तो कोई पुन्न नहीं। क्या करें बताइए ?"

बर्बर झुमकी को भय नहीं होता, घृणा होती है। कहती है, "बहुत बुरी गन्ध आती है। कैसी बदबू ! ओफ़ ! और क्या हो जाता है... आक् थू !"

बीच-बीच में वह अमरीकी फ़ौजी अफ़सर आता है। अब वह "हे मैन" नहीं कहता। कहता है, "वैल रेवरेण्ड !"

बीच-बीच में वह रीना की बात भी चलाता है। कहता है, "सुना है आसाम फ्रण्ट पर घूम रही है। ठीक नहीं कहा जा सकता। पर बात उस डेयर-डेविल लड़की के साथ बहुत मेल खाती है।"

"आसाम ?"

"येस ! गोहाटी, शिलांग, चटगाँव। जस्ट लाइक हर, लाइक शूटिंग स्टार।" बीच-बीच में झुमकी को देखकर निर्लज्ज भाव से हँसता है, इशारे करता है।

कृष्णस्वामी याद दिला देते हैं, "यह असल में एक चर्च है, मि... ऑफ़ीसर !"

सामने युद्ध है। जिसके लिए मौत का परवाना कट चुका है। वे जितने उद्दाम होते हैं, उतने ही भीरु भी। ईश्वर के रोष से भय... बिना नहीं रह सकते। कम-से-कम ईश्वर को अप्रसन्न नहीं करना च... अफ़सर क्रॉस का चिह्न बनाकर चला जाता है।

कोई एक वर्ष के बाद अचानक एक दिन कृष्णस्वामी ने लालसिंह से कहा, "लालसिंग, तबीयत बड़ी खराब-सी लगती है, मैं कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ।"

"कहाँ जायेंगे बाबा साहब ? आपके न होने पर हम लोग यहाँ कैसे रहेंगे ?"

"पन्द्रह-बीस दिन ज्यादा नहीं। तुम लोग गाँव के भीतर जैसे रहते हो वैसे ही रहना !"

पच्चीस दिन बाद कृष्णस्वामी लौट आये। तबीयत ठीक नहीं हुई थी, बल्कि कुछ कमजोर हो गये थे। मिन्धु ने कहा, "तबीयत और भी खराब कर लाये बाबा साहब !"

"बहुत भटकता रहा मिन्धु ! बहुत दिन यहीं रहते-रहते मन उकता गया था। छुट्टी पाकर खूब घूमा। ठीक लड़ाई के आसपास की जगहों में। शिलांग, गौहाटी, यहाँ-वहाँ। घूमने-भटकने से देह कमजोर होगी ही ! पर हाँ, मन अच्छा हो गया है।"

चटगाँव से लगाकर गौहाटी तक युद्ध के सीमावर्ती स्थानों में उन्होंने पता लगाया था। हाँ, खबर मिली है। ठीक वैसी ही एक स्त्री थी। वह मर गयी। किसी ने उसकी हत्या करके गौहाटी से शिलांग के पहाड़ी रास्ते में एक खड्ड में फेंक दिया था।

सम्भवतः कोई निष्ठुर सैनिक रहा होगा। रीना के उद्धत व्यवहार से क्रुद्ध होकर उसे मार डाला होगा। पोस्टमॉर्टम में पता चला कि उसके पेट में शराब थी और यह भी पता चला कि अभागिनी जघन्य रोग से पीड़ित थी।

कृष्णस्वामी निश्चिन्त हो गये। रीना अपने जीवन का पावना समझकर चली गयी अथवा निष्ठुर मूल्य द्वारा इस उल्का-जीवन का देना चुका गयी। पुलिस-विभाग को उसका कोई परिचय नहीं मिला। कृष्णस्वामी से ही उन्होंने प्रश्न किया था, "उसे जानते थे क्या ?"

"नहीं।"

कृष्णस्वामी 'नहीं' कहकर ही चले आये थे। हे ईश्वर, अब मुझे अपनी सेवा में लीन कर लो ! यह संकल्प लेकर ही लौटे हैं। कलकत्ता

से बड़ी मुश्किल से दवाइयाँ भी खरीद लाये हैं। उन्हें उसी दिन सजा डाला।

अगले दिन सवेरे झुमकी आकर खड़ी हो गयी। "बाबा साहब !"

"क्या ?"

"लालसिंग कल रात चला गया है।"

"चला गया है ? क्या मतलब ? कहाँ चला गया है ?"

"क्या पता ? ये वे लोग जानें। कहता था कोढ़ का इलाज करते-करते साहब को भी कोढ़ हो गया। कोई बच सकता है ? चल सिन्धु, भागकर जान बचा लें !"

"क्या कहा ? किसे कोढ़ हुआ है ?"

"क्यों, आपको हुआ है ?"

कृष्णस्वामी विस्मय-विस्फारित दृष्टि से देखते रह गये। उन्हें कुष्ठ हुआ है ? कुछेक क्षण बाद उनकी बुद्धि सक्रिय हुई। "कहाँ ? किधर ?"

अपनी उँगलियों को देखने लगे। एक छोटा-सा शीशा दीवार पर टँगा हुआ था, उसके सामने जाकर खड़े हुए। "किधर है ? कहाँ ?"

झुमकी बोली, "ऊँ हूँ ! ऊँ हूँ ! जैसे दाग देखकर आप बताते हैं—यह कोढ़ का लच्छन है, वैसा ही एक गोल-गोल दाग आपको हुआ है। पीछे की तरफ। आपको दीखेगा कैसे ?"

कृष्णस्वामी के कुरते को उठाकर पीठ पर एक जगह उँगली रखते हुए झुमकी ने कहा, "यह रहा। यही। कैसा दाग है यह ? एँ ?"

कृष्णस्वामी निश्चल खड़े रह गये। सिर से पैर तक एक विचित्र सनसनी-सी दौड़ गयी। मानो वह थोड़े-से अवश हो गये हों। उन्हें चोट लगी। वह इसके लिए तैयार नहीं थे। यह नहीं कि इसकी सम्भावना नहीं रही, पर सत्य जब सचमुच आ पहुँचा तब सहन करने में कष्ट हो रहा है। सचमुच वही है। झुमकी ने जहाँ उँगली रखी थी वहाँ खाल नहीं है; झुमकी की उँगली का स्पर्श उन्हें अनुभव नहीं हुआ।

रीना ! रीना के कारण। कुछ भी जैसे मन के भीतर पकड़ाई नहीं आता। मन उस ओर से इतना व्यग्र था कि बाकी सब उनकी आँखों के आगे से अनजाने में ही निकलता चला गया था।

मस्तिष्क के भीतर कोश-कोश में वेदना का आवेग धरती के गर्भ में छिपी हुई अग्नि की भाँति फूटकर निकलना चाहता है। कृष्णस्वामी ने पहाड़ की भाँति उसको अपने भीतर छिपा रखा है। काँपने नहीं देंगे। फूटने नहीं देंगे। अग्नि धरती के गर्भ में प्राणों के उत्ताप में परिणत हो जाये। प्राणों के कोश-कोश में वह अग्नि सहस्र प्रदीप-शिखाओं की भाँति भगवान् की आरती के रूप में, आनन्द की दीपावलि के रूप में जल उठे!

बहुत देर बाद आत्मस्थ होकर उन्होंने कहा, "मैं बाँकुड़ा जा रहा हूँ झुमकी!"

बाँकुड़ा में नया क्या बतायेंगे? कहेंगे, रोग छूत से हुआ है। अनिवार्य है। इसके बाद? कहाँ जायेंगे, क्या करेंगे?

हाँ, आ पहुँचा है। कार्य-कारण का परिणाम! कृष्णस्वामी को तिरस्कार-भरी बातें भी सुननी पड़ीं। सामूहिक वैज्ञानिक प्रयत्न के बाहर इस प्रकार अकेले एक व्यक्ति की कोशिश की यही अनिवार्य परिणति है!

कृष्णस्वामी चुप ही रहे। केवल एक हँसी की रेखा धीरे-धीरे उनके मुख पर खिल उठी थी।

लार्ड, आइ फाइ अनटू दी। मेक हेस्ट अनटू मी।

"कोई बहुत चिन्ता का कारण नहीं है, पर इस प्रकार आपका लोगों का इलाज करते हुए घूमना ठीक नहीं होगा।"

"अवश्य। ये उनका निर्देश है। आते-आते मैं सोच चुका हूँ। मैं चला जाऊँगा। कुम्भकोणम के लेपर असाइलम में। वहीं मेरी चिकित्सा भी होगी और मैं डाक्टर की हैसियत से कुछ काम भी कर सकूँगा।"

"गॉड बी विद यू!"

मद्रास समुद्र के किनारे कुम्भकोणम कुष्ठाश्रम है। बड़ा भारी आश्रम है। पीड़ाग्रस्त भगवान् की सेवा का मन्दिर! आज रीना ब्राउन की याद आयी। स्फटिक से बनी हुई मूर्ति की भाँति पवित्र कुमारी रीना ब्राउन। आसनसोल के चर्च यार्ड में उन्हें लौटाते समय, उनके ईश्वर-विश्वास को, उनके ईश्वर को क्या इसी रास्ते जाने का निर्देश दिया

था ? नहीं। यह रास्ता उन्होंने स्वयं ही चुना है।

सैट ए वाच, ओ लार्ड, बिफोर माइ माऊथ। कोप दि डोर ऑफ माइ लिप्स।

एक भी क्षोभपूर्ण वाक्य कृष्णस्वामी के मुख से न निकला।

चलो कुम्भकोणम। आखिरी सहारा वही है।

सत्य से अधिक विस्मयकारी और कुछ नहीं। ट्रुथ इज स्ट्रेंजर देन फिक्शन। वास्तव जीवन में मृत व्यक्ति भी बच जाता है, कल्पना की कहानी में बचाने से अविश्वास होता है। वास्तव जगत् में प्राण कालिमा के साथ युद्ध करके उसकी सीमा को लाँघ जाने के लिए युग-युग से भटकते आये हैं, सामने क्षितिज पर आलोक के राज्य की उज्ज्वल महिमा आह्वान कर रही है, तो भी मनुष्य के काल में अविश्वासी बुद्धि कूट तर्क करके कहती है, यह आलोक नहीं, भ्रम है। आलोक मिथ्या है, कालिमा ही सत्य है। अमृत कल्पना है, मृत्यु ही सत्य है।

और भी आठ महीने बाद।

कृष्णस्वामी कुम्भकोणम आश्रम में उस दिन थककर सोये हुए थे। उन्होंने यहीं अपना स्थान बना लिया है। सबसे कठिन रोगियों का वही इलाज करते हैं। उनका अपना इलाज भी होता है। रोग शुरू में बहुत बढ़ने के बाद अब कुछ थम गया है। नाक के किनारे कुछ सूज-से गये हैं। मुख पर, माथे पर, गालों पर अस्वस्थ रक्ताभ मसृणता दिखायी देने लगी है। दोनों कानों के किनारे भी फूल रहे हैं। हाथ की उँगलियाँ एकदम फूली नहीं हैं, पर तेल से सने हुए हाथों की उँगलियों की भाँति दिखायी पड़ती हैं। शुरू में रोग बड़ी तेजी से ही बढ़ा था, अब रोग का वेग रुक गया है।

इधर काल की पटभूमि पर बड़े-बड़े परिवर्तन हो चुके हैं।

लड़ाई खत्म हो गयी। देश में विस्मयकारी राजनीतिक परिवर्तन हुए। भारतवर्ष स्वाधीन हो रहा है। भारतवर्ष विभक्त हो रहा है। कृष्णस्वामी देखते हैं और रोज ही कहते हैं यह जय तुम्हारी ही जय है!

क्लान्त दृष्टि से अपने कमरे के खुले दरवाजे से वह सामने की ओर ताक रहे थे। एक डॉक्टर ने आकर कहा, "रेवरेण्ड, एक अंग्रेज सज्जन अपनी पत्नी सहित तुमसे मिलने आये हैं। मैंने कहा कि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं, पर वे बोले कि बहुत दूर से आये हैं। यह भी कहा, कहिए मेरा नाम है जॉनी, जॉन क्लेटन !"

"जॉन क्लेटन !" विस्मय में कृष्णस्वामी चौंक उठे। "जॉन क्लेटन पत्नी सहित उनसे मिलने आया है, इस लेपर एसाइलम में ? कहाँ ? कहाँ है ?"

अचानक कमरा काँपने लगा, पैर के नीचे की मिट्टी भी मानो काँप रही है। सामने के पेड़-पत्ते, धरती-आकाश सब जाने कैसे हुए जा रहे हैं, क्या हुआ जा रहा है। ज्योतिर्लोक मानो फटा जा रहा है !

कृष्णस्वामी चीत्कार कर उठे, "रीना !"

जॉन क्लेटन की बगल में रीना थी। रीना क्लेटन। क्लेटन की पत्नी !

"हाँ कृष्णेन्दु ! मैं। मुझे देखकर तुम्हें विस्मय होना स्वाभाविक ही है। पर तुम, तुम मुझे आश्चर्यजनक रूप से अशरीरी की भाँति पीछा करते हुए मुझे दिन-रात बुलाते रहे हो। कम बैक, कम बैक, लौट आओ, लौट आओ ! यही पुकारते रहे हो। लौटना चाहा ! तुम्हें अकेला छोड़कर चली भी गयी। पर कौन मेरी ओर हाथ बढ़ाता ! किसका हाथ पकड़कर मैं फिर से मनुष्य के हृदय-राज्य में प्रवेश करती। तुम्हारी बात सोची थी। पर वह नहीं हो सका। भय के कारण नहीं हो सका। मैं गोली से…"

रीना चुप हो गयी। शायद वह बात मुँह से नहीं कह सकी।

कृष्णस्वामी का विस्मय दूर होता जा रहा है।

रीना बोली, "तुमने कहा था, मनुष्य के हृदय में उसकी मन्द बुद्धि नित्य भगवान् के पुत्र को क्रॉसविद्ध करती है और वह नित्य नये जीवन में जाग उठते हैं। वह सत्य मैंने भी अनुभव किया, पर तो भी तुम्हारे सामने नहीं जा सकी। तुम्हारी वह भयंकर बात मेरे कान में बजती रहती थी। तुमने कहा था, "मैं यहाँ रहूँगा टु बी क्रूसिफ़ाइड अगेन।"

सी हो, तुम सेण्ट हो, तुम्हारे पास खड़ी होकर मैं तुम्हें कलुषित ती हूँ, किन्तु ...।"

ना की आँखों से अश्रु-धारा बह निकली ।

ाँन क्लेटन मानो कृष्णेन्दु का वह पुराना बन्धु जॉनी नहीं । अथवा वामी ही वह कृष्णेन्दु नहीं । जॉन क्लेटन भी उनके साथ सम्भ्रम- बात कर रहा था । अवश्य ही क्लेटन भी अब वह क्लेटन नहीं । वह बदला हुआ वयस्क व्यक्ति है, जला हुआ व्यक्ति ! बहुत दुख ा है । पहली स्त्री विवाह-विच्छेद करके चली गयी । युद्ध में बन्दी कर बहुत दिन पूर्वी प्रदेश के बन्दी शिविर में काट चुका है । आज भी सकी देह दुर्बल है । भीतर-बाहर आघातों के चिह्न स्पष्ट दिखायी देते है । क्लेटन के कान के पास गोली का दाग है । माथे पर बहुत-सी रेखाएँ उभर आयी हैं । उसका कण्ठ-स्वर शान्त हो गया है ।

क्लेटन बोला, "युद्ध में बन्दी हो गया था । छूटने पर कुछ दिनों बाद कश्मीर गया । सोचा था शरीर कुछ स्वस्थ होगा । मन के भीतर थकान की कोई सीमा नहीं । हठात् कश्मीर में रीना को देखा । तूफान में पंख टूट जाने पर लँडूरे हो जानेवाले पक्षी को देखा है कृष्णेन्दु ?"

हँसकर क्लेटन ने कहा, "तुम्हें कृष्णेन्दु कहने में संकोच होता है, रेवरेण्ड, तुम सचमुच ही पवित्र हो ।"

कृष्णस्वामी ने कहा, "एकमात्र भगवान् ही पवित्र हैं, क्लेटन ! जो जीवन की वेदना को उनके चरणों में ढालने के लिए उनके मुख की ओर ताकते रहते हैं, उनके ऊपर भगवान् का आलोक पड़ने से ही वे पवित्र जान पड़ते हैं । नहीं तो वे भी मनुष्य हैं क्लेटन !"

फिर बोले, "और बताओ ! मेरी धारणा हो गयी थी कि री जीवित नहीं है । ऐसी ही एक खबर पाकर मैं शिलांग गया था । व जाकर सारा विवरण सुनकर लगा कि वह सचमुच रीना ही हो किसी ने एक लड़की की हत्या करके खड्ड में फेंक दिया था ।"

रीना ने दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा, "कितने खड्डों में, जंगलों में, ऐसी कितनी हतभागिनियों का जीवन समाप्त हुआ है; गिद्धों और गीदड़ों ने खाया है, मिट्टी के साथ मिला दिया है,

कोई हिसाब नहीं। मेरा भी यही होता कृष्णेन्दु ! अगर उस दिन तुमसे मुलाकात न होती, अगर तुम्हारी स्मृति मेरे पीछे देवदूत की भाँति दिन-रात चक्कर न काटती रहती, तो मेरा भी यही हाल होता। मैंने वहाँ से भागकर छिपना चाहा था। उनकी हद के बाहर दूर-दूरान्तर में भटकती-भागती फिर रही थी। आसाम, शिलांग, चटगाँव में उस समय जो लोग थे वे पागल थे। सारे जीवन की क्षुधा पुंजीभूत करके उस समय वे लोग राक्षस की भाँति हो उठे थे। उधर मैं न गयी। मैं चली गयी थी शिमला की ओर। वहाँ से फिर कितनी जगह! बस शराब पीती थी। उस समय कभी मरकर पीछा छुड़ाना चाहती और कभी भीषण क्षोभ से उल्का की भाँति भपटना। कितनी ही बार, यू नो, तुम्हें आश्चर्य होगा, मैं वार ज़ोन की ओर आध रास्ते जाकर अचानक लौटकर भाग आयी। कश्मीर में जब प्रथमरी शराब में चूर एक निर्जन स्थान पर पड़ी थी, तो दो पशु मेरे पीछे पड गये।"

सन्ध्या के बाद वे लौटने को बाध्य हुए। रीना तब लगभग अचेत थी और बस अपने-आप बड़बड़ा रही थी। उन्हें लाश से आनन्द नहीं मिला, उसे छोड़कर जाते समय लातें मार रहे थे। उसी रास्ते से क्लेटन आ निकला। उसने देखा तो दौड़कर आया। अफ़सर का बैज देखकर वे लोग भाग खड़े हुए। क्लेटन देखकर सिहर उठा।

रीना! रीना! हाँ, रीना ही तो है!

उसने पुकारा था, "रीना, रीना!"

रीना बकती-बड़बड़ाती ही रही। वे लोग जो बातें समझ सके थे उसे समझने में क्लेटन को तनिक भी कठिनाई न हुई। रीना कह रही थी, "इट इज़ दि कॉज़, माई सोल!"

और कोई सन्देह बाकी न रहा। रीना ब्राउन ही है! वह रीना को कन्धे पर उठाकर ले आया था। बार-बार कान में कहता जाता था, "रीना माई डार्लिंग, रीना माई लव, रीना माई एंजिल! आई लव यू, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ!"

पहले तो रीना को विश्वास नहीं हुआ।

क्लेटन ने रीना को अपनी कहानी सुनायी थी। उसके बाद कहा था, "प्रथम यौवन का वह मैं दुख की आग में जल चुका है। ग्लानि, आवर्जना ही जलती है, राख होती है: जो खरा है, वह राख नहीं होता, जलकर शुद्ध होता है। मैं तुमसे इतना ही कहता हूँ रीना, ट्राई मी, मेरी परीक्षा करके देखो!"

हो, तुम सेण्ट हो, तुम्हारे पास खड़ी होकर मैं तुम्हें कलुषित
हूँ, किन्तु ...।"
की आँखों से अश्रु-धारा बह निकली।
क्लेटन मानो कृष्णेन्दु का वह पुराना बन्धु जॉनी नहीं। अथवा
मी ही वह कृष्णेन्दु नहीं। जॉन क्लेटन भी उनके साथ सभ्रम-
त कर रहा था। अवश्य ही क्लेटन भी अब वह क्लेटन नहीं
वह बदला हुआ वयस्क व्यक्ति है, जला हुआ व्यक्ति। बहुत दुख
है। पहली स्त्री विवाह-विच्छेद करके चली गयी। युद्ध में वन्दी
र बहुत दिन पूर्वी प्रदेश के वन्दी शिविर में काट चुका है। आज भी
की देह दुर्वल है। भीतर-बाहर आघातों के चिह्न स्पष्ट दिखायी देते
। क्लेटन के कान के पास गोली का दाग है। माथे पर बहुत-सी रेखाएँ
भर आयी हैं। उसका कण्ठ-स्वर शान्त हो गया है।
क्लेटन बोला, "युद्ध में वन्दी हो गया था। छूटने पर कुछ दिनों
बाद कश्मीर गया। सोचा था शरीर कुछ स्वस्थ होगा। मन के भीतर
थकान की कोई सीमा नहीं। हठात् कश्मीर में रीना को देखा। तूफान
में पंख टूट जाने पर लँडूरे हो जानेवाले पक्षी को देखा है कृष्णेन्दु ?"
हँसकर क्लेटन ने कहा, "तुम्हें कृष्णेन्दु कहने में संकोच होता है,
रेवरेण्ड, तुम सचमुच ही पवित्र हो।"
कृष्णस्वामी ने कहा, "एकमात्र भगवान् ही पवित्र हैं, क्लेटन ! जो
जीवन की वेदना को उनके चरणों में ढालने के लिए उनके मुख की ओर
ताकते रहते हैं, उनके ऊपर भगवान् का आलोक पड़ने से ही वे पवित्र
जान पड़ते हैं। नहीं तो वे भी मनुष्य हैं क्लेटन !"
फिर बोले, "और बताओ ! मेरी धारणा हो गयी थी कि रीना
जीवित नहीं है। ऐसी ही एक खबर पाकर मैं शिलांग गया था। वहाँ
जाकर सारा विवरण सुनकर लगा कि वह सचमुच रीना ही होगी
किसी ने एक लड़की की हत्या करके खड्ड में फेंक दिया था।"
रीना ने दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा, "कितने खड्डों में, कि
जंगलों में, ऐसी कितनी हतभागिनियों का जीवन समाप्त हुआ है; देह
गिद्धों और गीदड़ों ने खाया है, मिट्टी के साथ मिला दिया है, इ

कोई हिसाब नहीं। मेरा भी यही होता कृष्णेन्दु! अगर उस दिन तुमसे मुलाक़ात न होती, अगर तुम्हारी स्मृति मेरे पीछे देवदूत की भाँति दिन-रात चक्कर न काटती रहती, तो मेरा भी यही हाल होता। मैंने वहाँ से भागकर छिपना चाहा था। उनकी हद के बाहर दूर-दूरान्तर में भटकती-भागती फिर रही थी। आसाम, शिलांग, चटगाँव में उस समय जो लोग थे वे पागल थे। सारे जीवन की क्षुधा पुंजीभूत करके उस समय वे लोग राक्षस की भाँति हो उठे थे। उधर मैं न गयी। मैं चली गयी थी शिमला की ओर। वहाँ से फिर कितनी जगह! बस शराब पीती थी। उस समय कभी मरकर पीछा छुड़ाना चाहती और कभी भीषण क्षोभ से उल्का की भाँति भपटना। कितनी ही बार, यू नो, तुम्हें आश्चर्य होगा, मैं वार जोन की ओर आध रास्ते जाकर अचानक लौटकर भाग आयी। कश्मीर में जब प्रथमरी शराब में चूर एक निर्जन स्थान पर पड़ी थी, तो दो पशु मेरे पीछे पड़ गये।"

सन्ध्या के बाद वे लौटने को बाध्य हुए। रीना तब लगभग अचेत थी और बस अपने-आप बड़बड़ा रही थी। उन्हें लाश से आनन्द नहीं मिला, उसे छोड़कर जाते समय लातें मार रहे थे। उसी रास्ते से क्लेटन आ निकला। उसने देखा तो दौड़कर आया। अफ़सर का बैज देखकर वे लोग भाग खड़े हुए। क्लेटन देखकर सिहर उठा।

रीना! रीना! हाँ, रीना ही तो है!

उसने पुकारा था, "रीना, रीना!"

रीना बकती-बड़बड़ाती ही रही। वे लोग जो बातें समझ सके थे उसे समझने में क्लेटन को तनिक भी कठिनाई न हुई। रीना कह रही थी, "इट इज़ दि कॉज़, माई सोल!"

और कोई सन्देह बाकी न रहा। रीना ब्राउन ही है! वह रीना को कन्धे पर उठाकर ले आया था। बार-बार कान में कहता जाता था, "रीना माई डार्लिंग, रीना माई लव, रीना माई एंजिल! आई लव यू, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मैं तुम्हे प्यार करता हूँ!"

पहले तो रीना को विश्वास नहीं हुआ।

क्लेटन ने रीना को अपनी कहानी सुनायी थी। उसके बाद कहा था, "प्रथम यौवन का वह मैं दुख की आग में जल चुका है। ग्लानि, आवर्जना ही जलती है, राख होती है: जो खरा है, वह राख नहीं होता, जलकर शुद्ध होता है। मैं तुमसे इतना ही कहता हूँ रीना, ट्राई मी मेरी परीक्षा करके देखो!"

रीना बोली, "क्या करती ? तुम्हारे पास खड़े होने योग्य शक्ति मैं भीतर तब न थी। मैंने उस पर ही विश्वास कर लिया। और उसने अपनी बात सच कर दिखायी। उसने अपने प्यार को प्रमाणित कर दि है। दोनों हाथों से मुझे जकड़ लिया। तुमने मुझे आशीर्वाद दिया कृष्णेन्दु, मुझे विश्वास था, वह उसके रूप में मुझे मिला। तुम ग्रेट हो कृष्णेन्दु ! तुम सेण्ट हो !"

उसके बाद एक गहरी लम्बी साँस लेते हुए बोली, "मुझे बड़ा दुख है, तुम्हारी इस अवस्था में कोई सेवा नहीं कर सकी।"

कृष्णस्वामी सामने क्षितिज की ओर ताक रहे थे। उधर देखे देखते ही बोले, "शायद यही मेरा पुरस्कार है रीना ! इसने ही उन्हें मेरी सब अतृप्त कामनाएँ तृप्त कर दीं।"

फिर हँसे, हँसकर बोले, "देखो, हमारे देश के शास्त्रों में लिखा है एक साथ सात कदम चलने से मित्रता होती है। हम लोगों के विवाह में स्वामी-स्त्री अग्नि को साक्षी करके सात कदम एक साथ चलते हैं। जब मनुष्य भगवान् की खोज करता है तब वह अकेला होता है, किसी के साथ सात कदम नहीं चला जाता, बन्धु के साथ भी नहीं। बिलकुल अकेले। उस रास्ते पर विचित्र रूप में आशीर्वाद भी मिलता है, अभिशाप भी ! और—। सात कदम एक साथ चले बिना संसार के आनन्द में नहीं लौटा जा सकता। तुम लोग साथ चले हो, द्वार खुल गये हैं तुम्हारी गृहस्थी सुख से भरपूर हो। मेरी यात्रा अलोन ! मैं सुखी हूँ।

सब स्तब्ध हो गये।

बलेटन ने वह स्तब्धता तोड़ी, "हम लोग फिर आयेंगे। मैं इंग्लैंड वापस नहीं जाऊँगा। रीना के साथ यहीं गृहस्थी बसाऊँगा। बार-बार आऊँगा।"

"यहीं रहोगे तुम लोग; तो फिर···तो फिर मैं एक अनुरोध करूँगा। रीना, तुम मेरा आश्रम जानती हो। वहाँ झुमकी नाम की एक अनाथ नारी है—उसे अपनी गृहस्थी में ले लेना ! अच्छा ! अब अधिक नहीं। जॉन, यू आर ए मेडिकल मैन। अब जाओ, और अधिक नहीं। गुड बाई ! गुड बाई ! रोओ मत रीना; नो-नो-नो ! मैं देखना चाहता हूँ कि तुम हँस रही हो। लुक इन माई फेस। देखो आनन्द के सिवाय कुछ भी क्या है ? कहाँ है ? गुड बाई ! गुड बाई !"

अपना लम्बा हाथ उठाये वह दीर्घकाय पुरुष पत्थर की मूर्ति की भाँति खड़ा रहा।